चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 74, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | मंगलवार 11 अप्रैल 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

चीन को शाह का करारा जवाब...

'सुई की नोक जितनी जमीन भी कोई नहीं ले सकता'

नई दिल्लीः केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह अरुणाचल प्रदेश दौरे पर पहुंचे हैं। केंद्रीय गृह मंत्री ने किबिथू में 'वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम' और विभिन्न विकास परियोजनाओं का शुभारंभ किया। इस दौरान उन्होंने चीन को करारा जवाब दिया। दरअसल, चीन ने आज ही अमित शाह के दौरे पर एतराज जताया था। इस पर शाह ने कहा कि हमारी जमीन की तरफ कोई आंख उठाकर भी नहीं देख सकता। सैनिकों के पराक्रम से हमारी सीमाएं सुरक्षित हैं। ऐसे में हमारी सीमा में अतिक्रमण की तो कोई बात ही नहीं है। देश की सुई की नोक जितनी जमीन भी कोई नहीं ले सकता।

चीन को दिया करारा जवाबः अरुणाचल प्रदेश के किबिथू में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि पूरा देश आज अपने घरों में चैन की नींद सो सकता है, क्योंकि हमारे आईटीबीपी के जवान और सेना हमारी सीमाओं पर दिन-रात काम कर रहे हैं। आज हम गर्व से कह सकते हैं कि हम पर बुरी नजर डालने की ताकत किसी में नहीं है।

पीएम मोदी की 'लुक ईस्ट' नीति का किया जिक्रः केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि 2014 से पहले पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र को अशांत क्षेत्र के रूप में जाना जाता था, लेकिन पिछले 9 वर्षों में पीएम मोदी की 'लुक ईस्ट' नीति के कारण पूर्वोत्तर को अब एक ऐसा क्षेत्र माना जाता है, जो देश के विकास में योगदान देता है।

सेना की तरीफ में पढ़े कसीदेः गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि 21 अक्तूबर 1962 में तत्कालिन कुमाऊं रेजीमेंट के छह

अधिकारियों ने यहां पर जिस बहादुरी से लड़ाई लड़ी और जिससे भारत की भूमि की रक्षा हो पाई, मैं उन्हें मनपूर्वक श्रद्धांजलि देना चाहता हूं। 1963 में टाइम मैगजीन में लिखा था कि जो किबिथू में लड़ाई हुई, उसमें भारतीय सेनाओं के पास हथियार तो कम थे, लेकिन वीरता समग्र विश्व की सेनाओं **से भी ज्यादा थी।**

चीन ने जताया था ऐतराज

इससे पहले केंद्रीय गृह मंत्री के दौरे पर ऐतराज जाहिर करते हुए चीन के विदेश मंत्रालय ने एक बयान जारी करके कहा था कि अमित शाह की यात्रा उसके क्षेत्रीय संप्रभुता का उल्लंघन है। चीन ने यह भी कहा कि वह गृह मंत्री की अरुणाचल प्रदेश यात्रा का पुरजोर विरोध करता है।

चीन की इस हरकत के लिए पीएम मोदी जिम्मेदारः कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने चीन के अरुणाचल की जगहों का नाम बदलने का जिम्मेदार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ठहराया था। कांग्रेस की तरफ से जारी बयान में कहा गया कि ढट मोदी ने जून 2020 में चीन को क्लीन चिट दे दी थी। अब हमें उसकी कीमत चुकानी पड़ रही है। चीन की सेना देसपांग के मैदान में भारत के पेट्रोलिंग के अधिकारों को खारिज कर रही है। जबकि पहले इस इलाके में बिना रोक-टोक भारत की पहुंच थी।

शाह ने किबिथू में वाइब्रेंट विलेजेज प्रोग्राम की शुरूआत की

अमित शाह अरुणाचल प्रदेश के सीमावर्ती गांव किबिथू में वाइब्रेंट विलेजेज प्रोग्राम की शुरूआत की। इस दौरान अमित शाह ने कहा कि साल 2014 से पहले पूर्वोत्तर को अशांत क्षेत्र के रूप में जाना जाता था, लेकिन पिछले 9 सालों में पीएम मोदी की लुक ईस्ट नीतियों के चलते पूर्वोत्तर को विकास में योगदान देने वाला क्षेत्र माना जाने लगा है। पहले यहां के युवा हथियार लेकर घूमते थे, लेकिन आज वो देश के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं।

भगोड़े अमृतपाल सिंह का साथी पपलप्रीत गिरफ्तार

होशियारपुरः पंजाब पुलिस ने सोमवार को भगोड़े अमृतपाल सिंह के साथी पपलप्रीत को होशियारपुर से गिरफ्तार कर लिया है। पपलप्रीत सिंह ने ही अमृतपाल सिंह की पंजाब से भागने में मदद की थी। अमृतपाल सिंह और पपलप्रीत सिंह की कई तस्वीरें भी सोशल मीडिया के माध्यम से सामने आई हैं। पपलप्रीत सिंह का पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई से भी लिंक सामने आया था। उल्लेखनीय है कि 1 अप्रैल को खबर आई थी कि अलगाववादी अमृतपाल के साथ साये की तरह चलने वाला पपलप्रीत उससे अलग हो चुका है। दोनों 28 मार्च को फगवाड़ा से होशियारपुर आए थे। शाम को जब कपूरथला जिले के रावलपिंडी पुलिस स्टेशन से पुलिस ने उनका पीछा करना शुरू किया।

भारत वास्तव में दुनिया का विश्व गुरु : यूक्रेन

नई दिल्लीः यूक्रेन की उप-विदेश मंत्री एमीन झापरोवा ने कहा कि यूक्रेन ने कभी किसी और देश पर हमला नहीं किया। हम लोग अकारण जंग के पीड़ित हैं। जैसा कि आपके प्रधानमंत्री ने कहा कि यह युद्ध का युग नहीं है और हम इसका पूरी तरह से समर्थन करते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से हम एक आक्रामक देश से घिरे हैं। झापरोवा ने सोमवार को विदेश मंत्रालय में सचिव-पश्चिम संजय वर्मा से मुलाकात भी की।

'हम भारत को निर्देश नहीं दे सकते': एमीन झापरोवा ने कहा

सुप्रीम कोर्ट ने भी लगाई अग्निपथ पर मुहर

नई दिल्लीः सुप्रीम कोर्ट ने सशस्त्र बलों में प्रवेश के लिए सरकार की अग्निपथ योजना को बरकरार रखने वाले दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देने से संबंधित दो याचिकाओं को खारिज कर दिया और योजना की वैधता की पुष्टि की।

मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और जस्टिस पीएस नरसिम्हा और जेबी पारदीवाला की पीठ ने कहा कि अग्निपथ योजना की शुरूआत से पहले रक्षा बलों के लिए रैलियों, शारीरिक और चिकित्सा परीक्षणों जैसी भर्ती प्रक्रियाओं के माध्यम से चुने गए उम्मीदवारों के पास नियुक्ति का निहित अधिकार नहीं है। उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ गोपाल कृष्ण और अधिवक्ता एमएल शर्मा द्वारा दायर अलग-अलग याचिकाओं को खारिज करते हुए, 'क्षमा करें, हम उच्च न्यायालय के फैसले में हस्तक्षेप नहीं करना चाहेंगे। उच्च न्यायालय ने सभी पहलुओं पर विचार किया था।'

शीर्ष अदालत 27 मार्च को सशस्त्र बलों में भर्ती के लिए केंद्र की योजना को सही ठहराने वाले दिल्ली उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ दायर याचिकाओं पर सुनवाई के लिए सहमत हो गई थी। उच्च न्यायालय ने 27 फरवरी को कहा था कि अग्निपथ योजना राष्ट्रीय सुरक्षा को बनाए रखने के प्रशंसनीय उद्देश्य के साथ राष्ट्रीय हित में तैयार की गई थी।

राहुल गांधी विदेश में किस बिजनेसमैन से मिलते हैं: बीजेपी

नई दिल्लीः बीते रविवार को कांग्रेस के पूर्व वरिष्ठ नेता गुलाम नबी आजाद ने राहुल गांधी को लेकर एक दावा किया है, जिसको लेकर सियासत गरमाई हुई है। भारतीय जनता पार्टी ने आजाद के दावे के बाद कांग्रेस और राहुल गांधी पर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। बीजेपी सांसद और पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि राहुल गांधी विदेशों में किन-किन व्यापारियों से मुलाकात करते हैं, इसके बारे में देश जानना चाहता है।

गुलाम नबी आजाद ने किया बड़ा दावाः दरअसल, कई दशकों तक कांग्रेस के नेता रहे गुलाम नबी आजाद ने एक मलयाली न्यूज चैनल से बात करते हुए कहा था, "राहुल गांधी समेत पूरे परिवार के विदेशों में कई कारोबारियों से संबंध रहे है। मैं ऐसे 10 नाम गिनवा सकता हूं, जिनसे राहुल गांधी विदेशों में जाकर मिलते हैं। इनमें कई अवांधित कारोबारी भी शामिल हैं।"

अवांछित व्यापारियों से मिलते हैं राहुल गांधीः इसके बाद भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद ने पटना में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कांग्रेस और राहुल गांधी पर कटाक्ष किया है। रविशंकर ने आरोप लगाया कि राहुल गांधी देश को कमजोर करने की कोशिश कर रहे हैं। विदेशी हस्तक्षेप को आमंत्रित करके वो देश के खिलाफ काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा, "राहुल गांधी जी जब भी विदेश दौरे पर जाते हैं तो, कई 'अवांछित व्यापारियों' से मिलते हैं और उनके कई व्यापारिक घरानों से संबंध हैं।"

विरोधी व्यापारियों के इशारे पर भारत को कमजोर करने की कोशिशः सांसद रविशंकर ने कहा, "अब देश यह जानना चाहता है कि अपने विदेश दौरों पर राहुल गांधी किससे मिलते हैं? भाजपा अपेक्षा करती है कि ये कौन-से व्यापारी हैं, जिनसे राहुल गांधी मिलते हैं और इनके बीच क्या 'विलिंग-डीलिंग' है।

पुलिस-आरपीएफ ने किया फ्लैग मार्च, शास्त्री नगर में धार्मिक झंडे के अपमान से हालात बिगड़े

जमशेदपुर में झंडे पर विवाद, इंटरनेट बंद

पूर्वी सिंहभूम (झारखंड)। जमशेदपुर के कदमा थाना क्षेत्र के शास्त्री नगर में स्थिति तनावपूर्ण है। आज (सोमवार) सुबह पुलिस और आरपीएफ ने इलाके में फ्लैग मार्च किया। प्रशासन ने स्थिति पर नियंत्रण का दावा कते हुए पूरे क्षेत्र में निषेधाज्ञा (धारा 144) लगाते मोबाइल इंटरनेट सेवा पर अस्थाई प्रतिबंध लगा दिया है। दो समुदायों में तनाव की शुरूआत शनिवार को उस समय हुई जब शास्त्री नगर के ब्लॉक नंबर 3 स्थित जटाधारी हनुमान मंदिर के चौक पर महावीरी झंडा उतारा गया। झंडा के बांस में बंधे मांस के टुकड़े देख लोगों की आंखें पथरा गईं। यह बात कुछ ही देर में जंगल में आग की तरह फैल गई। मगर किसी तरह लोगों को शांत किया गया। रविवार को मंदिर कमेटी की बैठक के दौरान पत्थर फेंकने के बाद बवाल शुरू हुआ। इसके बाद दो समुदायों के बीच पथराव शुरू हो गया। इस दौरान कई वाहनों में आग लगा दी गई। शास्त्री नगर में हिंसा की खबर मिलते ही आला अधिकारी दल-बल के साथ मौके पर पहुंचे। हिंसा पर आमादा लोगों को समझाने की कोशिश की। जब हिंसा नहीं रुकी तो पुलिस को मोर्चा संभालना पड़ा। बवाल कर रहे लोगों से हुई झड़प में करीब छह पुलिसकर्मी घायल हो गए। जिला प्रशासन ने लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की है। उपायुक्त विजया जाधव ने कहा है कि कुछ असामाजिक तत्वों ने शहर के सांप्रदायिक सौहार्द्र को बिगाड़ने की कोशिश की है। इन तत्वों की पहचान की जा रही है।

रायपुरः बेमेतरा हिंसाः दुकानों में लटका ताला

रायपुरः छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिला में दो समुदायों के बीच हुए हिंसा को लेकर सोमवार को विश्व हिंदू परिषद और अन्य हिंदू संगठनों ने बंद का आयोजन किया है। जिसका असर प्रदेश समेत राजधानी रायपुर में दिखने लगा है। रायपुर में विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ता बंद करवाने सुबह से ही निकले, जिनके साथ भाजपा नेता भी शामिल रहे। वहीं नया बस स्टैंड में बसों में तोड़फोड़ करने की भी जानकारी है। साथ ही बस के इंतजार में यात्री भाटागांव स्थित नया बस स्टैंड में बैठे नजर आए। बेमेतरा में दो समुदाय के बीच हुई हिंसा के बाद विश्व हिन्दू परिषद के आज बुलाये गए छत्तीसगढ़ बंद करने के आह्वान का असर सुबह से ही प्रदेश समेत राजधानी में दिखने लगा है। बसों के पहिए थम गए हैं।दुकानों में ताला है।राजधानी रायपुर सहित प्रदेश के बेमेतरा, कवर्धा, बालोद, दुर्ग-भिलाई, कोंडागांव, कांकेर, दंतेवाड़ा में बंद का असर सुबह से ही है। पेटोल पंप, दुकानें व सब्जी मार्केट सहित अन्य प्रतिष्ठान सुबह से ही बंद है। सूरजपुर जिला में प्रशासन ने बंद की अनुमति नहीं दी है। रायपुर में भी वीएचपी के साथ भाजपा कार्यकर्ता बंद को।

राजनैतिक स्वार्थ के लिए आरक्षण नियमों में की गई अनदेखी : मायावती

अतीक की पत्नी, परिवार के किसी भी सदस्य को बसपा नहीं देगी टिकट

लखनऊ

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने सोमवार को पार्टी कार्यालय में वार्ता के दौरान भाजपा पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के ध्यान में रखते हुए भाजपा के इशारे पर निकाय चुनाव में सीटों का आरक्षण किया गया है, जिससे दलितों का नुकसान हो। राजनैतिक स्वार्थ साधने के लिए आरक्षण नियमों की अनदेखी की गई है। बसपा सुप्रिमो ने कहा कि काफी लम्बे समय के इंतजार के बाद उत्तर प्रदेश में यह चुनाव होने की तारीखों का ऐलान हुआ है। जिसका पार्टी स्वागत करती है। मैं कहना चाहती हूं कि बसपा ने यह चुनाव पूरी

तैयारी और दमदारी के साथ लड़ने का फैसला लिया है। यह भी उम्मीद करती हो कि राज्य सरकार और निकाय चुनाव से संबंधित अधिकारी यह चुनाव पूरे तौर से फ्री एंड फेयर कराये। नगर निगम का भी चुनाव इवीएम से न कराके इसे भी सीधे तौर पर बैलेट पेपर से ही कराएं।

उन्होंने कहा कि सर्वविदित है कि विरोधी पार्टियों में भी विशेषकर भाजपा के लोग सपा की तरह ही, इस चुनाव में किस प्रकार हथकंडे और हर प्रकार के जोड़तोड़ करने में ही लगे हुए हैं। भाजपा की मुस्लिम समाज के प्रति नकरात्मक सोच का ही यह परिणाम है कि इनकी सरकार में भी वे लोग लगभग उतने ही गरीब, पिछड़े त्रस्त एवं जान-माल और मजहब आदि के मामले में भी अपने आपको वैसा ही असुरक्षित महसूस करते है, जितने वे कांग्रेस पार्टी के राज में थे।

अतीक की पत्नी, परिवार के किसी भी सदस्य को नहीं मिलेगा मेयर का टिकटः मायावती ने यह भी साफ कर दिया है कि प्रयागराज में पिछलें दिनों उमेश पाल की हुई हत्या के मामले में अतीक अहमद, उसकी पत्नी शाइस्ता परवीन और बेटों का नाम सामने आया है।

उग्र भीड़ ने हत्यारोपियों के घर फूंके, फसलों में लगाई आग

मेरठ में मर्डर के बाद आगजनी-बवाल

मेरठः मेरठ के हस्तिनापुर इलाके के गांव पलड़ा में रविवार को 24 साल के विशु की ताबड़तोड़ गोलियां बरसाकर हत्या कर दी गई। सोमवार को विशु का शव गांव पहुंचा। इसके बाद परिजनों और ग्रामीणों का गुस्सा फूट पड़ा। ग्रामीणों ने समुदाय विशेष आरोपियों के घरों में घुसकर तोड़फोड़ और आगजनी कर दी। साथ ही खेतों में खड़ी फसल में भी आग लगा दी। एसएसपी और एसपी देहात, पुलिस बल के साथ गांव पहुंचे और मोर्चा संभाला है। फायर ब्रिगेड ने किसी तरह आग पर काबू पाया है। गांव में तनाव के हालात बने हुए हैं। यहां भारी पुलिस बल तैनात किया गया है।

पूर्व प्रधान सहित 4 अरेस्ट, 4 हिरासत मेंः मामले में पूर्व ग्राम प्रधान पड़ला गजेंद्र सिंह के अलावा अनस, अशफाक, शहानजीम, अकरम, अजीबुद्दीन, मो. कैफ के खिलाफ नामजद मुकदमा किया गया है। तीन अज्ञात के खिलाफ भी एफआईआर की गई है। पुलिस ने गजेंद्र सहित 3 अन्य आरोपियों को अरेस्ट किया है। कुल 4 लोगों को हिरासत में लिया गया है। अन्य की अरेस्टिंग के लिए पुलिस दबिश दे रही है। वहीं पुलिस ने परिजनों को समझाकर विशु के शव का अंतिम संस्कार करा दिया है।

हत्या के बाद रोड जाम करके सड़क पर बैठे थे ग्रामीणः बता दें कि रविवार देर शाम प्राथमिक विद्यालय के मैदान में दोस्त के साथ बैठे पलड़ा गांव निवासी विशु पर बाइक सवार युवकों ने गोलियां मारकर हत्या कर दी थी।

राष्ट्रपति मुर्मू ने राष्ट्रीय ग्रासरूट इनोवेशन पुरस्कार प्रदान किए

नई दिल्लीः राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोमवार को राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र (आरबीसीसी) में एनआईएफ के 11वें द्विवार्षिक राष्ट्रीय ग्रासरूट इनोवेशन इनोवेशन और उत्कृष्ट पारंपरिक ज्ञान पुरस्कार प्रदान किए। उन्होंने आरबीसीसी के पास स्पोर्ट्स ग्राउंड में फेस्टिवल ऑफ इनोवेशन एंड एंटरप्रेन्योरशिप (फाइन) -2023 का भी उद्घाटन किया।

पुरस्कार समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि जमीनी स्तर पर नागरिकों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित नवोन्मेषी समाधानों के साथ आने और अपनी सर्वोत्तम क्षमताओं के अनुसार देश की सेवा करने की क्षमता है। नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन (एनआईएफ) ऐसे इनोवेटर्स को प्रोत्साहित करने और उनका समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा कि एनआईएफ ने देश के 625 से अधिक जिलों से 32,5000 से अधिक तकनीकी विचारों, नवाचारों और पारंपरिक ज्ञान प्रथाओं का एक डेटाबेस तैयार किया है। उन्हें यह जानकर भी खुशी हुई कि एनआईएफ ने अपने विभिन्न पुरस्कार समारोहों में 1093 जमीनी नवप्रवर्तकों और स्कूली छात्रों को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दी है। राष्ट्रपति ने कहा कि आज हम न केवल इनोवेटर्स की उपलब्धियों बल्कि रचनात्मकता, इनोवेशन और एंटरप्रेन्योरशिप की भावना का जश्न मना रहे हैं। हम अपने आसपास हर दूसरे दिन छोटे-छोटे अविष्कार होते हुए देख सकते हैं। हमें बस उस क्रिएटिविटी और इनोवेशन को समझना और प्रोत्साहित करना है।

खबर संक्षेप

बाबूगंज में अंबेडकर जयंती पर आयोजित होंगे विविध कार्यक्रम

फूलपुर। अंबेडकर जयंती पर शोभायात्रा व गोष्ठी का आयोजन बाबूगंज बाजार में आयोजित किया जाएगा। आयोजन की सफलता के लिए बैठक कर पदाधिकारियों को दायित्व सौंपते हुए कार्यक्रम के संयोजक जगदेव प्रसाद चौधरी ने बताया कि बोधिसत्व डॉक्टर भीमराव अंबेडकर का 132वां जयंती समारोह पर मेले के आयोजन के साथ-साथ संविधान निमार्ता के झांकियों के द्वारा लोगों को उनके द्वारा किए गए सामाजिक परिवर्तन को प्रदर्शित किया जाएगा। बैठक का संचालन करते हुए उदय नारायण नेता ने कहा कि आगामी 14 अप्रैल को दिन में मेला व गोष्ठी के माध्यम से जयंती धूमधाम से मनाई जाएगी। इस अवसर पर शैलेंद्र कुमार, शिव मिलन गौतम, अरुण कुमार, भगवती प्रसाद वर्मा, ग्राम प्रधान बिगहिया सुरेश चंद जायसवाल सहित सैकड़ों पदाधिकारी उपस्थित रहे।

लेनदेन के विवाद में युवक को दोस्तों ने मारी गोली, गंभीर

अखंड भारत संदेश

नैनी। थाना क्षेत्र के चक हरीनंद मोहल्ले में रविवार की रात लेनदेन के विवाद में एक युवक को उसके दोस्तों ने गोली मार दी। गोली पेट में लगने से वह गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल युवक को उसके साथियों ने अस्पताल में भर्ती कराया, जहां उसकी हालत नाजुक बनी हुई है। पुलिस ने इस मामले में दो युवकों को उठाया है।जानकारी के अनुसार रविवार की रात कोरांव निवासी विकास राय, शुभम निषाद समेत कई लोग चक हीरानंद मोहल्ले में एक मकान में शराब पार्टी कर रहे थे। पार्टी में कुछ ऐसे भी युवक शामिल थे, जो जमीन का धंधा करने के साथ ही ब्याज पर रुपये चलाते हैं। शराब पीने के दौरान ही विकास राय और शुभम के बीच विवाद हो गया। बात बढ़ने पर विकास सिंह ने अरैल निवासी शुभम निषाद को थप्पड़ मार दिया उसी दौरान किसी ने विकास पर फायर झोंक दिया। गोली उसके पेट में जाकर लगी। वह जमीन पर गिरकर तड़पने लगा। घटना के बाद उसके साथी उसे तत्काल अस्पताल लेकर भागे। वहीं गोली की आवाज सुनकर आसपास के लोग वहां पहुंचे तो देखा के कमरे में खून फैला हुआ था। घायल को आनन फानन में शहर के एक निजी अस्पातल में ले जाया गया, जहां उसकी हालत चिंताजनक देख एसआरएन रेफर कर दिया गया परिवार के लोग घायल युवक को लेकर पहले एक निजी अस्पताल पहुंचे। फिर, वहां से रात करीब 12:30 बजे एसआरएन आए। उधर, पुलिस घटनास्थल पर जब पहुंची, तब वहां कोई नहीं था। आसपास के लोगों से पूछताछ के बाद घटना की जानकारी होने पर पुलिस ने दो युवकों को अरैल गांव से उठाया है। इंस्पेक्टर बृजेश सिंह का कहना है कि विवाद में शुभम ने ही विकास को गोली मार दी। गोली उसके पेट को छूकर निकल गई। उसकी हालत खतरे से बाहर है। आरोपियों को पकड़ने के लिए दबिश दी जा रही है।

भेड़ की रखवाली कर रहे युवक को दबंगों ने पीट पीटकर किया लहुलुहान

लालापुर। थाना क्षेत्र के सेमरी तरहार निवासी कुलदीप कुमार पाल पिता स्व. शिवगुलाम पाल ने बताया कि मैं और मेरे परिवार के लोग खेत में भेड़ों की रखवाली कर रहे थे कि गांव के कुछ दबंग जिनका नाम रामकरन पुत्र लल्लू राम, रामनारायण पुत्र पितई, मौजी लाल पुत्र पितई राधेश्याम पुत्र रामनारायण,शिवकरन पुत्र लल्लू राम, शोनकरन पुत्र लल्लू राम ने पीट पीटकर लहुलुहान कर दिया।चीख पुकार सुनकर मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने बीच बचाव करवा दिया।प्रार्थी कुलदीप पाल का मारपीट में सर फट गया जिसे उपचार के लिए सीएचसी शंकरगढ़ भेजा गया।कुलदीप पाल ने लालापुर थाने में प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है।

दो अलग अलग गांवों में मार पीट महिला से छेड़खानी मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। दो अलग अलग गांवों में जमीनी और मुर्गी के घर में चले जाने पर महिला के साथ छेड़खानी की गई।दोनों मामलों में पुलिस ने आठ के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक गांव निवासिनी एक महिला का आरोप है कि उसकी मुर्गी पडोसी के घर में चली जाने पर उसके साथ मार पीट की गई जब वह जान बचा कर घर में घुस गई तो घर में घुस कर अश्लील हरकतें करते हुए दुराचार का असफल प्रयास किए। महिला ने मोहम्मद जिबराईल, मोहम्मद इस्माईल, मोहम्मद मारूफ, मोहम्मद गुलफाम के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है। उधर ग्राम बरईपुर निवासनीय गायत्री देवी पत्नी ओमप्रकाश का आरोप है कि जमीनी विवाद को लेकर ग्राम देवगलपुर से आए लोगों ने घर में घुस कर मारे पीटे जान से मारने की धमकी भी दी। गायत्री देवी ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर मंजीत कुमार, रंजित कुमार, संतोष कुमार निवासी देवगल पुर तथा संतोष का साढू पता अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

न्यूज झरोखा

चनेथू में गेहूं की फसल में लगी आग 10 बिस्वा फसल जलकर हुई राख

जंघई। सरायममरेज थानांतर्गत चनेथू पाही गांव निवासी बाबूराम शुक्ल पुत्र स्व. मानिकचंद्र शुक्ल के गेंहू की खड़ी फसल में अज्ञात कारणों से सोमवार को करीब 4 बजे आग लग गई ग्रामीणों की मदद से किसी तरह आग पर काबू पाया गया तब तक करीब दस बिस्वा गेहूं की फसल जलकर राख हो गई। बाबूराम ने बताया कि ग्रामीणों ने सूचना दिया कि आपके गेहूं के खेत में आग लग गई है हम लोग परिजनों के साथ दौड़ कर पहुंचें तो फसल जल रही थी ग्रामीणों ने प्रयास करके आग बुझाई लेकिन तब तक दस बिस्वा फसल जल कर राख हो चुकी थी। फसल जलने पर मायूसी एवं कष्ट बाबूराम के चेहरे पर साफ दिखाई पड़ा अपनी आंखों के सामने अपनी लागत, परिश्रम बर्बाद होता देखकर, क्योंकि कुछ दिनों बाद फसल की कटाई होने वाली थी कि अचानक फसल जलकर राख हो गई प्रधान एवं लेखपाल को सूचित कर दिया गया है।

समाजवादी आंदोलन व्यवस्था परिवर्तन और सामाजिक न्याय की लड़ाई है : विजमा यादव

प्रतापपुर। समाजवादी पार्टी के नवनियुक्त गंगापार जिलाध्यक्ष अनिल यादव एवं नवनियुक्त प्रदेश अध्यक्ष मजदूर सभा धनीलाल श्रमिक के प्रतापपुर प्रथम आगमन पर कार्यकताओं ने जोरदार स्वागत किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विधायक प्रतापपुर विजमा यादव ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि समाजवादी आंदोलन व्यवस्था परिवर्तन और सामाजिक न्याय की लड़ाई है। जिसके रास्ते पर चल कर हमें समाजवादी आंदोलन को मजबूत करते हुए फासिस्ट वादी सरकार को उखाड़ फेंकना होगा। जिलाध्यक्ष अनिल यादव ने कहा कि कार्यकताओं के बल पर समाजवादी पार्टी 2024 लोकसभा चुनाव पूरे दमखम से लड़ेगी। कार्यक्रम का संचालन पूर्व विधानसभा अध्यक्ष जीतलाल यादव ने किया। समारोह को पूर्व जिला पंचायत सदस्य फूलचंद्र कनौजिया, राजबहादुर यादव, रामसुमेर पाल, श्याम लाल पाल, धनीराम यादव, राधेश्याम भास्कर, लालचंद्र यादव, धर्मेंद्र सरोज आदि ने संबोधित किया।इस अवसर श्याम सूरत सरोज, पर राकेश यादव, श्रीचंद्र यादव, महेंद्र यादव, भीम यादव आदि लोग उपस्थित रहे।

अप्रेंटिसशिप मेला में 70 प्रतिभागियों का चयन किया गया

नैनी। प्रधानमंत्री राष्ट्रीय अप्रेंटिसशिप मेला का आयोजन सोमवार को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय अप्रेंटिसशिप मेला का आयोजन राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नैनी प्रयागराज में शासन के निदेर्शानुसार प्रधानाचार्य एसके श्रीवास्तव के नेतृत्व में आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों प्रतिभागियों ने भाग लिया इसमें अशोक लेलैंड लिमिटेड टपरिया टूल्स प्राइवेट लिमिटेड महिंद्रा एंड महिंद्रा इत्यादि कंपनियों ने प्रतिभाग किया जिसमेंइंटरव्यू के बाद 70 प्रतिभागियों का चयन किया गया इसमें एस के प्रसाद अमृत लाल गुप्ता राकेश शर्मा विनोद कुशवाहा नंदकिशोर बिंद कामदेव कुमार अमित वर्मा अभिषेक रंजन रश्मि श्रीवास्तव रंजना शुक्ला अनीता सरोज रामसमुझ प्रदूषण पंडित चंद्रेश जी इत्यादि के अलावा संस्थान के सभी कर्मचारी उपस्थित रहे।

दिलों की दूरियां मिटाता है रोजा इफ्तार

फूलपुर। गांव में भाईचारा अमन व सद्भावना कायम रहे सभी एक दूसरे का त्योहार मिलकर मनाएं यही भारत की गंगा जमुनी तहजीब हमें प्रेरणा देती है। एक दूसरे के ईर्ष्या द्वेष जहां गांव का विकास रोकते है, वही हमारे बच्चे आने वाले त्योहारों से दूर होते जा रहे हैं।उक्त बातें फूलपुर क्षेत्र के चक अब्दुल करीम उर्फ पूरे भुलई गांव में आयोजित रोजा इफ्तार के मौके पर उपस्थित गांव के प्रबुद्ध जनों के बीच चर्चा करते हुए पूर्व ग्राम प्रधान मोहम्मद इकराम ने सोमवार को कहीं। उन्होंने कहा कि हमारे गांव के हिंदू मुस्लिम सहित सभी धर्मों के मानने वाले लोग हर वर्ष ईद,दिवाली होली, मोहर्रम साथ मिलकर मनाते हैं। रोजा इफ्तार से जहां आपसी भाईचारा बढ़ता है वही लोग एक दूसरे के साथ मिलकर उनके सुख दुख को भी साझा करते हैं। यह हमारे दिलों की दूरियों को पांच लाने का कार्य करता है। इस मौके पर मोहम्मद नईम, इकबाल अहमद, गुलाब सिंह यादव, विनोद कुमार चौधरी, ग्राम प्रधान प्रतिनिधि कमलेश कुमार, सरफराज अहमद उर्फ बबलू, कन्हैया लाल, अरमान अहमद, फरहाज आलम, मोहम्मद हसन, मोहम्मद अली, अकबर, मिथिलेश सहित क्षेत्र के बुद्धिजीवी व गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

भाई के साथ बाइक पर लौट रही महिला की कार की टक्कर से हुई मौत, भाई नाजुक

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। रविवार की देर रात अस्पताल में भर्ती बहन को देख भाई की बाइक से लौट रही एक महिला की कार की जोरदार टक्कर होने से मौत हो गई ,वही भाई गंभीर रूप से घायल हो गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने दोनो को एसआरएन भेजा जहां से महिला के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया । नाजुक भाई का इलाज चल रहा है । कार चालक मौके से कार छोड़ फरार हो गया है । पुलिस कार को अपने कब्जे में ले लिया है। नैनी थाना क्षेत्र के डभांव गांव निवासी रीना देवी (45) पत्नी बृजलाल की बहन मीना देवी प्रसव पीड़िता थी । जिसे क्षेत्र के निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था । प्रसूता बहन को देखने के लिए रीना देवी अपने भाई सत्यप्रकाश (42) पुत्र कल्लूराम निवासी बलापुर थाना घूरपुर की बाइक से गई थी । रविवार की देर रात दोनो बाइक से बलापुर गांव की ओर जा रहे थे । अभी बाइक घूरपुर कस्बे के बनिया तारा के पास पहुंची थी गलत दिशा से सामने से आई एक बेकाबू अर्टिगा कार ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी । टक्कर के बाद दोनो सड़क पर गिर गए और बाइक सौ मीटर से ज्यादा कार में फंसकर घिसटती चली गई । सूचना पर पहुंची पुलिस ने को अस्पताल भेजा जहां डॉक्टरों ने रीना को मृत घोषित कर दिया और वहीं घायल भाई सत्य प्रकाश को अस्पताल में भर्ती कराया गया है । जहां उसकी हालत नाजुक बनी हुई है।

डंपर ने कार को मारी टक्कर, अनियंत्रित होकर रेलिंग से टकराते हुए पलटी कार

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के जेल मंदिर नेहरू द्वार के सामने सोमवार रात कार को डंपर ने टक्कर मार दी, जिससे वह अनियंत्रित होकर रेलिंग से टकराते हुए पलट गई। हादसे में कार ड्राइवर को काफी चोट आई है। हादसे के बाद मीरजापुर- प्रयागराज मार्ग पर भीषण जाम लग गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने कार को किनारे लगवाकर जाम को समाप्त कराया। वहीं घायल को पास के अस्पताल में इलाज के लिए ले जाया गया।

शंकरगढ़ पुलिस के हत्थे चढ़े चार चोर लकहर मोड़ से की गई गिरफ्तारी

कब्जे से चोरी का माल, नगदी और तमंचा-कारतूस बरामद

शंकरगढ़। यमुनानगर के शंकरगढ़ थाने की पुलिस ने चार शातिर चोरों को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से चुराया गया सामान, बिक्री का नगद रुपया, तमंचा और कारतूस बरामद हुआ है। यह गिरफ्तारी मुखबिर की सूचना पर क्षेत्र के लकहर मोड़ से की गई है। एसओ मनोज कुमार ने बताया कि एसआई ऋतुराज सिंह की अगुवाई वाली पुलिस टीम ने लकहर मोड़ से चोरी के अभियुक्त संजय मिश्र उर्फ संतू मिश्र पुत्र भोला मिश्र (कपारी, थाना शंकरगढ़), करन पुत्र बबलू आदिवासी (निवासी कपारी, मंदिर के बगल, शंकरगढ़, उमेश उर्फ गुंडा आदिवासी पुत्र रामहित आदिवासी (कपारी मोड़, यादव बस्ती, शंकरगढ़) और राजू आदिवासी उर्फ दादू पुत्र सुंदरलाल आदिवासी (कपारी स्कूल के पीछे, शंकरगढ़) को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से चोरी का एक गैस सिलेण्डर, चोरी के सामान की बिक्री का 4500 रुपया, एक तमंचा व दो कारतूस बरामद हुआ है। सभी के खिलाफ विधिक कार्यवाही की गई। सुसंगत धाराओं में केस दर्ज करते हुए पुलिस ने चालान भेज दिया है। गिरफ्तार करने वाली टीम में एसआई गंगाराम सोनकर, कांस्टेबल बलिराम सिंह, संतोष कुमार, सुखवीर, शशिकांत यादव आदि शामिल रहे।

श्रीकृष्ण के जयकारों तथा नंद घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की जय से गूंजा वातावरण

प्रतापपुर। मुख्य यजमान चिंतामणि मिश्र, मुन्नी देवी, प्रवीण मिश्र, हिरण मिश्र, राजेश मिश्र, सरिता मिश्र के प्रतापपुर निवास पर आयोजित श्रीमद्भागवत कथा यज्ञ के चौथे दिन सोमवार को भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया इसमें श्रद्धालुओं ने जमकर नृत्य किया। इस मौके पर पूरा कथा परिसर भगवान श्रीकृष्ण के जयकारों तथा नंद घर आनंद भयो, जय कन्हैयालाल की जय से गूंजायमान हो उठा। कथा वाचक पंडित देवी प्रसाद द्विवेदी व्याकरणाचार्य महाराज ने भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा जब-जब अत्याचार और अन्याय बढ़ता है, तब-तब प्रभु का अवतार होता है। प्रभु का अवतार अत्याचार को समाप्त करने और धर्म की स्थापना के लिए होता है। जब कंस ने सभी मयार्दाएं तोड़ दी तो प्रभु श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। यहां पर जैसे ही श्रीकृष्ण के जन्म का प्रसंग कथा में आया तो श्रद्धालु हरे राधा-कृष्ण के उदघोष के साथ नृत्य करने लगे जन्मोत्सव के प्रसंग को भाव विभोर कर दिया।कथा के पश्चात आरती प्रसाद का वितरण किया गया।इस अवसर पर वीरेंद्र कुमार मिश्रा, नवीन कुमार मिश्रा, सचिन मिश्र, अनिल कुमार मिश्रा, धीरज मिश्र फिल्म डायरेक्टर, महेंद्र कुमार मिश्रा, अनुराग मिश्र, श्यामधर मिश्र, कृष्ण मुरारी मिश्र, अशोक कुमार मिश्रा, प्रदीप कुमार मिश्रा, रमेश कुमार मिश्रा, विनोद कुमार मिश्रा, मुन्ना मिश्र, अनुज मिश्र, अभिषेक मिश्र, सत्यम मिश्र सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

डॉ.बंसल हत्याकांड में पांच आरोपितों के विरुद्ध कोर्ट ने तय किए आरोप

प्रयागराज। जिला न्यायालय ने सोमवार को डॉ.एके बंसल हत्याकांड के पांच आरोपियों के खिलाफ आरोप तय कर दिए। पांचों आरोपी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अदालत में पेश हुए।न्यायाधीश ने आरोपियों को आरोप पढ़कर सुनाया। हालांकि, आरोपियों ने इससे इन्कार कर दिया और परीक्षण कराए जाने की मांग की। इस पर अदालत ने अभियोजन पक्ष को मामले के गवाहों को 24 अप्रैल को पेश करने का आदेश दिया।न्यायालय ने आरोपी शोएब के विरुद्ध आईपीसी की धारा 302, 34 तथा सेवन क्रिमिनल लॉ अमेंडमेंट एक्ट के अंतर्गत तथा अन्य आरोपियों आलोक सिन्हा, अबरार, दिलीप मिश्रा, अशरफ उर्फ अख्तर कटरा के विरुद्ध आईपीसी की धारा 302 एवं 120बी के अंतर्गत आरोप तय किया। आरोप में कहा गया है कि 12 जनवरी 2017 को जीवन ज्योति अस्पताल में डॉ. अश्वनी कुमार बंसल को ओपीडी में मरीज देखते समय गोली मार दी, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। सुरक्षा की दृष्टि से आरोपियों को न्यायालय में नहीं लाया गया था। वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए उन्हें पेश कराया गया था।

बीएल एकेडमी डे बोर्डिंग स्कूल में इनवॉल फंक्शन का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

नैनी। मुखिया नगर स्थित बीएल एकेडमी डे बोर्डिंग स्कूल में आज इनवॉल फंक्शन का आयोजन इनसीडियस इंडिया की थीम पर हुआ जिसमें बच्चों के द्वारा केरला, गोवा, गुजराती, राजस्थानी, भरतनाट्यम, ऊरी डांस महाराष्ट्रीयन, फॉक फ्यूजन एवं कश्मीर से कन्याकुमारी तक प्रत्येक राज्यों से संबंधित डांस को प्रस्तुत किया गया तथा उसके बारे में बताया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या शालिनी त्रिपाठी ने बच्चों के रंगारंग प्रस्तुति व उनके द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम की सराहना की। बतौर मुख्य अतिथि बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 गिरीश चंद्र त्रिपाठी ने बच्चों द्वारा प्रस्तुत रंगारंग प्रस्तुति की सराहना की और अपना शुभ आशीष सभी बच्चों को दिया।

क्रय विक्रय सहकारी समिति जसरा के सभी ग्यारह प्रत्यासी निर्विरोध

अखंड भारत संदेश

जसरा। क्रय बिक्रय सहकारी समिति लि० जसरा के संचालक पद पर सोमवार को नाम वापसी के दिन सभी ग्यारह संचालक पदों पर एक एक नामांकन होने के कारण सभी प्रत्याशी निर्विरोध निर्वाचित किये गये। निर्वाचन अधिकारी/तहसीलदार बारा रमेश चंद्र पांडेय ने सभी संचालकों की घोषणा किया। क्रय बिक्रय सहकारी समिति जसरा के निर्वाचन संख्या एक अकौरिया किसान सेवा सहकारी समिति सुरक्षित सीट से दयाशंकर, निर्वाचन क्षेत्र दो गोइसरा सहकारी समित पिछड़ी जाति पर रमेश कुमार सिंह, निर्वाचन क्षेत्र तीन घूरपुर किसान सेवा सहकारी समिति महिला सीट से विभा देवी,निर्वाचन क्षेत्र चार किसान सेवा सहकारी समिति जसरा महिला से राज त्रिपाठी,निर्वाचन क्षेत्र पांच धनुआ क्षेत्रीय सहकारी समिति सामान्य सीट से राजेंद्र बहादुर सिंह, निर्वाचन क्षेत्र छः नौढिया उपरहार किसान सेवा सहकारी समिति सामान्य सीट से कमलाकर सिंह,निर्वाचन क्षेत्र सात सामान्य सीट भारत नगर किसान सेवा सहकारी से विनोद कुमार मिश्र, निर्वाचन क्षेत्र आठ क्रय बिक्रय सहकारी समिति जसरा जीतेन्द्र सिंह, निर्वाचन क्षेत्र नौ सामान्य सीट क्रय विक्रय सहकारी समिति जसरा सामान्य सीट से शंकरलाल गुप्त,निर्वाचन क्षेत्र दस सामान्य सीट क्रय विक्रय सहकारी समिति जसरा से सुरेन्द्र कुमार पांडेय व निर्वाचन क्षेत्र ग्यारह सामान्य सीट शंकरगढ़ साधन सहकारी समिति से पुष्पराज सिंह को निर्विरोध निर्वाचित किया गया। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष जसरा जगत नारायण शुक्ल,शम्भू नाथ गुप्त,कुलदीप पाठक, कमलेश त्रिपाठी, नीरज केसरवानी, आलोक पाठक, रामानंद त्रिपाठी, सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

निर्माणाधीन मकान की छत का सटरिंग गिराने का आरोप दी गई तहरीर

मऊआइमा। निमार्णाधीन मकान के छत की सटरिंग गिरा कर जान से मारने की धमकी दी गई है। भुक्तभोगी महिला ने ग्राम प्रधान प्रतिनिधि के इशारे पर गिरवाने का आरोप लगाया है। दस के खिलाफ तहरीर दी गई है। पुलिस ने एक को हिरासत में ले लिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के सराय अतन उर्फ नौगिरा गांव निवासनीय रेखा देवी पत्नी रमेशचंद्र का आरोप है कि वह अपने बने हुए निमार्णाधीन मकान पर सटरिंग करवा रही थी। आरोप है कि तथी विपक्षी ग्राम प्रधान प्रतिनिधि के इशारे पर उसकी सटरिंग गिरा दिए और गालियां देते हुए जान से मारने की धमकी भी दिए। भुक्तभोगी रेखा देवी ने मऊआइमा थाने में ग्राम प्रधान प्रतिनिधि सहित दस के खिलाफ तहरीर दी है। पुलिस ने अवधेश कुमार को हिरासत में ले लिया है। समाचार लिखे जाने तक मुकदमा नहीं दर्ज किया गया था।

दास्तान ए तहसील कोराव : समुचित निस्तारण न होने से फरियादी एक ही शिकायत को कर रहे बार बार आवेदन

अखंड भारत संदेश

कोरांव। प्रदेश के मुख्य मंत्री भले ही जन सुनवाई, आईजीआरएस आदि प्रार्थना पत्रों पर न्यायोचित कार्यवाही न होने की नाराजगी से कई विभागों के अफसरों पर कार्यवाही की तैयारी में हैं किंतु प्रयागराज के कोरांव तहसील में हो रही मनमानी कार्यवाही जन समस्यसों के अंबार पर अफसरों को कोई खौफ नहीं दिखता। उल्लेखनीय है कि कोरांव तहसील में एसडीएम समय से बैठते नहीं। जिससे समस्याओं का अंबार लगता जा रहा है। इस समय एसडीएम के स्टेनो भी स्थानांतरित हो गए हैं जिससे सारा कामकाज प्राइवेट कर्मचारियों के जिम्मे है। जिससे लूट खसोट जारी है। और गोपनीयता भंग होती है। लोगों का कथन है कि एसडीएम ज्यादातर अपने आवास पर भी नहीं ठहरते। चर्चा है की 80 /1 की फाइलों में 25 हजार से ले कर एक डेढ़ लाख तक रिश्वत ली जा रही है। वारासत में नाम दर्ज कराने के लिए भी

सुविधा शुल्क में बढ़ोतरी से किसान वाद कारी त्रस्त

हर जगह चढ़ावा दिया जा रहा है तब जा कर खतौनी में नाम दर्ज हो रहा है। किसानों का आरोप है कि तहसील कर्मियों द्वारा स्वयं नाम किसानों का गलत अंकित कर सुधारने के नाम पर रकम सुविधा शुल्क ऐंठी जा रही है। इतना तक कि पारिवारिक लाभ,हैंशियत प्रमाण पत्र वृद्धा,विधवा,विकलांग पेंशन,आदि आवेदनों में बिना पैसा लिए कोई अग्रिम कार्यवाही नहीं की जाती। खतौनी में पंद्रह रुपए की जगह बीस रुपए लिए जा रहे हैं। यह सब एसडीएम के नाक के नीचे खेल हो रहा है। किंतु कोई एक्शन नहीं लिया जाता। उक्त तहसील में समाधान दिवस, जन सुनवाई पीजी पोर्टल, सीएम हेल्पलाइन,शिकायतों का निस्तारण बिना स्थलीय जांच किए और बिना शिकायत कर्ता को सुने मनमाने ढंग से निस्तारित कर दिया जाता है जिससे शिकायतों का अंबार लगता जा रहा। और एक ही शिकायत को उचित न्याय न मिलने से बार बार आवेदन लोग डालते रहे हैं। जबकि सबसे ज्यादा शिकायत राजस्व विभाग से ही संबंधित रहती है। स्थानीय राजस्व कर्मियों के कारण अपने सगे समबंधियों के प्रभाव प्रलोभन में राजस्व कर्मी निस्पक्छता पूर्वक जांच पैमाईस आदि कार्यवाही नहीं करते बल्कि भू विवादों की संख्या बढ़ाई जा रही है। यह भी चर्चा है कि एसडीएम का ड्राइवर भी प्राइवेट है जो वसूली करता है और अपने मांध्यम से आका के पास पहुंचाता है। अगर तहसील कोराव में यही रवैया रही तो शीघ्र ही किसान यूनियन, विभिन्न पार्टी के जनप्रतिनिधि नेता कार्यकर्ता तहसील का घेराव भी करेंगे और धरना प्रदर्शन। जब कि वहीं इसी तहसील के एक जिम्मेदार अधिकारी द्वारा किसी से कोई रिश्वत न लिए जाने की चर्चा पूरे जोर सौर से चल रही है। मुख्य मंत्री जी उक्त तहसील पर भी अपनी निगाह डालें अन्यथा सबका साथ सबका विकास सबका विश्वाश चकना चूर हो जायेगा।

खबर संक्षेप

डा. अम्बेडकर मेला 14 अप्रैल को तैयारियां जोरों पर

प्रयागराज। ज्ञान के प्रतीक राष्ट्रनायक बोधिसत्व बाबासाहेब डा. भीमराव रामजी अम्बेडकर (जन्म 14 अप्रैल 1891) की 132वीं जयन्ती के पावन अवसर पर आगामी 14 अप्रैल को दोपहर 12 बजे से नगर प्रयागराज स्थित अधिकारी/ कर्मचारी संगठनों और सामाजिक, सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ साथ डा. अम्बेडकर वेलफेयर एसोसिएशन (दावा) और प्रबुद्ध फाउंडेशन, देवपती मेमोरियल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में इस वर्ष भी समानता के संघर्ष का डा. अम्बेडकर मेला-2023 राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया है तो वही दूसरी ओर इस मेले में बहुजन समाज के बाल कलाकारों और बहुजन समाज के समाजसेवी अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्मानित किया जायेगा। उक्त जानकारी सोमवार को प्रबुद्ध फाउंडेशन के सचिव उच्च न्यायालय के अधिवक्ता आईपी रामबृज ने दी। अम्बेडकर जयन्ती के अवसर पर हाईकोर्ट स्थित डा. अम्बेडकर प्रतिमा स्थल पर आयोजित डा. अम्बेडकर मेला में बहुजन समाज के अधिकारियों /कर्मचारियों को डा. अम्बेडकर समाज सेवा सम्मान- 2022 प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा तो वहीं दूसरी ओर बहुजन साहित्य, कला और संस्कृति के साथ साथ बहुजन रंगमंच बाल कलाकारों में राजू राव, लोकनाथ, तनु जैसवाल, महक और रिया मौर्या को प्रबुद्ध गौतम बाल रंगमंच सम्मान-2022 प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।

दो छात्रावास के छात्रों के बीच हुई मारपीट

विश्वविद्यालय के बाहर बरसे ईंट और पत्थर, छात्रसंघ भवन पर हुआ था विवाद

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच आए दिन कैंपस से लेकर कैंपस के बाहर तक बवाल होता रहता है। जिसमें बहुत सारे छात्रों के ऊपर मारपीट को लेकर एफआईआर भी दर्ज होता है। कई मामले ऐसे होते हैं। जिनमें सीनियर छात्रों के दखल से समझौते भी हो जाते है। वहीं इलाहाबाद विश्व विद्यालय के छात्रों ने शाम 5 बजे सर सुंदर लाल छात्रावास और केपीयूसी छात्रावास के छात्रों के बीच जमकर मारपीट हुआ। देखते ही देखते बवाल इतना ज्यादा बढ़ गया कि दोनों छात्रावास के छात्र लाठी डंडे और ईंट पत्थर लेकर सड़क पर आ गए। जहां दोनों तरफ से खूब ईंट पत्थर बरसाए गए।

पत्थर बाजी को देख लोगों में अफरा तफरी मच गया : छात्र इतने उग्र दिखे कि सड़क पर आने जाने वाले राहगीरों को भी नहीं देख रहे थे। लगातार दोनों तरफ से पत्थर बाजी हो रहा था। पत्थर बाजी को देख लोगों में अफरा तफरी मच गया। वहीं सड़क के पटरी पर दुकान लगाने वाले लोग अपनी दुकानें बंद करके चले गए। सड़क पर छात्र ही छात्र दिख रहे थे। लगभग आधे घंटे तक पूरा बवाल चला। जहां कर्नलगंज थाने से पुलिस के आने पर सभी छात्र अपने-अपने छात्रावास में चले गए। फिलहाल अभी माहौल शांतिपूर्ण है।

दोपहर में भी छात्रों के बीच हुई थी मारपीट : वहीं दोपहर में भी छात्रसंघ भवन के बाहर सड़क पर कुछ छात्र एक लड़के की पिटाई किए थे। जिससे छात्र को गंभीर चोट आई है। वहीं कुछ लोगों ने पीड़ित लड़के को एम्बुलेंस बुलाकर उसे इलाज के लिए बेली हॉस्पिटल ले गए।

गर्ल्स हॉस्टल के बाहर लड़कियों के साथ करता था बदसलूकी : छात्रों ने बताया कि ये लड़का आए दिन गर्ल्स हॉस्टल के बाहर लड़कियों के साथ बदसलूकी करता है। कई बार समझाने पर भी नहीं माना, तो ये कदम उठाना पड़ा। वहीं पीड़ित छात्र अपना नाम सुमित अरोरा बताया। अपने आप को विश्वविद्यालय का छात्र भी बताया। वहीं अन्य छात्रों ने बताया कि लड़के की मानसिक स्थिति सही नहीं है। वह आए दिन इसी तरह की गलत हरकत करता रहता है। कई लोगों ने यह भी बताया कि वह इससे पहले भी कई लड़कियों के साथ बत्तमीजी कर चुका है। फिलहाल अभी मामला शांतिपूर्ण है।

कोली व पंढेर को फांसी के खिलाफ अपीलों की सुनवाई टली, अब पांच जुलाई को होगी अगली सुनवाई

प्रयागराज। निठारी कांड में फांसी की सजा के खिलाफ सुरिंदर कोली व मनिंदर सिंह पंढेर की अपीलों की सुनवाई पांच जुलाई के लिए टल गई है। कोली के अधिवक्ता के अनुरोध पर इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति अश्वनी कुमार मिश्र तथा न्यायमूर्ति विनोद दिवाकर की खंडपीठ ने यह आदेश दिया। हालांकि पंढेर के अधिवक्ता ने सुनवाई टालने का विरोध किया, किंतु कोली के अधिवक्ता की गैर मौजूदगी के कारण सुनवाई नहीं हो सकी। सीबीआई के वरिष्ठ अधिवक्ता ज्ञान प्रकाश व संजय यादव ने भी पक्ष रखा।मालूम हो कि सीबीआई ने दोनों आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की। आरोप लगाया कि कोली ने दर्जनों लड़कियों को प्रलोभन देकर घर में बुलाया और दुष्कर्म व हत्या के बाद लाश के टुकड़े कर नाले में फेंक दिया। निठारी की कई लड़कियों के लापता होने और नाले से कंकाल मिलने पर मीडिया में उछाल के बाद जांच में पूरे प्रकरण का खुलासा हुआ।पंढेर की कोठी में केयरटेकर कोली गंभीर अपराध करता था। कोली को एक केस में सुप्रीम कोर्ट से मिली फांसी पर अमल होने में देरी के कारण हाईकोर्ट ने आजीवन कारावास में तब्दील कर दिया है। अभी नौ केसो में सीबीआई कोर्ट ने फांसी की सजा सुनाई है। जिसके खिलाफ हाईकोर्ट में अपील विचाराधीन है। पंढेर को दो केसों में फांसी व अन्य में आजीवन कारावास व अन्य सजा के खिलाफ अपील विचाराधीन है।

भगवान शिव के खिलाफ आपत्तिजनक पोस्ट करने वाले को राहत नहीं, हाईकोर्ट ने की सख्त टिप्पणी

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने भगवान शिव के खिलाफ आपत्तिजनक फेसबुक पोस्ट करने के आरोपी आसिफ के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही रद्द करने से इन्कार कर दिया। कोर्ट ने कहा कि ऐसे अपराध जिनमें लोगों या समुदायों के वर्गों के बीच नफरत को बढ़ावा देने की प्रवृत्ति होती है, उन्हें सख्ती से खत्म करना होगा। ऐसे अपराधों को समाज में फलने-फूलने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।यह आदेश न्यायमूर्ति जेजे मुनीर ने आसिफ की प्राथमिकी रद्द करने की मांग वाली याचिका को खारिज करते हुए दिया है। याची पर आईपीसी की धारा 153-ए, 295-ए और सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 की धारा 66 के तहत अलीगढ़ के छर्रा पुलिस थाने में मामला दर्ज किया गया था। अभियुक्त के अधिवक्ता ने तर्क दिया कि आवेदक के फेसबुक पर पोस्ट की गई कथित टिप्पणियां केवल अंजलि सिंह द्वारा फॉरवर्ड की गई थीं और यह कि टिप्पणियां आवेदक के लेखक के तहत नहीं की गई थीं।इस पर न्यायालय ने कहा कि यदि कोई टिप्पणी है, जिसमें विभिन्न समूहों के बीच शत्रुता को बढ़ावा देने की प्रवृत्ति है, तो धर्म के आधार पर इसे किसी के फेसबुक पर पोस्ट करना निश्चित रूप से एक अपराध होगा।कोर्ट ने कहा कि पोस्ट में नियोजित शब्द स्पष्ट रूप से समुदाय के एक विशेष वर्ग की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए जानबूझकर और दुर्भावनापूर्ण इरादे की गई।

प्रयागराज में 4 मई को मतदान, दावेदार हुए एक्टिव

निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी, सभी दलों में तेज हुई प्रत्याशी घोषित करने की तैयारी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नगर निकाय चुनाव की अधिसूचना जारी होने के बाद सभी राजनीतिक दलों में सक्रियता बढ़ गई है। प्रयागराज में पहले चरण में यानी 4 मई को निकाय चुनाव होने हैं। अब सभी की नजरें पार्टी के अंतिम निर्णय की ओर है कि शीर्ष नेतृत्व पार्टी में किसे मेयर पद का प्रत्याशी घोषित करेगी। भाजपा, सपा, कांग्रेस, आप व बसपा की ओर से प्रत्याशियों की घोषणा जल्द होने के आसार हैं। इच्छुक उम्मीदवार टिकट पाने की उम्मीद में लखनऊ से लेकर दिल्ली तक डेरा डाले हुए हैं। शीर्ष नेताओं की परिक्रमा करने में लगे हैं।अभी तक किसी भी पार्टी ने अपने प्रत्याशियों की घोषणा नहीं की है। बसपा से अतीक अहमद की पत्नी शाइस्ता परवीन को प्रभारी बनाया गया था, लेकिन उमेश पाल हत्याकांड के बाद से ही पार्टी ने शाइस्ता को बाहर करने का निर्णय लिया है।

हटाए जा रहे होर्डिंग व बैनर

रविवार को आचार संहिता लागू होने के बाद प्रशासन आचार संहिता का पालन कराने के लिए सड़क पर उतर गया। सड़कों पर लगे भाजपा, सपा, कांग्रेस, बसपा समेत सभी दलों के होर्डिंग उतारे जा रहे हैं। दरअसल, मेयर से लेकर पार्षद तक के लिए बड़ी संख्या में दावेदारों ने अपने होर्डिंग्स लगवा रखे थे। आचार संहिता लागू होने के बाद अब कोई भी दावेदार होर्डिंग नहीं लगवा सकता है। इसके लिए नगर निगम की ओर से 8 टीमें लगाई गई हैं जो सड़कों पर लगे होर्डिंग उतारने का काम कर रहे हैं।

2 लाख से ज्यादा नए मतदाता करेंगे मतदान

इस बार होने वाले निकाय चुनाव में पार्षद के लिए 2 लाख से ज्यादा मतदाता मतदान करेंगे। दरअसल, यह सभी अभी तक ग्राम प्रधान चुनते थे लेकिन शहरी सीमा का विस्तार होने के बाद यह सभी वर्ष 2019 में शहर के नागरिक बन गए हैं। बता दें कि शहर सीमा का विस्तार होने के बाद वार्डों की संख्या बढ़ गई है। अभी तक जो 80 वार्ड थे वह बढ़कर 100 हो गए हैं। यानी इस बार 100 पार्षद चुने जाएंगे।

निकाय चुनाव के नामांकन आज से

डीएम और सीपी ने नामांकन कक्षों का किया निरीक्षण, कंट्रोल रूम बनाया गया

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 के लिए मंगलवार से नामांकन शुरू होगा। प्रयागराज के पुलिस कमिश्नर और जिलाधिकारी ने संयुक्त रूप से नामांकन कक्षों का निरीक्षण किया और तैयारियों का जायजा लिया। इस दौरान डीएम ने नामांकन कक्षों में सभी आवश्यक व्यवस्थाएं चुस्त-दुरुस्त रखने के निर्देश दिए। निकाय चुनाव में किसी भी तरह की शिकायत के लिए संगम सभागार में प्रशासन ने कंट्रोल रूम मनाया है।

नामांकन प्रक्रिया की होगी वीडियोग्राफी

पुलिस आयुक्त रमित शर्मा और जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री ने सोमवार को नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 के लिए बनाये गये नामांकन कक्षों का निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने निरीक्षण के दौरान एडीएम वित्त और राजस्व, सीआरओ, नगर मजिस्ट्रेट कक्ष, एसीएम-2, चकबंदी कार्यालय, एडीएम प्रशासन, एसओसी, एडीएम आपूर्ति, एसडीएम सदर, तहसीलदार कक्ष, एएसडीएम कक्षों में साफ-सफाई, पोताई, प्रकाश, सीसीटीवी कैमरा आदि व्यवस्थाओं को देखा। तहसील सदर के निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने फाइलों को व्यवस्थित ढंग से रखने का निर्देश दिया साथ ही निर्वाचन से सम्बंधित रजिस्टरों का भी निरीक्षण किया। उन्होंने सुरक्षा के दृष्टिगत बैरीकेडिंग भी कराये जाने के निर्देश दिए हैं। इसके अलावा लक्ष्मी चैराहा, कचहरी चैराहा सहित अन्य क्षेत्रों का भ्रमण कर जरूरी दिशा-निर्देश दिए। जिलाधिकरी ने नामांकन प्रक्रिया की वीडियोग्राफी भी कराये जाने के निर्देश दिए है। इस अवसर पर एडीएम सिटी श्री मदन कुमार, नगर मजिस्ट्रेट सत्यप्रिय सिंह सहित सभी सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

संगम सभागार में बनाया गया कंट्रोल रूम : संगम सभागार में नगरीय निकाय चुनाव को लेकर कंट्रोल रूम बनाया गया है। शिफ्टवार अधिकारियों/कर्मचारियों की ड्यूटी लगायी गयी है। कंट्रोल रूम का नंबर - 0532, 2641577, 2641578 है। इसपर किसी भी तरह की शिकायत फोनकर की जा सकती है। इसके अलावा ई-मेल आईडी- पर भी शिकायत हो सकती है। कंट्रोल रूम में सुबह 8 बजे से सायं 4 बजे तक के लिए पवन कुमार जायसवाल, पशुधन प्रसार अधिकारी, कार्यालय मुख्य तकनीकी अधिकारी, भेड़ एवं ऊनप्रयागराज-9839252633 और महेन्द्र कुमार पुष्पाकर, पशुधन प्रसार अधिकारी, कार्यालय मुख्य पशुचिकित्साधिकारी, प्रयागराज 9415575623 की ड्यूटी लगायी गयी है। इसी प्रकार सायं 4 बजे से रात 12 बजे तक के लिए शुभम त्रिपाठी, पशुधन प्रसार अधिकारी, कर्यालय मुख्य पशुचिकित्साधिकारी, प्रयागराज -9455692966 और अयोध्या प्रसाद, पशुधन प्रसार अधिकारी, कार्यालय मुख्य पशुचिकित्साधिकारी, प्रयागराज -9451588604 तथा रात 12 बजे से सुबह 8 बजे तक के लिए सुजीत कुमार, पशुधन प्रसार अधिकारी, कार्यालय मुख्य पशुचिकित्साधिकारी, प्रयागराज 9415953140और राजेश कुमार, पशुधन प्रसार अधिकारी, कार्यालय मुख्य पशुचिकित्साधिकारी, प्रयागराज 9453395143 की ड्यूटी लगायी गयी है। कंट्रोल रूम का प्रभारी अपर जिलाधिकरी नगर मदन कुमार को बनाया गया है।

जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी ने नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 की तैयारियों के सम्बंध में नोडल/प्रभारी अधिकारियों के साथ की बैठक

मतदान केन्द्रों पर सभी मूलभूत सुविधाए सुनिश्चित किए जाने के दिए निर्देश

प्रयागराज। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी श्री संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में सोमवार को संगम सभागार में नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 के सम्बंध में नोडल/प्रभारी अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने सभी नोडल/प्रभारी अधिकारियों को अपने कार्यों से सम्बंधित तैयारियां को समय से सुनिश्चित किए जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने जिला विद्यालय निरीक्षक एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को मतदान केन्द्रों पर शौचालय, प्रकाश, पानी सहित अन्य सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित किए जाने एवं उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा है। उन्होंने मतदान कार्मिकों का ठीक ढंग प्रशिक्षण कराये जाने के साथ-साथ कम्प्यूनिकेशन प्लान को भी व्यवस्थित ढंग से बनाये जाने का निर्देश दिया है। बैठक में कार्मिक व्यवस्था, यातायात व्यवस्था, संवेदनशील तथा अतिसंवेदनशील बूथों, आदर्श आचार संहिता अनुपालन, शांति व्यवस्था, निर्वाचन व्यय लेखा, टेण्टेज, बैरिकेटिंग सहित अन्य व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करायें जाने का निर्देश सम्बंधित अधिकारियों को दिया है। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार, एडीएम प्रशासन हर्षदेव पाण्डेय, एडीएम वित्त एवं राजस्व जगदम्बा सिंह, एडीएम सिटी मदन कुमार, एडीएम आपूर्ति जे0पी0 सिंह सहित अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

सुदर्शन समाज के लोगों ने किया समीक्षा बैठक

सिरसा। ललित नगर में 11 मार्च को सुदर्शन समाज का प्रथम सामूहिक विवाह होने के उपरान्त समीक्षा बैठक सुदर्शन समाज सेवा संस्थान प्रयागराज के तत्वाधान में ललित नगर में आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता विनोद कुमार ने और संचालन राजेश सुदर्शन ने किया। बैठक में समाज के सभी लोगों ने बढ़-चढ कर हिस्सा लिया। वही समाज की महिलाओं मे सामूहिक विवाह को लेकर खुशी की लहर है। महिला महासचिव श्रीमती निर्मला सुदर्शन जी ने कार्यक्रम की सहरना की और कहा ऐसा कार्यक्रम करने समाज में जागरूकता आएगी और समाज के लोग फिजुल खर्च व कर्ज से बचेंगे और उनका विकास व उत्थान होगा। वही संस्था के कार्यकारी अध्यक्ष प्रेम भरतो जी ने कहा समाज में सामूहिक विवाह के साथ-साथ समाज मे शिक्षा और सामाजिक समरसता बनाये रखने पर भी जोर देने की जाख्त हो सामूहिक विवाह कार्यक्रम में सहयोग देने वाले सभी साथियों को संस्था की ओर से सम्मानित लिया माह फरवरी में द्वितीय सामूहिक विवाह - वही २०२५ कराने का निर्णय लिया गया गमा जिसमे मुख्य रूप से श्री राजेश खुदर्शन, प्रेम भरतो, पप्पू मटेल राम काहारिया, सुभाष मलिक, बिनोद कुमार, गुउद चुहटेल, दिलीप अर्खेल, राज कुमार वैश, विक्की, शंकरलाल, शिवलाल, श्रीमती निर्मला सुदर्शन, मुकेश शुक्रवारे, सुमन देवी, अंजू देवी, शेमिया' देवी और संस्था के सदस्य और पदाधिकारियों लोग उपस्थित रहे।

सेंट पीटर्स को-एजुकेशनल स्कूल में आयोजित किया गया प्रमाण पत्र वितरण समारोह

मेजा रोड। सोमवार को सेंट पीटर्स को-एजुकेशनल इंग्लिश मीडियम स्कूल जनवार, में प्रमाण पत्र वितरण समारोह आयोजित किया गया। शैक्षणिक सत्र 2022-23 में अपनी-अपनी कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राएं। संस्था के प्रबंधक श्री अभिषेक खेड़ा ने अपनी क्षमता दिखाने वाले सभी छात्रों को बधाई दी। श्रीमती अंकिता खेड़ा ने विद्यार्थियों को संदेश दिया कि सफलता एक दिन में प्राप्त नहीं की जा सकती। यह हर दिन की मेहनत का संचित परिणाम है। इसलिए सभी छात्रों को पहले दिन से ही कड़ी मेहनत शुरू कर देनी चाहिए तभी वे जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। जिसमें नर्सरी के राधिका पांडे, शिवाय पांडे, पार्श्वी शुक्ला एवं एलकेजी के आशी तिवारी, शिखा पांडे, अथर्व तिवारी एलकेजी और यूकेजी के असद अहमद, फरिया खान, मोहम्मद असद रजा एवं क्लास 1 के अदिक केसरी, आराध्या, आकाश केसरी व क्लास 2 के शांतनु, आयुष तिवारी, शिल्पा पटेल क्लास तीन के निधि यादव , निशू यादव, आलिया क्लास 4 के आकांक्षा पटेल, सौम्या उपाध्याय, अयान अहमद, कक्षा 5 के मनु यादव, अन्याश्रीवास्तव , अनिकेत यादव कक्षा 6 के अनन्या केसरी, प्रथमेश तिवारी, अभय कुमार कक्षा 7 के अंचल निषाद, अर्पिता यादव, आरुषि पटेल और कक्षा 8 के रेहान अहमद, श्रेया वर्मा, मानस शुक्ला आदि छात्रों को प्रमाण पत्र वितरण किया गया ।

राजस्व विभाग की टीम ने अवैध अतिक्रमण को जेसीबी से करवाया ध्वस्तीकरण

मऊआइमा। चकमार्ग पर कच्चा मकान बना कर वृक्षों को लगा दिया गया था। राजस्व विभाग की टीम के चेतावनी देने के बावजूद आतिक्रमण न हटाने पर राजस्व विभाग की टीम भारी महिला पुलिस बल के साथ जेसीबी से ध्वस्तीकरण कर दिए। विरोध तथा पुलिस से भिडने पर दोनों बहनों को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम मऊदोस्तपुर लूट मार चौराहे के निकट आरोप है कि स्वर्गीय केदारनाथ सरोज की दो सगी पुत्रियां संतरा देवी, निशा देवी पक्का भवन होने के बावजूद चकमार्ग एंव अनिल कुमार मौर्या की भूमि पर सडक से चालिस फुट तक वृक्ष, फूल आदि लगा कर मडहा नुमा मकान बना कर अवैध रूप से कब्जा किए हुए थीं।जिसकी शिकायत ग्राम प्रधान तीरथ यादव ने की थी।। आरोप है कि तमाम चेतावनी देने के बावजूद दोनों बहनें राजस्व विभाग को बुरा भला कहती थीं। सोमवार को कानून गो प्यारेलाल, लेखपाल राज कुमार सागर आदि ग्राम प्रधान तीरथ यादव की मौजूदगी में मऊआइमा से महिला कांस्टेबलों सहित सब इंस्पेक्टर संजय कुमार मौर्या के साथ जेसीबी लेकर जब पहुंचे तो आरोप है कि संतरा देवी एंव निशा देवी पुलिसकर्मियों से अभद्रता करते हुए आतिक्रमण में बाधा डालने लगी। जिसपर महिला कांस्टेबलों दोनों को हिरासत में लेकर थाने में बैठा कर ध्वस्तीकरण कर के जमीन खाली करा दी।बताया गया है कि फक्के भवन को गिराने के लिए हाईकोर्ट से परमीशन लेना पडेगा।

बल्ले से व्यापारी के सिर पर किया प्रहार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज कमिश्नरेट के खुल्दाबाद कोतवाली अंतर्गत रोशन बाग मोहल्ले में वाहन खड़ा करने को लेकर हुए विवाद का एक वीडियो सोमवार को सामने आया।जिसमें व्यापारी पर इतना तेजी से हमला किया गया कि व्यापारी वहीं गिरकर बेहोश हो गया। यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। व्यापारी के सिर पर लगी चोट का ऑपरेशन हो चुका है। लेकिन अभी भी वह कोमा में है। पुलिस ने इस प्रकरण में दोनों तरफ से क्रास एफआईआर दर्ज किया है।

6 अप्रैल की रात में हुआ था विवाद : नगर के खुल्दाबाद कोतवाली अंतर्गत रोशन बाग मोहल्ले में बिल्डिंग की दुकानों के अलावा पटरी पर भी दुकानें लगती है। जिसकी वजह से बिल्डिंग वाले दुकानदारों और पटरी वाले दुकानदारों के बीच आए दिन विवाद होता रहता है। 6 अप्रैल को रात में 8:30 बजे रोशन बाग में प्रवेश मार्केट में स्थित मोहम्मद अर्थ पुत्र अरशद सलीम निवासी जीटीवी नगर करेली की दुकान के सामने वाहन खड़ा करने को लेकर मोहम्मद फैज और परवेज आदि से विवाद हो गया।

दूसरे पक्ष ने दुकान के अंदर घुस कर की मारपीट, तोड़फोड़ : विवाद में दोनों पक्षों में मारपीट हुई। लेकिन स्थानीय लोगों ने बीच-बचाव करके मामला शांत करा दिया। मोहम्मद अर्श की तरफ से दी गई तहरीर के मुताबिक उस झगड़े के शांत होने के बाद फैज और परवेज अपने दर्जनभर साथियों के साथ उसकी दुकान में घुसकर मारपीट शुरू कर दी। जिसमें लोहे की रॉड डंडे एवं ईट से मारकर मो. अर्श, उसके मामा मो. अशहर, मामा के बेटे काशिफ और अर्श के पिता अरशद सलीम पर जानलेवा हमला कर दिया।

सिर में चोट लगने से 4 दिन से कोमा में है अरशद : हमले में सभी लोग घायल हो गए लेकिन अर्श के पिता अरशद सलीम को गंभीर चोट लगी। उनका सर फटा है और वह कोमा में चला गया हैं। अर्श के चचेरे भाई साहिल के मुताबिक उनके चाचा अरशद के सिर पर ईंट और बल्ले से प्रहार किया गया है।

आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग : जिसका वीडियो उन्हें मिला है। 31 सेकंड के वीडियो में हमलावरों का आतंक दुकान के अंदर साफ तौर पर दिख रहा है। साहिल ने बताया कि उन्होंने 10 अप्रैल को चाचा के सिर का ऑपरेशन कराने के बाद पुलिस कमिश्नर को प्रार्थना पत्र देकर आरोपियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करने की गुहार लगाई है।

हाईवे पर डीजल चोर गिरोह का पदार्फाश

4 गिरफ्तार, चोरी की स्कार्पियो, हथियार बरामद, खड़ी ट्रकों से पार कर देते थे डीजल

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज के हंडिया थाना क्षेत्र से पुलिस ने हाईवे पर डीजल चोरी करने वाले अंतरराज्यीय गिरोह का भंडाफोड़ किया है। यह गिरोह सुनसान जगहों पर या ढाबों पर खड़ी ट्रकों को टारगेट बनाता था और उनके डीजल टैंक का ताला तोड़कर डीजल चोरी कर लेता था। पुलिस ने 4 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है। उनके कब्जे से चोरी की स्कॉर्पियो, एक अवैध असलहा और चोरी के 35 लीटर के 3 गैलन बरामद किया है। पुलिस ने चारों अभियुक्तों को बगहा क्रॉसिंग से गिरफ्तार किया है।

ये हैं गिरफ्तार अभियुक्त : गिरफ्तार अभियुक्तों में अमित मालवीय उर्फ अंतर पुत्र पीरूलाल निवासी ग्राम भीमपुरा थाना तराना जनपद उज्जैन माध्यप्रदेश, भूपेंद्र उर्फ पप्पू जाटव पुत्र शंकर लाल जाटव निवासी मक्सी थाना जनपद शाजापुर मध्यप्रदेश, विजय मनिहारी उर्फ विजय चौहान, पुत्र रमेश चंद्र चौहान, निवासी ताजपुर थाना चीमनगंज जिला उज्जैन माध्यप्रदेश, अनिल लोहाना पुत्र मिश्री लाल लोहाना निवासी ग्राम झूकर थाना मक्सी जनपद शाजापुर मध्यप्रदेश शामिल हैं।

घूम घूमकर हाईवे पर खड़े ट्रकों को बनाते हैं निशाना

इस विषय में जानकारी देते हुए डीसीपी प्रोटोकोल रबी शंकर निगम ने बताया कि गिरफ्तार अभियुक्त घुमंतू प्रवृत्ति के हैं। घूम-घूमकर हाईवे किनारे खड़े उन ट्रकों को निशाना बनाते हैं, जिनके ड्राइवर या तो किसी काम से ट्रक से दूर गए हुए होते हैं या फिर सो रहे होते हैं। ट्रक की डीजल टंकी को तोड़कर ये चोर डीजल प्लास्टिक की कैन में निकाल लेते हैं। इसके बाद चोरी के डीजल को यह औने पौने दाम पर बेच देते हैं। जितनी जरूरत हो उतना अपने पास भी रख लेते हैं। मुखबिर की सूचना के आधार पर अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया है। इन पर मध्य प्रदेश में कई अपराध दर्ज हैं, जिनकी जानकारी मिली है। इसके अलावा प्रयागराज के आसपास के जिलों में इन्होंने और कहां-कहां अपराध किए हैं इस विषय पर भी जानकारी की जा रही है। अभी इनसे जारी है।

निष्पक्ष और भयमुक्त चुनाव के लिये जिला प्रशासन ने कसी कमर

जिला निर्वाचन अधिकारी ने जारी किया नगर निकाय चुनाव की अधिसूचना

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी डा0 नितिन बंसल ने आज कलेक्ट्रेट के सभागार में पत्रकारों से रुबरु होते हुए नगर निकाय के चुनाव की अधिसूचना जारी किया। उन्होंने बताया कि आगामी चार मई को प्रतापगढ़ की एक नगर पालिका तथा 18 नगर पंचायतों का मतदान प्रातः सात बजे से साढे. छह बजे तक होगा।

उन्होंने बताया कि मतदान सम्पन्न कराने के लिये 279 वार्डों को 42 सेक्टरों में बांटा गया है। निर्वाचन के आरओ का

हर मतदान केन्द्र पर होगी पुलिस की सख्त व्यवस्थाः एसपी

पत्रकारवार्ता में बोलते जिला निर्वाचन अधिकारी डा0 नितिन बंसल।

प्रषिक्षण पहले ही दिया जा चुका है। आज उनको रिफ्रेषर की टेजनिंग फिर दी गई। 11 अप्रैल से 17 अप्रैल तक नामांकन होगा। 18 अप्रैल को नामांकन पत्रों की जांच व 20 अप्रैल को नाम वापसी की जाएगी। 21 अप्रैल को प्रत्याषियों का प्रतीक आवंटन होगा। उसके बाद 4 मई को मतदान तथा 13 मई को मतगणना होगी। मतगणना के लिये राजकीय इंटर कालेज, स्नातकोत्तर महाविद्यालय पट्टी, स्वामी करपात्री इंटर कालेज रानीगंज, लालगंज तहसील तथा तुलसी इंटर कालेज बाबूगंज मतगणना केन्द्र बनाये गये हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी के अनुसार जिले में 457814 नगरीय क्षेत्र के मतदाता हैं जिसमें 238190 पुरुष व 219624 महिला मतदाता हैं। नगर पालिका बेला में 58459 पुरुष व 52660 महिला मतदाता हैं। नगर पालिका में इस बार एक अध्यक्ष व 25 सभासद चुने जाएंगे। पत्रकारवार्ता में उपस्थित पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल ने बताया कि हर मतदान केन्द्र पर पर्याप्त सुरक्षा की व्यवस्था की जाएगी। अपराधियों पर नजर रखने के लिये एक नोडल अधिकारी अलग से नियुक्त किये जाएंगे। उन्होंने कहा कि हर थाना क्षेत्र में इस बार मतदान नहीं है, इसलिये जिन क्षेत्रों में मतदान नहीं है, वहां की पुलिस मतदान वाले क्षेत्रों में सहयोग करेगी।

समाज के युवा राजनीति में बढ़-चढ़कर भागीदारी निभाएंः डा. दीप विश्वकर्मा

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। समाज के युवा राजनीति से पीछे हटने के बजाय उसमें बढ़ चढ़कर भागीदारी करे क्योंकि किसी भी समाज की उन्नति उसकी युवा शक्ति एवं राजनीतिक भागीदारी पर निर्भर करती है। उक्त बातें त्रिलोकपुर बाघराय में दि अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासभा द्वारा संचालित विश्वकर्मा आर्मी के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विश्वकर्मा आर्मी के प्रदेश उपाध्यक्ष डा. दीप विश्वकर्मा ने बतौर मुख्य अतिथि कही।

उन्होंने कहा कि समाज को एकजुटता के साथ अपनी ताकत दिखानी होगी तथा भावी पीढ़ी के भविष्य के लिए अपने समाज के नेता को चुनकर विधानसभा तथा लोकसभा में भेजना होगा। तभी हमारी ताकत का एहसास होगा। विशिष्ट अतिथि जिलाध्यक्ष प्रकाश विश्वकर्मा ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए ज्ञान जरूरी है और ज्ञान शिक्षा से मिलता है। जिस समाज में शिक्षा का स्तर अच्छा

बिहार के त्रिलोकपुर में विश्वकर्मा महासंघ ने मेधावियों को किया सम्मानित

रहेगा, वह समाज उतनी ही तेजी से आगे बढ़ेगा। कार्यक्रम को डा. मीतलाल, धीरज विश्वकर्मा, वीरेंद्र विश्वकर्मा आदि ने संबोधित किया।

इसके पूर्व अतिथियों ने मां काली के मंदिर व भगवान विश्वकर्मा की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। जिसके बाद विश्वकर्मा आर्मी कुंडा के अध्यक्ष स्वास्तिक विश्वकर्मा व उपाध्यक्ष शैलेन्द्र विश्वकर्मा समेत पदाधिकारियों ने अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। कार्यक्रम में मेधावी छात्र छात्राओं अंजली विश्वकर्मा, रीतू विश्वकर्मा, अर्पिता विश्वकर्मा, रश्मि विश्वकर्मा, लाडली, निखिल, सचिन, रीतेश व नीलेश आदि को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में आयोजक राजेश विश्वकर्मा ने आज हुए अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया। इस मौके पर जिला उपाध्यक्ष स्वतंत्र विश्वकर्मा, रामनाथ विश्वकर्मा, रमेश विश्वकर्मा, राजू, अनिल, प्रेम कुमार, प्रदीप, सूर्यकांत, धर्मेंद्र विश्वकर्मा, अमित विश्वकर्मा, शिव विश्वकर्मा, दीपक विश्वकर्मा, बृजभूषण, अजय, इंद्रेश, अमन, सुरेश, अनुज, दरोगा विश्वकर्मा, विमलेश, मनोज आदि लोग मौजूद रहे।

भाराप महासंघ कुंडा की कार्यकारिणी गठन की बैठक संपन्न

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ की कुंडा तहसील इकाई की कार्यकारिणी को 31 मार्च को भंग किए जाने के बाद प्रांतीय संयुक्त सचिव डॉ विजय यादव को संयोजक बनाया गया है। जिनकी अध्यक्षता में रविवार को कुंडा डाक बंगला में नई कार्यकारिणी के गठन के संबंध में बैठक आयोजित की गई। बैठक में संगठन के सदस्यों के कई प्रकार के सुझाव और विचार आए।

इस दौरान सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि बैठक में आए गए सभी प्रस्तावों को

डा0 विजय यादव को बनाया गया संयोजक

राष्ट्रीय संयोजक डॉक्टर भगवान प्रसाद उपाध्याय, राष्ट्रीय अध्यक्ष मुनेश्वर मिश्रा व प्रांतीय अध्यक्ष प्रभा शंकर ओझा को अवगत कराया जाएगा। राष्ट्रीय व प्रांतीय नेतृत्व जो भी निर्णय लेगा, उसे सभी लोग स्वीकार करेंगे। राष्ट्रीय मुख्य महासचिव मथुरा प्रसाद धूरिया व प्रयागराज मंडल अध्यक्ष अजय पांडे ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि संगठन नियम कानून से चलेगा तथा संगठन में उन्हें कार्य करने का अवसर मिलेगा जो संगठन के प्रति समर्पण की भावना रखते हैं अन्यथा संगठन विरोधी कार्य करने वालों को बाहर का रास्ता दिखा दिया जाएगा। इस मौके पर निवर्तमान अध्यक्ष अजय मिश्रा, विद्याचरण मिश्रा मुन्ना, विनोद मिश्रा, अब्दुल हाशिम, आनंद शुक्ला, पन्नालल गुप्ता, काशी राणा, अमरनाथ यादव, लोकेश मिश्रा, दिलीप साहू, कुलदीप कुमार विश्वकर्मा, सौरभ वैश्य, अंकुश यादव, इजहार अहमद शेख, संदीप यादव, सूरज पांडे, विजय राज यादव, शहबाज खान सचिन श्रीवास्तव, उमेश कुमार पाल, संदीप साहू, अखिलेश कुमार मिश्रा समेत तहसील क्षेत्र के पत्रकार गण मौजूद रहे।

वालीबाल प्रतियोगिता में युवराज की टीम रही अव्वल

अखंड भारत संदेश

एमडीपीजी कालेज में शुरू हुई वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता

प्रतापगढ़। एमडीपीजी कॉलेज की वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता का शुभारंभ महाविद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष प्रमन मिश्र एवं प्राचार्य प्रो मनोज मिश्र ने किया। दीप प्रज्वलन एवं मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ कार्यक्रम की शुरूआत हुई। प्राचार्य एवं अध्यक्ष द्वारा मार्च पास्ट की सलामी ली गई तथा रंग बिरंगे गुब्बारे आसमान में छोड़े गए।

खिलाड़ियों का परिचय प्राप्त करने के उपरांत पहला खेल वालीबाल का कराया गया। खेल परिणामों की जानकारी देते हुए महाविद्यालय के जनसूचना अधिकारी डॉ सी एन पांडे ने बताया कि वालीबॉल प्रतियोगिता में कप्तान युवराज की ए टीम ने

प्रतियोगिता का शुभारंभ करते प्रबंध समिति के अध्यक्ष प्रमन मिश्रा व प्राचार्य।

शाहिद अली की टीम बी को कड़े मुकाबले में शिकस्त दी। लड़कियों की कबड्डी प्रतियोगिता में स्वाति पांडे की टीम ने पूजा यादव की टीम को पराजित कर विजेता बनी। बैडमिंटन की प्रतियोगिता में बालक वर्ग में शिवांग सिंह प्रथम, युवराज सोमवंशी द्वितीय एवं शाहिद अली को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। बालिका वर्ग में हर्षिता उमर वैश्य को प्रथम, कविता गुप्ता द्वितीय तथा पूजा यादव तीसरे स्थान पर रहीं। महिला खो-खो में स्वाती पांडे की टीम ए ने साक्षी पाल की टीम बी को पराजित किया। कैरम पुरुष वर्ग में साहिल विश्वकर्मा ने नीरज कुमार को पराजित किया जबकि शतरंज में राम ने राज तिवारी को परास्त किया। कैरम के महिला वर्ग में आकांक्षा शर्मा ने कविता गुप्ता को हराया। शतरंज महिला वर्ग में मणिरत्ना विश्वकर्मा ने कविता गुप्ता को पराजित किया। खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए प्राचार्य प्रो मनोज मिश्रा ने कहा की खिलाड़ियों में खेल भावना होनी चाहिए। पूरी सामर्थ्य, लगन एवं उत्कृष्ट प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए खेलना चाहिए।उन्होंने कहा कि खेल समरसता एवं सामाजिक सौहार्द के प्रतीक हैं इसलिए इन्हें बढ़ावा दिया जाना चाहिए। सरकार इस दिशा में प्रयत्नशील है इसीलिए गांवों में खेल के मैदान एवं मिनी स्टेडियम विकसित करने का काम सरकार कर रही है। क्रीड़ा प्रभारी प्रो प्रदीप कुमार सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ संतोष कुमार पांडे ने एवं निर्णायक की भूमिका प्रो राजेंद्र सिंह (रज्जू भैय्या) विश्वविद्यालय के क्रीड़ा परिषद के पूर्व सचिव प्रो पवन कुमार पचैरी एवं रमेश ने निभाई। कार्यक्रम में आनंद पांडे, प्रो शैलेंद्र कुमार मिश्र, प्रो राजीव मालवीय, प्रो अखिलेश पांडे, प्रो बृजेंद्र प्रताप सिंह, प्रो अरुण कुमार श्रीवास्तव, प्रो अरुण कुमार तिवारी, प्रो अरविंद मिश्र, प्रो किरण मिश्रा,डॉ सी एन पांडेय, डॉ डी के पांडे, डॉ बलराज मिश्र, डॉ अरविंद मोहन ओझा, डॉअभिषेक सिंह,डॉ राजेंद्र प्रसाद मिश्र, उमेश प्रताप सिंह, अश्वनी केसरवानी आदि उपस्थित रहे।

निर्वाचक नामावली में परिवर्धन, संशोधन एवं विलोपन पर किया गया प्रावधान

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0)/निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (न0नि0) त्रिभुवन विश्वकर्मा ने बताया है कि नगरीय निकाय निर्वाचक नामावली 2022 में परिवर्धन, संशोधन तथा विलोपन की कार्यवाही के सम्बन्ध में राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा उत्तर प्रदेश नगर पालिका अधिनियम 1916 की धारा-12च में प्रावधान किया गया है जिसमें बताया गया कि जहां निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी का चाहे उसको दिये गये किसी आदेश पत्र पर या स्वप्रेरण से ऐसी जांच करने के पश्चात जिसे वह उचित समझे, यह समाधान हो जाय कि निर्वाचक नामावली की कोई प्रविष्टि सुधारी या निष्कासित की जानी चाहिये या रजिस्ट्रीकरण के लिये हकदार किसी व्यक्ति का नाम निर्वाचक नामावली में परिवर्धन किया जाना चाहिये, वहां वह इस अधिनियम और उसके अधीन बनाये गये नियमों और दिये गये आदेशों के अधीन रहते हुये किसी प्रविष्टि का यथास्थिति निष्कासन, सुधार या परिवर्धन करेगा। परन्तु ऐसा कोई सुधार या निष्कासन जो किसी व्यक्ति के हित पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाला हो उसके विरूद्ध प्रस्तावित कार्यवाही के सम्बन्ध में सुनवाई का समुचित अवसर दिये बिना नहीं किया जायेगा, किन्तु प्रतिबन्ध यह भी है कि ऐसा कोई सुधार, निष्कासन या परिवर्धन, कक्ष के किसी निर्वाचन के लिये नाम निर्देशन होने अन्तिम दिनांक के पश्चात और उस निर्वाचन के पूरा होने के पूर्व नहीं किया जायेगा। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) ने आयोग के निर्देश के क्रम में समस्त उपजिलाधिकारी/सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (न0नि0), समस्त तहसीलदार/अतिरिक्त सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (न0नि0) को निर्देशित किया है कि उत्तर प्रदेश नगर पालिका अधिनियम 1916 की धारा-12च के प्रावधानों के अन्तर्गत नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 की अधिसूचना निर्गत होने से पूर्व तक जो दावे एवं आपत्तियाँ प्राप्त होंगी, उनका निस्तारण करते हुये नामांकन के अन्तिम दिनांक तक निर्वाचक नामावली में परिवर्धन, संशोधन एवं विलोपन की कार्यवाही की जायेगी ताकि मतदाता सूची में किसी प्रकार की त्रुटि न रह जाये।

चुनाव की घोषणा होते ही शहर की उतरने लगी होर्डिंग

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर निकाय के चुनाव की घोषणा होते ही जिला प्रषासन हरकत में आ गया। रविवार की शाम से ही नगर पालिका के अधिषाषी अधिकारी राम अचल कुरील, आरआई लाल बहादुर सिंह, सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह तथा रोड गैंग के कर्मचारी सड़कों के किनारे लगी बड़ी-बड़ी होर्डिंग को उतारने लगे। देर शाम तक यह कार्यक्रम चलता रहा। सोमवार को सुबह से अधिकारी व कर्मचारी चैक घंटाघर से भंगवा चुंगी, फिर भंगवा चुंगी से टेज्जरी चैराहा, विकास भवन, कम्पनी गार्डेन होते हुए मीरा भवन तक होर्डिंग उतारने का कार्य सोमवार की शाम तक चलता रहा। इस कार्य में मकन्दूगंज पुलिस चैकी के सिपाही भी थे। वैसे हौर्डिंग उतारने में कहीं कोई विरोध नहीं हुआ।

चचेरे बहनोई ने किया किशोरी के साथ दुष्कर्म

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। घर मे अकेली किशोरी के साथ उसके चहेरे बहनोई ने दुष्कर्म किया। यह बात जब उसकी माँ को पता चला तो उसने पट्टी कोतवाली में शिकायती पत्र दिया है। पट्टी कोतवाली के एक गांव की किशोरी घर मे अकेली थी तभी उसका चचेरा बहनोई आया और उसके भाई को अंडा लाने के लिए कहा और जब वह घर से बाजार चला गया तो उसने किशोरी के साथ दुष्कर्म किया। यह बात जब किशोरी की मां को पता चली तो उसने पट्टी कोतवाली में आरोपी के विरुद्ध शिकायती पत्र दिया है। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य पुनः इंटरनेशनल डायरेक्टर बनाया गए

प्रतापगढ़। एलायंस क्लब इंटरनेशनल बोर्ड की बैठक कोलकाता के प्रीमियम पार्क होटल में संपन्न हुई। शीर्ष नेतृत्व को रोशनलाल उमरवैश्य ने 2022-23 में किए गए कार्यों की बुकलेट रोशनलाल उमरवैश्य ने इंटरनेशनल प्रेसिडेंट को सौंपी। अभी तक किए गए बहु आयामी सामाजिक कार्यों का मूल्यांकन किया। एकमत होकर उन्हें क्लब का इंटरनेशनल डायरेक्टर नियुक्त किया गया। वर्तमान इंटरनेशनल प्रेसिडेंट तृप्ता कौर जुनेजा ने रोशनलाल उमरवैश्य की नियुक्ति 2023-24 सत्र के लिए की है।

तीन वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के कुशल निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों पर अंकुश लगाने हेतु चलाये जा रहे अभियान के क्रम में जनपद के थाना कुण्डा के उ0नि0 मनोज कुमार मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/तलाश वांछित, वारण्टी अभियुक्त के दौरान मुखबिर की सूचना पर थाना कुण्डा के मु0अ0सं0 275/22 धारा 306, 504, 506 भादवि व 3(2)5क, 3(1)द, 3(1)ध एससी/एसटी एक्ट में तीन वांछित अभियुक्तों विक्रमाजीत पुत्र रजवन्त सिंह, उदय प्रताप सिंह उर्फ सोनू सिंह पुत्र विक्रमाजीत सिंह व सत्यम सिंह उर्फ मोनू सिंह पुत्र विक्रमाजीत सिंह नि0गण ग्राम बाबूपुर टिकरिया बुर्जुग थाना कुण्डा जनपद प्रतापगढ को थाना क्षेत्र कुण्डा के टिकिरिया बुजुर्ग तिराहा के पास से गिरफ्तार किया गया।

शंकरगढ़ की गिट्टी डाल कर नदारद हुआ ठेकेदार नही नसीब हुआ रोलर

ग्रामीण हो रहे है परेशान, लालगंज के अगई संपर्क मार्ग का है मामला

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। ठेकेदार की मनमानी से ग्रामीण परेशान हो रहे है। संपर्क मार्ग पर शंकरगढ़ की गिट्टी डाल कर कार्यदाई संस्था नदारद हो गई। महीनो बीत जाने के बाद भी रोलर तक नही चलाया गया।शिकायत के बाद भी कोई जिम्मेदार इस समस्या की तरफ नही देख रहा है।

स्थानीय विकास खंड के अगई गांव के जर्जर संपर्क मार्ग पर कुछ माह पहले एक कार्यदाई संस्था द्वारा कार्य शुरू कराया गया। ठेकेदार ने संपर्क मार्ग पर शंकरगढ़ की गिट्टी डाल कर

संपर्क मार्ग पर इस तरह डालकर छोड़ी गई गिट्टी।

गायब हो गया। महीनों बीत जाने के बाद भी अभी कार्य शुरू नही हो सका। इस हाल में लोगो को आने-जाने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। अगई गांव के साथ ही इसी मार्ग पर इंडेन गैस एजेंसी होने के कारण दूर-दराज के गैस उपभोक्ताओं का भी आना जाना होता है। अब इस दशा में मार्ग पर पड़े बोल्डर गिट्टी की वजह से लोगो को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन ग्रामीणों की समस्या पर कोई भी ध्यान नहीं दे रहा है। आए दिन राहगीर लड़खड़ा के गिरकर चुटाहिल हो रहे हैं। ग्रामीणों की माने तो ठेकदार ने महीनो पहले गिट्टी छोड़कर चला गया,जिस पर रोलर भी नसीब नही हुआ। मामले की शिकायत भी की गई, लेकिन कोई सार्थक परिणाम अभी तक नही आया।

आपदाओं से निपटने हेतु राष्ट्रीय आपदा चेतावनी पोर्टल (सचेत) उपयोगीः एडीएम

प्रतापगढ़। अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) त्रिभुवन विश्वकर्मा ने बताया है कि राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकरण भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय आपदा चेतावनी पोर्टल (सचेत) एवं मोबाइल एप का विमोचन किया गया है। राष्ट्रीय आपदा चेतावनी पोर्टल (सचेत) पर आपदाओं से सम्बन्धित प्रारम्भिक चेतावनी/अलर्ट का प्रसारण अलर्ट जनरेटिंग एजेंसियों यथा आईएमडी, सीडब्लूसी, आईएनसीओआईएस, डीजीआरई, एफएसआई आदि द्वारा किया जाता है जिसके माध्यम से आपदा से सम्बन्धी चेतावनियॉ विशेष स्थान पर भी उपलब्ध करायी जा सकती है। आपदाओं से निपटने हेतु प्रभावी मंत्र को विकसित करने के लिये राष्ट्रीय आपदा चेतावनी पोर्टल (सचेत) एवं मोबाइल ऐप बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। यह मोबाइल ऐप गूगल प्ले और एपल ऐपस्टोर पर उपलब्ध है। राष्ट्रीय आपदा चेतावनी पोर्टल एवं मोबाइल ऐप है।

मानवता की रक्षा के लिये भेदभाव मिटाकर सबको साथ आना होगाः सौम्या

लीलावती मिश्र के प्रति श्रद्धांजलि के साथ सम्मान पेंशन वितरण समारोह संपन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। शारदा संगीत महाविद्यालय के सभागार में रविवार को अम्मा साहेब ट्रस्ट द्वारा आयोजित आजीवन मासिक पेंशन वितरण समारोह की मुख्य अतिथि अम्मा साहेब ट्रस्ट की संरक्षक सदस्य सौम्या मिश्रा ने कहाकि संसार में मानवता की रक्षा के लिए हर प्रकार के भेदभाव मिटाकर सबको साथ आना होगा।

उन्होंने कहा कि मानवता की राह में सद्गुणों और सद्विचारों का विस्तार इतना व्यापक है कि हर व्यक्ति जानता है कि क्या सही है और क्या गलत है, फिर भी प्रायः विपरीत आचरण देखने को मिलता

सम्मान पेंशन वितरण समारोह में मौजूद अतिथिगण।

है। वास्तव में यह अज्ञानवश नहीं बल्कि जानबूझकर होता है। जानबूझकर की गयी गल्तियों का निदान संभव नहीं है। समारोह की मुख्य अतिथि सौम्या मिश्रा एवं विशिष्ट अतिथिद्वय समाजसेविका नीशू श्रीवास्तव एवं कवियित्री कु० वैष्णवी सिंह के साथ समारोह की अध्यक्ष कमलेश कुमारी तिवारी का अन्तर्राष्ट्रीय मानवतावादी सामाजिक संघ द्वारा सारस्वत अभिनन्दन सहित सम्मान किया गया। उक्त अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा शारदा संगीत महाविद्यालय की छात्रा कु० शिप्रा सरोज को स्वस्थ समाज के निर्माण हेतु जनहित में निर्धारित शर्तों के अनुपालन के बदले अम्मा साहेब ट्रस्ट द्वारा जारी मानवता का पुरस्कार (आजीवन मासिक पेंशन) की विस्तृत फाइल सौंपी गयी। अम्मा साहेब ट्रस्ट के मुख्य संरक्षक शिव प्रकाश मिश्र सेनानी की माता लीलावती मिश्र सेनानी के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। शारदा संगीत महाविद्यालय की प्राचार्य बीना श्रीवास्तव ने सभी का स्वागत किया तथा समारोह का संचालन अम्मा साहेब ट्रस्ट की प्रभारी इंजी० नंदिनी श्रीवास्तव द्वारा किया गया। इस दौरान कार्यक्रम की अध्यक्ष आइडियल पब्लिक स्कूल, महुली, प्रतापगढ़ की प्रधानाचार्य कमलेश कुमारी तिवारी ने भी अपने विचार रखे। उक्त अवसर पर अम्मा साहेब ट्रस्ट के ट्रस्टी आनन्द मोहन ओझा ने कहाकि अम्मा साहेब ट्रस्ट का वास्तव में अर्थ अन्तर्राष्ट्रीय मानवतावादी सामाजिक संघ है जो किसी से किसी प्रकार का भेदभाव नहीं कर सकता है परन्तु जो स्वयं भेदभाव से भरे हुए लोग हैं उन्हें इसे समझने के योग्य बनाना वास्तव में संभव नहीं है इसलिए उनसे बचकर आगे निकलना ही अधिक श्रेयस्कर है। उक्त अवसर पर चन्द्रभान सिंह, राजीव कुमार आर्य, अशोक कुमार शर्मा, राकेश कुमार कनौजिया, राजेश मिश्र, लालजी त्रिपाठी, सुनील कुमार सिंह, रवि खण्डेलवाल, सुमेधा श्रीवास्तव, रामलली मौर्य, कमला जायसवाल, ओ०पी० गुप्ता, वारिजाक्ष्य मिश्र, इंजी० पीयूष द्विवेदी, मनप्रीत कौर, प्रभाकर पाण्डेय, रीतिका मौर्य ह्यरीतूह्ल, कंचन मौर्य, कुसुमलता श्रीवास्तव, राम प्रकाश तिवारी, दुर्गेश शुक्ला, अनुज कुमार पाण्डेय, विशाल यादव, संतोष कुमार ओझा, प्रताप सिंह, अजय कुमार तिवारी एवं प्रभात कुमार सोनी सहित शारदा संगीत महाविद्यालय के तमाम छात्र एवं छात्राएं उपस्थित रहे।

खबर संक्षेप

बृजेश मेमोरियल अस्पताल में सोमवार मंगलवार को उपस्थित रहेंगे हड्डी रोग विशेषज्ञ

भरवारी कौशाम्बी। भरवारी कस्बे के मेहता रोड में बृजेश मेमोरियल हॉस्पिटल के चिकित्सक डॉ मयंक केसरवानी ने बताया कि सोमवार 10 अप्रैल मंगलवार 11 अप्रैल को हड्डी रोग विशेषज्ञ अस्पताल में मौजूद रहेंगे उन्होंने बताया कि स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ आरपी पाठक लखनऊ की ओपीडी पहले की तरह रविवार के दिन सुबह 11:00 बजे से 5:00 बजे तक रहेगी उन्होंने बताया कि डॉ बीएस शंकर हड्डी रोग विशेषज्ञ लखनऊ सप्ताह के पूरे दिन पूरे समय बृजेश कुमार अस्पताल एवं ट्रामा सेंटर भरवारी में मरीजों के इलाज और जांच के लिए उपस्थित रहेंगे।

चेकिंग के दौरान कार्यवाही

कौशाम्बी। जनपद में चलाये जा रहे यातायात से सम्बन्धित अभियान के क्रम में जनपद स्तर पर विभिन्नथानों व यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिसमे यातायात नियमों का उल्लघन करने वाले 49 वाहनों का ई-चालान किया गया।

विद्युत शार्ट सर्किट से गेहूं की फसलो में लगी आग

फिर उजागर हुई विद्युत विभाग की बड़ी लापरवाही, फसलों के जलने से दर्जनों किसानों के ऊपर टूटा मुसीबत का पहाड़

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के टेवा के पास महेश बाबा मंदिर के पास विधुत शार्ट सर्किट से किसानों के खेत में खड़ी गेहूं की फसल में सोमवार की दोपहर अचानक बिकराल आग लग गयी है।

देखते देखते किसानों के खेत में खड़ी लगभग 25 बीघा गेंहू की फसल जल कर खाक हो गयी लगभग 25 बीघा गेहूं की फसल जलजाने के बाद पूरे इलाके में किसानों के बीच हाहाकार मच गया गांव के सैकड़ो लोग घटनास्थल पर पहुंच कर आग को काबू में पाने की कोशिश कर रहे है फिर भी आग नही बुझी है विभाग के द्वारा आग बुझाने की कोशिश की जा रही है आग लगने से लालजी मिश्रा झाइयन मिश्रा धर्मपाल लोध नईम चिकवा मनोज श्रीवास्तव आदि के खेत की फसल जल गई है खेत में आग लग जाने से पूरे गांव के लोग घटनास्थल पर टूट पड़े हैंफायर ब्रिगेड की कई गाड़ियां मौके पर पहुंची हैं ग्रामीणों के सहयोग से आग पर काबू पाया गया है। बताया जाता है कि इसके पहले भी अलग-अलग गांव में विद्युत की शार्ट सर्किट से किसानों के खेत की फसल जलकर खाक हो चुकी है लेकिन लापरवाह विद्युत अधिकारियों पर अभी तक मुकदमा दर्ज करा कर आला हाकिम ने विद्युत अधिकारी की गिरफ्तारी नहीं कराई है।

धू-धूकर जलती खेत में लगी गेहूं की खड़ी फसल

लापरवाह विद्युत अधिकारियों की करतूत के चलते किसानों को फसल जल रही है किसान दाने-दाने को मोहताज हो रहा है लेकिन लापरवाह विद्युत अधिकारियों पर मुकदमा दर्ज करके उनकी गिरफ्तारी कराने का प्रयास अभी तक जनप्रतिनिधियों वा आला अधिकारियों ने नहीं किया है।

न्यूज झरोखा

निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 को संपन कराने के लिए प्रशासन ने की तैयारी

कौशाम्बी। जिले में नगर निकाय चुनाव के संबंध में डीएम सुजीत कुमार एवम एसपी बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने जानकारी दी है।डीएम सुजीत कुमार ने बताया कि नगर निकाय की अधिसूचना जारी कर दी गई है,कौशाम्बी जनपद में 4 मई को मतदान एवम 13 मई को मतगणना संपन्न होगी।डीएम ने बताया कि नगर निकाय चुनाव को संपन्न कराने के लिए मतदान कर्मियो की तैनाती की जा रही है,जोनल मजिस्ट्रेट सेक्टर मजिस्ट्रेट प्रभारी अधिकारी सहायक प्रभारी अधिकारी एवं आर०ओ० ए०आर०ओ० की नियुक्ति एवं प्रशिक्षण दिया जा चुका है। उन्होंने बताया कि नगर निकाय चुनाव के लिए 10 जोनल मजिस्ट्रेट, 32 सेक्टर मजिस्ट्रेट,32 प्रभारी अधिकारी,40 सहायक प्रभारी अधिकारी,20 निर्वाचन अधिकारी ,37 सहायक निर्वाचन अधिकारी की तैनाती की गई है।

डीएम व एसपी ने नगरीय निकाय सामान्य नामांकन कक्षों का किया निरीक्षण

कौशाम्बी। जिलाधिकारी/ जिला निर्वाचन अधिकारी सुजीत कुमार एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 के लिए जनपद की तीनों तहसीलों के नामांकन स्थलो का निरीक्षण कर जयजा लिया गया तथा तैयारिया पूर्ण करने को लेकर सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए । अपरान्ह 03 बजे कलेक्ट्रेट परिसर स्थित सम्राट उदयन सभागार में नगर निकाय निर्वाचन-2023 के सम्बन्ध में जनपद के अधिकारी कर्मचारी के साथ गोष्ठी की गयी गोष्ठी के दौरान नामांकन कक्षों में साफ-सफाई, पोताई, प्रकाश, सीसीटीवी कैमरा सहित सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को कराये जाने के लिए कहा है तथा सुरक्षा के दृष्टिगत बैरिकेटिंग भी कराये जाने के निर्देश दिए गये। जिलाधिकरी ने नामांकन प्रक्रिया की वीडियोग्राफी भी कराये जाने के निर्देश दिए है । इस दौरान जिलाधिकारी कौशाम्बी व पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी द्वारा चुनाव की तैयारियों के सम्बंध में स्थानीय प्रिन्ट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ प्रेस कॉन्फ्रेंस की गयी तथा इस संबंध में पुलिस अधीक्षक द्वारा बाइट दी गयी।

निरोधात्मक कार्यवाही मे 08 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना मंझनपुर से तीन थाना महेवाघाट से एक थाना सराय अकिल से एक थाना सैनी से तीन कुल 08 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय किया गया।

जिला अस्पताल में प्रसव के बाद प्रसूता की मौत

अखंड भारत संदेश

परिजनो ने नर्स पर रुपए मांगने का आरोप लगाकर किया हंगामा

कौशाम्बी। जिला अस्पताल में प्रसव के बाद महिला की मौत हो गई, जबकि बच्चा स्वस्थ बताया जा रहा है। महिला की मौत से आक्रोशित परिजनों ने अस्पताल के कर्मचारियों पर रुपए मांगने का आरोप लगाकर जमकर हंगामा किया,परिजनो ने मंझनपुर पुलिस को तहरीर देकर कानूनी कार्रवाई की मांग की,पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के बसोहनी गांव के रहने वाले दारा सिंह की पत्नी शोभा देवी गर्भवती थी,उसे शनिवार की रात 11 बजे प्रसव पीड़ा शुरू हुई तो परिजनों ने जिला अस्पताल मे प्रसव के लिए भर्ती कराया।पति दारा सिंह ने बताया कि रविवार की दोपहर अस्पताल की नर्स ने उसे बुलाकर 5 हजार की मांग की,रुपए दे पाने में असमर्थता जताने पर नर्स ने उसे प्राइवेट अस्पताल भेजने का दबाव बनाया, लेकिन वह प्रसव सरकारी अस्पताल में कराये जाने को लेकर अड़े रहे,रविवार को शाम को प्रसूता से बेटे को जन्म दिया,बच्चा स्वस्थ है लेकिन अस्पताल की नर्स ने देर बाद प्रसूता के मौत की जानकारी दी। दारा सिंह ने अस्पताल मे हंगामा कर नर्स पर रुपए की मांग पूरी न करने पर पत्नी को मौत के घाट उतारे जाने का आरोप लगाया है। काफी देर हंगामा करने के बाद पीड़ित ने स्थानीय थाना पुलिस को तहरीर देकर कानूनी कार्रवाई की मांग की। इंस्पेक्टर मंझनपुर संतोष शर्मा ने बताया कि अस्पताल में प्रसूता की मौत के संबंध में तहरीर पीड़ित पक्ष ने दी है। जांच के लिए शव को कब्जे मे लेकर पीएम की कार्रवाई कराई जा रही है। रिपोर्ट के आधार पर विधिक कार्रवाई की जाएगी।

चार वांछित अभियुक्त किये गये गिरफ्तार

कौशाम्बी जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा दो वांछित अभियुक्तों शंकर लाल सोनकर पुत्र दशरथ लाल सोनकर निवासी पानी टंकी नई बाजार भरवारी थाना कोखराज व राजा कश्यप पुत्र नरेश चन्द निवासी खलीलाबाद भरवारी थाना कोखराज के कब्जे से चोरी की 02 कुंतल सरिया(लोहे की) बरामद कर गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्तों को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना सराय अकिल पुलिस बल द्वारा दो वांछित अभियुक्तों बुद्धसेन पुत्र शिवकन्द निवासी ग्राम तारा का पुरवा थाना कौशाम्बी व चंद्रभान पुत्र सिपाही लाल निवासी कनैली थाना सराय अकिल को मवई तिराहा से दो बन्डल सरकारी स्कूल के अभिलेखों के साथ बरामद कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्तों को न्यायालय भेज दिया है।

प्रधान पति ने घर में घुसकर महिलाओं को पीटा, घर में लगाई आग

अखंड भारत संदेश

पुलिस अधीक्षक से मिलकर लगाई कार्रवाई की गुहार मुकदमा दर्ज किए जाने का आदेश

कौशाम्बी। दबंग प्रधान पति ने अपने परिवार के आधा दर्जन से अधिक लोगों के साथ घर में घुसकर महिला को उसके कुनबे के साथ पीट दिया। मामले में पीड़िता ने स्थानीय थाना पुलिस से शिकायत किया, जिस पर कार्रवाई नहीं होने पर पीड़िता ने सोमवार को पुलिस अधीक्षक कार्यालय में पहुंचकर न्याय की गुहार लगाते हुए शिकायती पत्र दिया है। मामले में पुलिस अधीक्षक ने जांच कर मुकदमा दर्ज किए जाने के आदेश दिए हैं। मिले शिकायती पत्र में पीड़िता लवलेश दुबे की पत्नी लीलावती ने आरोप लगाते हुए बताया कि रविवार को उसके पति घर से बाहर हुए गए हुए थे। तभी प्रधान पति अपने साथियों के साथ उसके घर में घुस आया और उसके साथ अभद्रता करने लगा पीड़िता ने बताया जब उसका बेटा बीच-बचाव के लिए आया तो इन लोगों ने उसके साथ भी मारपीट की पीड़िता का आरोप है कि दबंग प्रधान की स्थानीय थाने में अच्छी व्यक्ति है जिसके चलते मामले में पुलिस के द्वारा कार्रवाई नहीं किया जा रहा है। पुलिस अधीक्षक ने मामले में जांच कर मुकदमा कार्यवाही के आदेश जारी किया है।

वार्षिक उत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व कैबिनेट मंत्री डॉ. नरेन्द्र सिंह गौर व उपस्थित छात्र एवं अन्य

धूमधाम से मनाया गया मोहनलाल इंटर नेशनल कॉलेज में वार्षिकोत्सव

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। मोहनलाल इंटरनेशनल कॉलेज में सकाढा में वार्षिक उत्सव का कार्यक्रम बड़े धूमधाम से मनाया गया छठवी वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में छोटे-छोटे बच्चों ने जमकर धमाल मचाया है कार्यक्रम की शुरूआत ब्लॉक प्रमुख अरुवेन्द्र यादव ने दीप प्रज्वलित कर किया छोटे-छोटे बच्चों द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई कार्यक्रम में नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा नाटक सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि प्रस्तुत कर लोगों को भावविभोर कर दिया गया कार्यक्रम में पूर्व कैबिनेट मंत्री मुख्य अतिथि डॉ नरेंद्र कुमार सिंह गौड़ ने उपस्थित बच्चों का हौसला अफजाई करते हुए उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रम की सराहना की इलाके के गणमान्य लोग स्कूली छात्र शिक्षक अभिभावक अनिल कुमार सिंह हाईकोर्ट सहित तमाम लोग कार्यक्रम में मौजूद रहे।

57 लीटर शराब के साथ चार अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अवैध शराब के निर्माण एवं तस्करी के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान में विभिन्न थानो द्वारा कुल चार अभियुक्तों को गिरफ्तार कर करने से कुल 57 लीटर अवैध शराब बरामद की गयी। गिरफ्तार सभी अभियुक्तों के विरूद्ध सम्बन्धित थानो पर अभियोग पंजीकृत कर अभियुक्तो का चालान न्यायालय कर दिया है थाना पिपरी पुलिस बल द्वारा अभियुक्त सम्मू सरोज पुत्र बबलू सरोज निवासी औधन थाना पिपरी को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है। इसी प्रकार थाना संदीपनघाट पुलिस बल द्वारा अभियुक्त अमित कुमार पुत्र गुड्डू निवासी सेता थाना संदीपन घाट को गिरफ्तार कर कब्जे से 15 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है इसी प्रकार थाना कड़ाधाम पुलिस बल द्वारा अभियुक्त कमलेश सरोज पुत्र बेनी निवासी नामाशाही थाना कड़ाधाम को गिरफ्तार कर कब्जे से 20 लीटर अवैध शरण बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है इसी प्रकार थाना महेवाघाट पुलिस बल द्वारा अभियुक्त राजेश सरोज पुत्र स्व0 बचई सरोज निवासी टिकरा बाना महेवाघाट को गिरफ्तार कर कब्जे से 12 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

ओपन रैपिड शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन

10 जिलों के 110 खिलाड़ियों ने प्रतियोगिता में लिया भाग

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिला शतरंज स्पोर्ट्स एसोसिएशन कौशांबी के तत्वावधान में दूसरी कौशांबी ओपन रैपिड शतरंज प्रतियोगिता बालक एवम बालिका का आयोजन शेखर गार्डन काजीपुर चायल में 09 अप्रैल को आयोजित हुआ प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि विनोद केसरवानी और शेखर केसरवानी के द्वारा खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरण कर प्रतियोगिता का समापन किया गया है सचिव राघवेन्द्र शुक्ल ने बताया कि इस प्रतियोगिता में कुल 110 खिलाड़ियों ने दस जिले वाराणसी, कानपुर, लखनऊ, रेनूकूट , गोरखपुर, प्रयागराज आदि से प्रतिभाग किया यह प्रतियोगिता सात चक्र में की गई पहला स्थान प्रयागराज के स्पर्श यादव को मिला दूसरे स्थान पर प्रयागराज के गौरव निषाद रहे और तीसरे स्थान पर प्रयागराज के अर्नव अग्रवाल रहे चौथा स्थान पर प्रयागराज के फैडरिक जान को मिला पांचवें स्थान पर वाराणसी के माज इकबाल छठा स्थान पर प्रयागराज के रवि चोपड़ा को मिला सातवें स्थान पर हिन्डालिको नन्दन कुमार आठवें स्थान पर वाराणसी के नारायण यादव और नौवे स्थान पर प्रयागराज के हसनैन सिद्दीकी रहे दशवे स्थान पर प्रयागराज के मनीष कपूर ग्यारहवें स्थान पर प्रयागराज के प्रबल पाण्डेय और बारहवें स्थान पर वाराणसी के साहब अहमद फारूकी रहे। बालिका वर्ग में प्रथम स्थान पर प्रयागराज की संचिता यादव दूसरे स्थान पर प्रयागराज की आरोही यादव और तीसरे स्थान पर प्रयागराज की उन्नति सिंह रही आयु वर्ग 7 में पहला स्थान पर प्रयागराज के दक्षित सागर दूसरे स्थान पर गोरखपुर के आरयान्श और तीसरे स्थान पर प्रयागराज के शिवाय सिंह रहे आयु वर्ग 09 में पहले स्थान पर हिन्डालिको के वैभव यादव दूसरे स्थान पर प्रयागराज के मो इस्माइल सिद्दीकी और तीसरे स्थान पर कौशांबी के शिवाय गुप्ता रहे आयु वर्ग 11में पहले स्थान पर हिन्डालिको के दिक्क्षात कुमार दूसरे स्थान पर प्रयागराज के अनय दूबे तीसरे स्थान पर प्रयागराज के ओजस आन्नद रहे आयु वर्ग 13 में पहले स्थान पर प्रयागराज के सौर्य सिंह दूसरे स्थान पर हिन्डालिको के रचित कुमार तीसरे स्थान पर दर्शन जायसवाल रहे आयु वर्ग में 15 पहले स्थान पर वाराणसी के हरदेव दूसरे स्थान पर प्रयागराज के शिवान्श केसरवानी और तीसरे स्थान पर प्रयागराज के कार्तिक मौर्य रहे कौशांबी में पहले स्थान पर इन्द्र श्याम सिंह दूसरे स्थान पर प्रणव शुक्ल तीसरे स्थान पर अधिकांश केसरवानी चौथा स्थान पर ईशान सिंह रहे समापन समारोह में सचिव राघवेन्द्र, ज्वाइंट सेक्रेटरी राकेश कुमार, चन्द्र प्रकाश,गौरव गर्ग, प्रयागराज के सेक्रेटरी एनडी सिंह रवि चोपड़ा अश्विनी मिश्रा आदि लोग मौजूद रहे।

शतरंज खिलाड़ी

पुलिस ऑफिस कौशाम्बी में 02 दिवसीय साइबर जागरुकता कार्यशाला आयोजित

अखंड भारत संदेश

प्रसिद्ध साइबर सिक्योरिटी एक्सपर्ट डॉ0 रक्षित टण्डन द्वारा साइबर अपराध के तरीकों तथा उनसे बचने के उपायों के बारे में दी गई विस्तृत जानकारी, समस्त थानों के थाना प्रभारी, आईटी एक्ट के विवेचक व साइबर हेल्प डेस्क पर नियुक्त पुलिसकर्मियों को साइबर अपराधों से निपटने के बारे में किया गया प्रशिक्षित

साइबर अपराध में उपस्थित पुलिस गण

कौशाम्बी। साइबर अपराध से बचने के लिए पुलिस कार्यालय में दो दिवसीय साइबर जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया है जिसमें साइबर अपराध से बचाव के तमाम तरीके की जानकारी लोगों को दी गई है और अपराधों से निपटने के बारे में प्रशिक्षित किया गया है।

शासन द्वारा जारी आदेश-निदेर्शों के अनुपालन में अपर पुलिस महानिदेशक प्रयागराज, जोन प्रयागराज के निर्देशन में आज दिनांक 10 अप्रैल को पुलिस ऑफिस कौशाम्बी में 02 दिवसीय साइबर जागरूकता कार्यशाला का शुभारंभ पुलिस अधीक्षक कौशाम्बी बृजेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा किया गया जिसमें प्रसिद्ध साइबर सिक्योरिटी एक्सपर्ट डॉ0 रक्षित टण्डन द्वारा साइबर प्रशिक्षण के अन्तर्गत जनपद के समस्त थाना प्रभारी, आई एक्ट के विवेचक, क्राइम ब्रान्च, सर्विलांस सेल, एसओजी, जपनदीय साइबर सेल व समस्त थानों के साइबर हेल्प डेस्क के पुलिस कर्मियों तथा अन्य मौजूद पुलिस कर्मियों को अत्याधुनिक साइबर अपराध से बचाव व किसी साइबर फ्राड के मामले में अनावरण के गुण बताये गये वर्तमान में हो रहे साइबर अपराध जैसे एईपीएस फ्राड एटीएम क्लोनिंग फिसिंग विसिंग एपीके फाइल के बारे में बताया गया तथा इनसे बचाव के लिये अपने सोशल मीडिया एकाउंट पर 2स्टेप वेरिफिकेशन ऑन करना, अनावश्यक लिंक पर क्लिक न करना आदि सम्पूर्ण जनकारी होने पर ही उसको ओपेन करना आदि के बारे में लोगों को जानकारी दी गयी ओ.टी.पी. किसी व्यक्ति को साझा न करने, अनजान वीडियो कॉल रिसीव न करने, लॉटरी/ईनाम के कॉल, मैसेज के फ्राड से बचने, अनजान व्यक्ति को यूपीआई पिन न बताने, किसी अनजान व्यक्ति के कहने पर स्क्रीन शेयरिंग एप (जैसे एनी डेस्क, क्वीक सपोर्ट, टीमव्यूवर, स्क्रीन मिरर आदि) अपने फोन में कभी भी इंस्टाल न करने आदि जानकारी दी गयी साथ ही विवेचकों व साइबर हेल्प डेस्क कर्मियों को साइबर अपराधों के संबंध में आने वाली शिकायतों को साइबर हेल्प लाइन नम्बर 1930 तथा गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्रदान की गयी।

सार्वजनिक स्थान पर जुआ खेलते चार जुआरी गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कौशाम्बी पुलिस द्वारा चार अभियुक्तों अभिलाष पुत्र घनश्याम राम लखन पुत्र रामचन्द्र निवासीगण आमा कुआ थाना कौशाम्बी राम बाबू पुत्र गोरे लाल व लवकुश पुत्र पिताम्बर निगण बड़ा गढ़वा थाना कौशाम्बी को सार्वजनिक स्थान पर हार-जीत की बाजी लगाकर जुआ खेलते हुये गिरफ्तार कर कब्जे से 52 अदद तास के पत्ते व 1240 रुपए मालफड तथा जमातलासी के दौरान 900 रुपए बरामद कर कार्यवाही की गई **शराब के साथ गिरफ्तार** : थाना महेवाघाट पुलिस बल द्वारा अभियुक्त मनोज निषाद पुत्र रामचन्द्र निषाद निवासी नौबस्ता थाना महेवाघाट को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब बरामद कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

09 अभियुक्त गिरफ्तार : जनपद में अपराध के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना करारी से एक थाना मंझनपुर से दो थाना चरवा से एक थाना सरायअकिल से पांच कुल 09 अभियुक्तो को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय किया गया।

खुलेआम घूम रहे हत्यारोपी को 3 महीने बाद भी पुलिस नही कर सकी गिरफ्तार!

अखंड भारत संदेश

तीन माह पूर्व पश्चिम शरीरा थाना में तेरह नामजद के साथ एक सैकड़ा लोगों के खिलाफ दर्ज हुआ था मामला, पंचायत में सुनाया गया था तालिबानी सजा देने का फैसला पुलिस का सूचनातंत्र महिला की हत्या को रोकने में नहीं हुआ था सफल

कौशाम्बी। पहले प्रेम के झांसे में फंसाना फिर महिला की करोड़ो की संपत्ति हड़पना उसके बाद महिला पर धर्म परिवर्तन का दबाव डालना ना मानने पर भरी पंचायत में महिला को धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर करना और धर्म परिवर्तन में असफल रहने पर पंचायत के बीच तालिबानी फरमान सुनाते हुए महिला की हत्या कर लाश ठिकाने लगाए जाने के मामले में पश्चिम शरीरा पुलिस का रवैया ठीक नहीं है मामले में कई महीने बीत जाने के बाद हत्या में शामिल लोगों की गिरफ्तारी करने के बजाए थाना पुलिस महिला की हत्या में नामजद आरोपियों के घुटनों में गिर पड़ी है।

धर्म परिवर्तन नहीं करने पर में 3 माह पूर्व पश्चिम शरीरा क्षेत्र के असाढा गांव में एक महिला की हत्या कर दी गई थी। मामले में काफी हीला हवाली करने के बाद पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत किया था। जिसमें 13 नामजद लोगों के साथ सौ अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज हुआ था। मामले में मुख्य आरोपी को पुलिस ने एनकाउंटर में गिरफ्तार किया था, लेकिन उसके बाद से मामले में किसी प्रकार की गिरफ्तारी नहीं हुई। जिससे अब पूरे मामले के आरोपी हौसला बंद होकर खुलेआम घूम रहे हैं। पूरे मामले में थाना क्षेत्र में तैनात एक सिपाही पर शुरू से ही आरोप लगता रहा है कि वह आरोपियों के बचाव में पैरोकारी कर रहे हैं अब आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई नहीं होने पर भी सिपाही का नाम सामने आ रहा है जिससे जिले के हिंदुओं में रोष बढ रहा है। बताते चलें कि 3 माह पूर्व मऊ जनपद की रहने वाली चंदा देवी 32 वर्ष की हत्या थाना क्षेत्र के एक गांव में कर दी गई थी मामले में थाना क्षेत्र के मीरदाहन का पुरवा गांव के रहने वाले मोहम्मद आरिफ का नाम सामने आया था। मामले में पीड़िता की मां ने आरोप लगाया था कि उसकी बेटी की हत्या पंचायत में इस्लाम धर्म कबूल ना करने के चलते हुई थी। शुरू से ही मामले में पुलिस की भूमिका संदिग्ध नजर आ रही थी। पुलिस ने पूर्व में ही एक विज्ञप्ति को जारी कर के मामले में लव जिहाद की घटना को इनकार किया था तथा यह भी आरोप लगाया था कि पीड़िता की मौत इलाज के दौरान हुई थी। जबकि पोस्टमार्टम से यह खुलासा हुआ था कि चंदा देवी की मौत गला दबाकर की गई थी। वहीं दूसरी ओर पीड़िता की मां ने कहा है कि यदि 15 दिनों के अंदर आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होती तो वह लखनऊ पहुंचकर मुख्यमंत्री कार्यालय में धरना देकर अपनी बेटी को न्याय दिलाने की गुहार लगाएगी।

जन संपादकीय

शाह ने चीन को सख्त और साफ संदेश दे दिया

चीन को शायद पता नहीं है कि यह 1962 वाला भारत नहीं है। आज के भारत का सिद्धांत है कि कोई छेड़ेगा तो छोड़ेंगे नहीं, आज के भारत का सिद्धांत है कि कोई हमें आजमाने की कोशिश ना करे। अभी हाल ही में चीन ने अरुणाचल प्रदेश में कुछ नामों को बदलने की हिमाकत दिखाई तो आज आजाद भारत के इतिहास में पहली बार हुआ कि देश के गृह मंत्री अरुणाचल प्रदेश में भारत-चीन सीमा के एकदम नजदीक पहुँचे और चीन को साफ-साफ कह दिया कि वह समय चला गया, जब भारतीय भूमि पर कोई भी अतिक्रमण कर सकता था। अमित शाह ने सीमा के एकदम नजदीक से ऊँचे स्वर में स्पष्ट कहा कि आज सुई की नोंक के बराबर जमीन पर भी कोई कब्जा नहीं कर सकता। उम्मीद है कि अमित शाह की अरुणाचल प्रदेश यात्रा का विरोध कर रहे चीन ने भारत के गृह मंत्री का भाषण सुन लिया होगा और उनकी कही गयी बात को गाँठ बांध लिया होगा। भारत के गृह मंत्री का भाषण देश की अखंडता और सीमाओं की सुरक्षा के प्रति भारत सरकार के दृढ़ रुख का तो समर्थन करता ही है साथ ही देश की जनता को भी आश्वस्त करता है कि देश सही हाथों में है। देखा जाये तो पहले की सरकारों के दौरान सीमायी गांवों को उनके हाल पर छोड़ दिया गया था। यही नहीं, सेना को भी यह अपने आप ही देखना होता था कि चुनौतियों से जूझते हुए वह कैसे तैनाती वाले इलाकों तक पहुँचेगी। लेकिन यह नरेंद्र मोदी का भारत है। यहां विमर्श बदल गया है। अब सीमा के गांव आखिरी नहीं भारत के पहले गांव हैं। अब सेना को सिर्फ हथियारों से सुसज्जित नहीं किया जाता बल्कि उनकी तैनाती वाले इलाकों में ढाँचागत सुविधाएं बढ़ाई जाती हैं। हम आपको बता दें कि मोदी सरकार ने अरुणाचल में सड़क संपर्क के लिए विशेष रूप से 2500 करोड़ रुपये सहित 4800 करोड़ रुपये के केंद्रीय योगदान के साथ वाइब्रेंट विलेजेस प्रोग्राम को मंजूरी दी है। अमित शाह ने भारत-चीन सीमा से लगे किबिटू गांव में वाइब्रेंट विलेजेस प्रोग्राम की शुरूआत के साथ ही स्वर्ण जयंती सीमा प्रकाश कार्यक्रम के तहत निर्मित राज्य सरकार की नौ सूक्ष्म पनबिजली परियोजनाओं का उद्घाटन भी किया है। ये बिजली परियोजनाएं सीमावर्ती गांवों में रहने वाले लोगों को सशक्त बनाएंगी। सीमाई इलाकों में सुविधा बढ़ाने के लिए सरकार कितनी प्रयासरत है इसका एक उदाहरण हाल ही में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के अरुणाचल दौरे के दौरान भी सामने आया था जब उन्होंने एलएसी के पास एक पुल का उद्घाटन कर भारत की रक्षा तैयारियों को बल प्रदान किया तथा अपने संबोधन के माध्यम से चीन को कड़ा संदेश भी दिया। सियोम नदी पर बनाया गया पुल रणनीतिक रूप से भारत के लिए काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वास्तविक नियंत्रण रेखा के दूरदराज के क्षेत्रों में सैनिकों को तैनात करने में सहायक होगा। इसके अलावा रक्षा मंत्री ने सीमा सड़क संगठन द्वारा देश के सीमावर्ती इलाकों में निर्मित 28 मूल ढांचा परियोजनाएं भी राष्ट्र को समर्पित की थीं।

हम आपको बता दें कि चीन से चल रहे तनाव के बीच केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में भारत-चीन सीमा की सुरक्षा करने वाली भारत तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) की सात नयी बटालियन और एक क्षेत्रीय हेडक्वार्टर के गठन को भी मंजूरी प्रदान की थी। इन बटालियन के निरीक्षण के लिये एक अतिरिक्त क्षेत्रीय हेडक्वार्टर का गठन करने का फैसला भी मोदी सरकार ने किया है। इसके लिये 9400 पदों का सृजन किया जायेगा। सरकार ने बताया है कि यह कार्य वर्ष 2025-26 तक पूरा कर लिया जायेगा। इसमें कार्यालय, आवासीय पारिसर के निर्माण आदि कार्यों पर 1808 करोड़ रुपये का व्यय आयेगा। साथ ही वेतन, राशन आदि पर प्रति वर्ष लगभग 963 करोड़ रुपये का खर्च आयेगा।

क्या है वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम ?

यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है जिसके तहत उत्तरी सीमा से सटे अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों और केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के 19 जिलों के 46 ब्लॉक में 2,967 गांव की व्यापक विकास के लिए पहचान की गई है। पहले चरण के लिए अरुणाचल प्रदेश के 455 सहित 662 गांव की पहचान की गई है। हम आपको याद दिला दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पिछले साल अक्टूबर में उत्तराखंड में चीन सीमा के नजदीक आखिरी गांव माणा में जब गये थे तब उन्होंने कहा था कि सीमाओं पर बसे गांव को आखिरी गांव नहीं पहला गांव कहा जाना चाहिए। इन गांवों में बनने वाले उत्पादों की तारीफ करते हुए प्रधानमंत्री पर्यटकों से भी आग्रह करते रहे हैं कि वह जब भी कहीं घूमने जायें तो स्थानीय स्तर पर बनने वाले उत्पादों को अवश्य खरीदें। प्रधानमंत्री सीमा पर बसे गांवों के लोगों को देश का प्रहरी भी बताते रहे हैं। पिछले साल उन्होंने भाजपा राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक में भी पार्टी के लोगों का आह्वान किया था कि वह सीमाओं पर बसे गांवों में समय गुजारें। इसके बाद केंद्रीय मंत्रिमंडल ने देश के सामरिक महत्व के उत्तरी सीमावर्ती इलाकों के विकास के लिए पूरी तरह केंद्र सरकार के खर्चे पर आधारित वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम को मंजूरी प्रदान की जोकि सिर्फ सीमाओं की सुरक्षा को मजबूत नहीं करेगा बल्कि सीमाओं पर स्थित भारत के पहले गांवों और ग्रामवासियों की तकदीर भी बदल देगा। हम आपको बता दें कि सरकार का यह कदम देश की उत्तरी सीमा के सामरिक महत्व को ध्यान में रखते हुए काफी महत्वपूर्ण है। इससे इन सीमावर्ती गांवों में सुनिश्चित आजीविका मुहैया करायी जा सकेगी जिससे पलायन रोकने में मदद मिलेगी। इसके साथ ही सीमावर्ती क्षेत्रों की सुरक्षा को भी मजबूती मिलेगी। सरकारी बयान के अनुसार, इस कार्यक्रम से चार राज्यों एवं एक केंद्र शासित प्रदेश के 19 जिलों और 46 सीमावर्ती ब्लाकों में आजीविका के अवसर और आधारभूत ढांचे को मजबूती मिलेगी। इससे उत्तरी सीमावर्ती क्षेत्र में समावेशी विकास सुनिश्चित हो सकेगा। इस कार्यक्रम से यहां रहने वाले लोगों के लिये गुणवत्तापूर्ण अवसर प्राप्त हो सकेंगे।

आपसी जंग से चुनावी वर्ष में बैकफुट पर कांग्रेस

नीरज कुमार दुबे

कांग्रेस ने अपने पार्टी संगठन में नई जान फूंकने और राहुल गांधी को प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में पेश करने के इरादे से भारत जोड़ो यात्रा निकाली लेकिन दोनों ही उद्देश्यों को हासिल करने में वह विफल रही। प्रधानमंत्री पद की उम्मीदवारी को राहुल गांधी ने विदेशों में विवादित बयान देकर खुद नुकसान पहुँचाया तो कांग्रेस का बचा खुचा आधार खत्म करने में खुद कांग्रेसी जीतोड़ प्रयास कर रहे हैं। आजादी की लड़ाई का नेतृत्व करने वाली पार्टी आजादी के अमृत काल में कितनी विभाजित हो गयी है यह कांग्रेस की राज्य इकाइयों के अंदरूनी संघर्ष को देखते हुए समझा जा सकता है। यही नहीं, अपने गठबंधन साथियों को भी एकजुट रखने में कांग्रेस सफल नहीं हो पा रही है जिससे प्रश्न उठता है कि क्या इसी तरह से देश की सबसे पुरानी पार्टी भाजपा और मोदी सरकार को चुनौती दे पायेगी? कर्नाटक में इस समय विधानसभा चुनावों की प्रक्रिया चल रही है और इसी साल के अंत में राजस्थान और छत्तीसगढ़ में विधानसभा के चुनाव होने हैं। लेकिन इन तीनों ही राज्यों में पार्टी के नेता ही उसकी चुनावी संभावनाओं को नुकसान पहुँचाने में जुटे हैं।

बात राजस्थान की करें तो वहां पूर्व उपमुख्यमंत्री और लंबे समय से मुख्यमंत्री पद की चाहत मन में लेकर घूम रहे सचिन पायलट अब आर पार के मूड़ में आ गये हैं। हाल ही में उन्होंने पेपर लीक मामले और पुलवामा शहीदों की विधवाओं के धरने प्रदर्शन के मुद्दे पर अशोक गहलोत की सरकार को घेरा था। अब सचिन पायलट ने राज्य विधानसभा चुनाव से पहले गहलोत सरकार के खिलाफ नया मोर्चा खोलते हुए ऐलान किया है कि वह राज्य की पूर्ववर्ती भाजपा सरकार में कथित तौर पर हुए भ्रष्टाचार पर कार्रवाई की मांग को लेकर 11 अप्रैल को जयपुर में शहीद स्मारक पर एक दिन का अनशन करेंगे। उनका आरोप है कि उन्होंने भ्रष्टाचार मामलों की जांच के लिए मुख्यमंत्री को जो पत्र लिखे थे उस पर कार्रवाई नहीं हुई। इस धरने पर मुख्यमंत्री ने

फिलहाल तो कुछ नहीं कहा है लेकिन एक समय सचिन पायलट को निकम्मा बता चुके अशोक गहलोत तगड़ा पलटवार करने की तैयारी में हैं और इस काम में उन्हें पार्टी का समर्थन भी मिल रहा है। सचिन पायलट के मुख्यमंत्री पर आरोपों से जिस तरह कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने किनारा किया है वह दर्शा रहा है कि गहलोत वाकई राजनीति के जादूगर हैं। कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता पवन खेड़ा ने कहा है कि यह कहना ठीक नहीं है कि राजस्थान की पूर्ववर्ती भारतीय जनता पार्टी सरकार से जुड़े घोटालों की जांच नहीं हो रही है। वहीं राजस्थान के कांग्रेस प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा ने कहा है कि सचिन पायलट का इस तरीके से संवाददाता सम्मेलन करना उचित नहीं है और उन्हें पहले उनके समक्ष इस मुद्दे को उठाना चाहिए था। इसके अलावा, सचिन पायलट के हमले के बाद कांग्रेस ने गहलोत का समर्थन करते हुए कहा है कि राज्य सरकार शासन के मामले में प्रदेश को नेतृत्व की स्थिति में लायी है और वह अपनी उपलब्धियों के बल पर जनता से दोबारा जनादेश मांगेगी और साथ ही संगठन सामूहिक रूप से इसके लिए प्रयास करेगा।

छत्तीसगढ़

हम आपको यह भी बता दें कि इसी प्रकार के हालात छत्तीसगढ़ में भी देखने को मिल रहे हैं। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के प्रतिद्वंद्वी और राज्य सरकार में कैबिनेट मंत्री टीएस सिंहदेव ने आरोप लगाया है कि उन्हें अलग-थलग किया जा रहा है। हालांकि अभी पिछले सप्ताह ही उनकी दिल्ली में पार्टी आलाकमान से मुलाकात हुई है और उन्हें भूपेश बघेल के नेतृत्व में काम करते रहने के लिए मनाया गया है। लेकिन देखना होगा कि वह कब तक चुप रहते हैं। हम आपको याद दिला दें कि छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और मंत्री टीएस सिंहदेव पूर्व में अपने समर्थक विधायकों की दिल्ली में आलाकमान के समक्ष परेड करवा कर अपना शक्ति प्रदर्शन कर चुके हैं।

कर्नाटकः जहां तक चुनावी राज्य कर्नाटक की बात है तो वहां कांग्रेस की ओर से मुख्यमंत्री पद पाने के लिए पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डीके शिवकुमार के बीच जंग चल रही है।

> ऐसे ही हालात मध्य प्रदेश में देखने को मिले थे जब मुख्यमंत्री पद की लड़ाई में कमल नाथ से हारे ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपने समर्थक विधायकों के साथ भाजपा का दामन थाम कर कमल नाथ के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार को गिरा दिया था। कुछ इसी प्रकार के हालात महाराष्ट्र में भी देखने को मिल रहे हैं जहां पूर्व कैबिनेट मंत्री बाला साहेब थोराट ने पार्टी आलाकमान को पत्र लिख कर महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले की शिकायत की और उनके नेतृत्व में काम करने से इंकार कर दिया है

सिद्धारमैया इस चुनाव को अपना आखिरी चुनाव बताते हुए मुख्यमंत्री पद पाने के लिए कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे हैं तो वहीं डीके शिवकुमार के बारे में बताया जा रहा है कि उन्होंने दिल्ली में लॉबिंग करने वाले लोगों को अपने लिये काम पर लगा दिया है और मीडिया के एक वर्ग को भी अपने साथ मिला लिया है। हाल ही में सिद्धारमैया ने कहा भी था कि यदि कांग्रेस चुनाव जीती तो कर्नाटक का मुख्यमंत्री उन्हें ही बनायेगी। इस बयान पर विवाद हुआ तो सिद्धारमैया ने कह दिया कि उनके बयान को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया लेकिन इस बयान से वह सच सामने आ ही गया जिसको दबाने का कांग्रेस भरसक प्रयास कर रही थी।

सिद्धारमैया के बयान से खिन्नाये डीके शिवकुमार ने अब नया पैंतरा चलते हुए कह दिया है कि अगर विधानसभा चुनाव के बाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे कर्नाटक के मुख्यमंत्री बनते हैं तो वह उनके अधीन काम करने के लिए तैयार हैं। यह कह कर उन्होंने एक तरह से दर्शा दिया है कि सिद्धारमैया का नेतृत्व उन्हें स्वीकार नहीं है।

कांग्रेस की राज्य इकाइयों में ऐसा ही घमासान पंजाब में देखने को मिला था जब चुनावी वर्ष में तत्कालीन मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह और तत्कालीन पंजाब कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू आपस में भिड़ गये थे। नतीजा यह हुआ कि दोनों ही नेता अपना चुनाव तो हारे ही साथ ही कांग्रेस का पूरी तरह सफाया भी करा दिया। ऐसे ही हालात मध्य प्रदेश में देखने को मिले थे जब मुख्यमंत्री पद की लड़ाई में कमल नाथ से हारे ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपने समर्थक विधायकों के साथ भाजपा का दामन थाम कर कमल नाथ के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार को गिरा दिया था। कुछ इसी प्रकार के हालात महाराष्ट्र में भी देखने को मिल रहे हैं जहां पूर्व कैबिनेट मंत्री बाला साहेब थोराट ने पार्टी आलाकमान को पत्र लिख कर महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नाना पटोले की शिकायत की और उनके नेतृत्व में काम करने से इंकार कर दिया है। ठीक ऐसे ही हालात केरल में विधानसभा चुनावों के समय देखने को मिले थे जब मुख्यमंत्री पद की लड़ाई में कांग्रेस नेता आपस में ही ऐसे भिड़े थे कि कांग्रेस सत्ता में अपनी बारी होने के बावजूद सत्ता से दूर हो गयी। हम आपको बता दें कि केरल में काफी समय से एक बार वामदलों के नेतृत्व वाली और अगली बार कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार आती रही थीं लेकिन केरल कांग्रेस में मचे घमासान के चलते वामदलों ने सत्ता में वापसी कर इतिहास रच दिया था। उत्तराखंड में भी विधानसभा चुनावों के समय कांग्रेस की भीतरी लड़ाई पार्टी को सत्ता से दूर ले गयी। वर्ना इस पहाड़ी राज्य में भी जनता भाजपा और कांग्रेस को बारी-बारी से सत्ता सौंपती रही है।

रेपो दर पर आरबीआई ने साहसिक निर्णय लिया

प्रह्लाद सबनानी

भारतीय रुपया अंतरराष्ट्रीय बाजार में अब मजबूत हो रहा है। चूंकि विकसित देशों द्वारा, विशेष रूप से अमेरिका द्वारा ब्याज दरों में की जा रही वृद्धि के चलते कुछ समय पूर्व तक भारतीय रुपए पर, अमेरिकी डॉलर की तुलना में, दबाव दिखाई दे रहा था। पिछले एक वर्ष से भी अधिक समय से पूरे विश्व में लगभग सभी देश लगातार बढ़ती मुद्रा स्फीति की दर को नियंत्रित करने के उद्देश्य से ब्याज दरों में वृद्धि करते जा रहे हैं। अभी हाल ही में अमेरिका ने यूएस फेड दर में 25 आधार अंकों की एवं ब्रिटेन ने केंद्रीय ब्याज दर में 50 आधार अंकों की वृद्धि की है। यही स्थिति लगभग सभी विकसित देशों की है। इन देशों में हालांकि ब्याज दरों में लगातार वृद्धि करने से मुद्रा स्फीति पूर्णतः नियंत्रण में आती दिखाई नहीं दे रही है, हां कुछ देशों में मुद्रा स्फीति में कुछ कमी जरूर आई है। सामान्यतः विश्व के कई देश, विशेष रूप से विकसित देश, यदि ब्याज दरों में वृद्धि करते हैं तो अन्य देशों को अपनी मुद्रा के बाजार मूल्य को बचाने के उद्देश्य से ब्याज दरों में वृद्धि करना एक मजबूरी बन जाता है। परंतु, दिनांक 06 अप्रैल 2023 को सम्पन्न हुई भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति की बैठक में रेपो दर में वृद्धि नहीं करने का निर्णय लिया गया है, वैश्विक स्तर पर चल रही आर्थिक परिस्थितियों के बीच यह एक साहसिक निर्णय कहा जा सकता है। बल्कि आगे आने वाले समय में अब अन्य देश भी (विकसित देशों सहित) भारतीय रिजर्व बैंक के इस निर्णय का अनुसरण कर सकते हैं, ऐसी सम्भावना व्यक्त की जा रही है। एक तरह से भारत ने इस संदर्भ में अन्य देशों को राह ही दिखाई है। दरअसल, मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के लिए विकसित देशों द्वारा ब्याज दरों में लगातार वृद्धि करते जाना, अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों को विपरीत रूप से प्रभावित करता नजर आ रहा है, जबकि इससे मुद्रा स्फीति पर नियंत्रण होता दिखाई नहीं दे रहा है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं में अब पुराने सिद्धांत बोथरे साबित हो रहे हैं। और फिर, केवल मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के उद्देश्य से ब्याज दरों में लगातार वृद्धि करते जाना ताकि बाजार में वस्तुओं की मांग कम हो, एक नकारात्मक निर्णय है। इससे देश की अर्थव्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। उत्पादों की मांग कम होने से, कम्पनियों का उत्पादन कम होता है, देश में मंदी फैलने की सम्भावना बढ़ने लगती है, इससे बेरोजगारी बढ़ने का खतरा पैदा होने लगता है, सामान्य नागरिकों की ईएमआई में वृद्धि होने लगती है, आदि। अमेरिका में कई कम्पनियों ने इस माहौल में अपनी लाभप्रदता बनाए रखने के लिए 2 लाख से अधिक कर्मचारियों की छंटनी करने की घोषणा की है। किसी नागरिक को बेरोजगार कर देना एक अमानवीय कृत्य ही कहा जाएगा। और फिर, अमेरिका में ही इसी माहौल के बीच दो बड़े बैंक फैल हो गए हैं। यदि इस प्रकार की परिस्थितियां अन्य देशों में भी फैलती हैं तो पूरे विश्व में ही मंदी की स्थिति छा सकती है। मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करने के लिए मांग में कमी लाकर उत्पादन कम करने जैसे निर्णयों के स्थान पर आपूर्ति को बढ़ाए जाने जैसे सकारात्मक प्रयास किए जाने चाहिए। इससे उत्पादन बढ़ेगा, विकास की गति तेज होगी एवं रोजगार के और अधिक नए अवसर निर्मित होंगे। केंद्र सरकार एवं भारतीय रिजर्व बैंक ने अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाए रखने के उद्देश्य से सही समय पर सही निर्णय लिए हैं। हालांकि भारत में भी रेपो दर में मई 2022 के बाद से 250 आधार अंको की वृद्धि की गई है। परंतु, भारत में उत्पादों, विशेष रूप से खाद्य पदार्थों, की आपूर्ति को बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया गया है। भारत में मुद्रा स्फीति को आंकने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपभोक्ता मूल्य सूचकांक की टोकरी में खाद्य पदार्थों की उपस्थिति 40 प्रतिशत से अधिक है। खाद्य पदार्थों की मांग को ब्याज दरें बढ़ाकर नियंत्रित नहीं किया जा सकता है। हां, खाद्य पदार्थों की आपूर्ति बढ़ाकर इनकी कीमतों पर नियंत्रण जरूर रखा जा सकता है। इसी प्रकार की नीतियों का पालन भारत सरकार एवं भारतीय रिजर्व बैंक ने किया है। केंद्र सरकार द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक को यह निर्देश दिए गए हैं कि भारत में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित महंगाई की दर 4 प्रतिशत रहनी चाहिए। हां, विशेष परिस्थितियों में यह, इस दर से 2 प्रतिशत अधिक अथवा कम हो सकती है। इस प्रकार, भारत में मंहगाई की दर 2 से 6 प्रतिशत के बीच रह सकती है। कोरोना महामारी में बाद एवं रूस यूक्रेन युद्ध के चलते भारत में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित महंगाई की दर 7 प्रतिशत से अधिक हो गई थी। अतः भारतीय रिजर्व बैंक ने रेपो दर में पिछले एक वर्ष के दौरान 250 आधार अंकों की वृद्धि करते हुए इसे 6.50 प्रतिशत पर पहुंचा दिया है, इसी प्रकार अन्य कई निर्णय भी केंद्र सरकार द्वारा लिए गए हैं। इन निर्णयों के कारण भारत में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित मुद्रा स्फीति की दर अब घटती भी जा रही है। भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमान के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक आधारित महंगाई की दर घटकर 5.2 प्रतिशत हो जाएगी। जबकि थोक मूल्य सूचकांक आधारित महंगाई की दर फरवरी 2023 माह में घटकर 3.85 प्रतिशत तक नीचे आ चुकी है। दूसरे, भारत में ब्याज दरों को बढ़ने से रोकना इसलिए भी जरूरी है कि पिछले कुछ समय से आर्थिक गतिविधियों में आ रही तेजी के चलते बैंकों से ऋण सुविधाओं का उपयोग बहुत बढ़ रहा है। वित्तीय वर्ष 2022-23 में बैंकों के ऋण 15.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए 17.8 लाख करोड़ रुपए बढ़े हैं जबकि वित्तीय वर्ष 2021-22 में बैंकों के ऋणों में 9.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई थी। ब्याज दरों में वृद्धि होने से ऋण की लागत भी बढ़ती है जो अंततः उत्पादन की लागत को भी विपरीत रूप से प्रभावित करती है। अतः आर्थिक गतिविधियों में और अधिक तेजी लाने के लिए ब्याज की लागत को कम बनाए रखना आवश्यक है। तीसरे, भारतीय रुपया अंतरराष्ट्रीय बाजार में अब मजबूत हो रहा है। चूंकि विकसित देशों द्वारा, विशेष रूप से अमेरिका द्वारा ब्याज दरों में की जा रही वृद्धि के चलते कुछ समय पूर्व तक भारतीय रुपए पर, अमेरिकी डॉलर की तुलना में, दबाव दिखाई दे रहा था। अमेरिकी डॉलर की तुलना में भारतीय रुपए का मूल्य अंतरराष्ट्रीय बाजार में 83 रुपए प्रति डॉलर को भी पार कर गया था परंतु दिनांक 6 अप्रैल 2023 को यह सुधर कर 81.90 रुपए प्रति डॉलर हो गया है। डॉलर सूचकांक भी धीमे-धीमे निचले स्तर पर आ रहा है, यह कुछ समय पूर्व तक 122 के स्तर पर पहुंच गया था, जो दिनांक 6 अप्रैल 2023 को 101.89 के अपने निचले स्तर पर आ गया है। साथ ही, भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में भी पिछले लगातार दो सप्ताह से बहुत अच्छी वृद्धि दर्ज हुई है और यह 10 मार्च 2023 के स्तर 56,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर से बढ़कर दिनांक 24 मार्च 2023 को 57,800 करोड़ अमेरिकी डॉलर के स्तर पर पहुंच गया है। इस प्रकार, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत की स्थिति लगातार मजबूत हो रही है। अतः अब भारत को अमेरिकी ब्याज दरों का अनुसरण करने की आवश्यकता नहीं है। परंतु, अंतरराष्ट्रीय बाजार पर इस संदर्भ में नजर जरूर बनाए रखने की आवश्यकता बनी रहेगी। भारतीय रिजर्व बैंक ने वित्तीय वर्ष 2022-23 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 7 प्रतिशत की वृद्धि होने का संकेत दिया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों में सकल घरेलू उत्पाद में हो रही कमी के चलते भारत से निर्यात प्रभावित हो सकते हैं अतः भारत के विदेशी व्यापार पर वित्तीय वर्ष 2023-24 में कुछ विपरीत असर दिखाई दे सकता है। साथ ही, मौसम वैज्ञानिकों द्वारा किए गए आकलन के अनुसार भारत में इस वर्ष सामान्य से कम वर्ष हो सकती है, जिसका विपरीत प्रभाव विशेष रूप से भारत के कृषि क्षेत्र पर पड़ सकता है। अतः वित्तीय वर्ष 2023-24 में भारत के सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर 6.50 प्रतिशत रहने की सम्भावना व्यक्त की गई है। केंद्र सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 में अपने पूंजीगत व्यय में अतुलनीय वृद्धि का प्रावधान किया गया है। सरकार के पूंजीगत व्यय में वृद्धि के साथ साथ अब निजी क्षेत्र द्वारा भी अपने पूंजीगत व्यय में वृद्धि की स्पष्ट सम्भावना दिखाई दे रही हैं क्योंकि विनिर्माण के क्षेत्र में उत्पादन क्षमता का उपयोग 75 प्रतिशत को पार कर गया है।

सरकार पर हमला बोलने के लिए उद्योगपतियों पर क्यों साधा जाता है निशाना?

नीरज

सवाल शरद पवार और उन तमाम विपक्षी दलों के नेताओं से है कि क्यों सरकार पर हमला बोलने के लिए उद्योगपतियों पर निशाना साधा जाता है? राष्ट्र निर्माण में उद्योगपतियों का योगदान कम नहीं बल्कि इन हंगामा करने वाले नेताओं से ज्यादा ही है।

महाराष्ट्र की राजनीति के चाणक्य माने जाने वाले एनसीपी प्रमुख शरद पवार ने अडाणी मुद्दे पर केंद्र सरकार के पक्ष का समर्थन करते हुए कहा है कि जब सुप्रीम कोर्ट ने इस मुद्दे की जांच के लिए एक कमेटी बैठा दी है तो जेपीसी की मांग पर जोर नहीं देना चाहिए। उनके इस बयान के तमाम राजनीतिक मायने भी निकाले जा रहे हैं। लेकिन अपने आपको अनुभवी नेता कहलवाने वाले पवार ने यदि यह बयान कुछ समय पहले दिया होता और विपक्षी दलों को समझाया होता

तो संभवतः संसद सत्र का कीमती समय बर्बाद नहीं हुआ होता। पवार ने जेपीसी की जरूरत नहीं है, के अलावा यह भी कहा है कि एक जमाना ऐसा था जब सत्ताधारी पार्टी की आलोचना करनी होती थी तो हम टाटा-बिड़ला का नाम लेते थे। आजकल हम अंबानी-अडानी का नाम लेते हैं। यहां सवाल शरद पवार और उन तमाम विपक्षी दलों के नेताओं से है कि क्यों सरकार पर हमला बोलने के लिए उद्योगपतियों पर निशाना साधा जाता है? राष्ट्र निर्माण में उद्योगपतियों का योगदान कम नहीं बल्कि इन हंगामा करने वाले नेताओं से ज्यादा ही है। जब देश आजाद हुआ था तब यहां सुई भी नहीं बनती थी और आज हम हर चीज बना रहे हैं। यदि हम इस काबिल बने हैं तो इसका श्रेय निजी क्षेत्र को ही सर्वाधिक जाता है क्योंकि निवेश करने का जोखिम उद्योगपतियों ने ही उठाया। हमें एक बात और समझनी होगी कि उद्योगपति यदि पैसा लगायेगा तो वह चैरिटी के लिए तो लगायेगा नहीं, मुनाफा कमाने के उद्देश्य से ही लगायेगा। लेकिन हमें यह भी देखना चाहिए कि उसके मुनाफा कमाने के उद्देश्य से कितने लोगों को रोजगार मिलता है, कितने लोगों का घर चलता है। एक तरफ सरकारी नौकरियां कम होती जा रही हैं और यदि दूसरी तरफ हम निजी क्षेत्र का रास्ता रोकने लगेंगे तो नौकरियां देगा कौन? हिंडनबर्ग कौन है, कहां से आया, उसकी रिपोर्ट का आधार क्या था, यह जाने समझे बिना सभी अडाणी के पीछे पड़ गये। इस सबसे नुकसान क्या सिर्फ अडाणी का हुआ? नुकसान तो शेयरधारकों का भी हुआ। इसके अलावा हालिया विवाद के बाद अडाणी ने कई प्रोजेक्ट्स पर काम रोक दिया है। जाहिर है इससे निवेश और रोजगार के अवसर प्रभावित होंगे? इसके लिए जिम्मेदार कौन है? एक तरफ विपक्ष कहता है कि देश में बेरोजगारी बढ़ रही है और दूसरी तरफ हम कंपनियों और निवेशकों के इरादों पर पहले ही सवाल उठाते हुए उनकी राह में बाधा खड़ी करने लगते हैं जिससे रोजगार के जो अवसर पैदा होने वाले थे वह नहीं हो पाते।

विपक्ष को समझना होगा कि उसके हमले टाटा बिड़ला और अडानी अंबानी तो झेल जाएंगे लेकिन विपक्ष के उद्योग विरोधी आंदोलनों से अन्य निवेशक घबराएंगे या अपने इरादे बदलेंगे। इस सबका खामियाजा आखिरकार देश की अर्थव्यवस्था को ही भुगतना होगा।

पेंसिल और शार्पनर की प्रेमकथा

डॉ. सुरेश कुमार

बस्ते में एक पुरानी पेंसिल थी। उसका शार्पनर (छिलनी) से चक्कर था। दोनों का प्यार कई दिनों तक बदस्तूर चलता रहा। प्यार भी ऐसा जो सातवें आसमान पर हो। उनके इश्क-ए-खुमार का पता इसी से चल जाता कि पेंसिल से नोटबुक में लिखो तो इश्क-ए-खुमार शार्पनर पर चढ़ता। वहीं पेंसिल टूटने को होती तो शार्पनर का रो-रोकर बुरा हाल होता। शुरू शुरू में इश्क इतना कि दोनों एक-दूसरे के बिना रह नहीं सकते थे। दिखने में पेंसिल और शार्पनर अलग-अलग थे, लेकिन इश्क की खुश्बू दोनों की एक सी थी। यही किस्सा आगे भी चलता रहा। कोई दूसरा शार्पनर पेंसिल को छू लेता तो शार्पनर का हाल काटो तो खून नहीं वाला हो जाता। दोनों तीन महीने तक कभी बस्ते में पर तो कभी मेज पर साथ-साथ नजर आते। दोनों का रिश्ता इतना गहरा चुका था कि एक-दूसरे के बिना भविष्य की कल्पना नहीं कर सकते थे। अब भला समय भी कोई चीज होती है। आज जो अच्छा लगता है कल वही खराब लग सकता है और जो कल तक खराब लगता है वही अब अच्छा लग सकता है। पेंसिल पुरानी पड़ चुकी थी। इश्क की छिलन में वह घिस चुकी थी। अब बच्चा उसका कम ही इस्तेमाल करता था। एक दिन घर में नई पेंसिल आई और शार्पनर का आकर्षण उसके प्रति बढ़ने लगा। धीरे-धीरे उसने पुराने इश्क के खुमार को पुरानी पड़ चुकी पेंसिल के हवाले करते हुए नई पेंसिल के संग जोड़ी बना ली।

यह देख पुरानी पेंसिल बड़ी दुखी हुई। इससे पहले कि वह कुछ पूछे शार्पनर बोल पड़ा झ मैं जानता हूँ कि तुम यही जानना चाहती हो न कि मैं तुम्हें क्यों छोड़ रहा हूँ? तो सुनो झ जब एक दल कई साल पुराने अपने संगी दल को छोड़कर गठबंधन कर सकता है, कोई पुराना नेता मंत्री पद का लुत्फ उठाने के बाद नए दल में घुस सकता है, कोई दंपत्ति बाल-बच्चे होने के बावजूद किसी दूसरे पार्टनर के संग रह सकते हैं, तो मैं फिर भी शार्पनर हूँ। मैं जब चाहूँ तब, कहीं भी कभी भी किसी भी तरफ मुँह मार सकता हूँ। तुम बहुत किस्मत वाली हो कि हम दोनों की जोड़ी बहुत दिनों तक टिकी रही। वैसे भी घिसने वालों को टिकने की चाहत नहीं रखनी चाहिए। अलविदा मेरी प्रिया! मैं अब किसी और को चाहने लगा हूँ।

जिलाधिकारी अभिषेक आनंद की अध्यक्षता में निराश्रित गोवंश के संरक्षण तथा भरण पोषण को ले कर बैठक संपन्न

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज । जिलाधिकारी अभिषेक आनंद की अध्यक्षता में निराश्रित गोवंश के संरक्षण तथा भरण पोषण आदि की पाक्षिक समीक्षा बैठक जिला कलेक्ट्रेट के सभागार में संपन्न हुई। जिलाधिकारी ने सभी पशु चिकित्सक अधिकारी को निर्देशित किए की 1 हफ्ते के अंदर सभी गौशाला का निरीक्षण करें जिससे यह पता चल पाएगा कि कहां पर पानी, चारा, व बीमार पशुओं समस्या है को देख लेंगे कि किस चीज की कमी है, संबंधित खंड विकास अधिकारी से बताएं। उन्होंने कहा कि सरकार आप लोगों को इसलिए रखा है किसका

निरीक्षण करते रहें। जिलाधिकारी ने भूसा दान के संबंध में सभी पशु चिकित्सा अधिकारी से कहा कि किसानों से संपर्क करें जिससे कि अधिक से अधिक भूसा प्राप्त किया जा सके उन्होंने कहा कि बड़े किसान व छोटे किसान से भी संपर्क करें ।

भुगतान के संबंध में उन्होंने जानकारी ली तथा उन्होंने कहा कि जल्द से जल्द अवषेश भुगतान कराऐ। पशु टैकिग के संबंध में उन्होंने कहा कि इसमें ग्राम प्रधान व सचिव को अलर्ट रहने की जरूरत है जिससे कि पता चल सके पशु कहां से आए हैं। उन्होंने सभी खंड विकास अधिकारी व पशु चिकित्सा अधिकारी को निर्देशित किए कि गर्मी वढ गई है पशुओं की छाया के लिए शेड और बढ़ाएं उन्होंने यह भी कहा कि जो पानी की समस्या है उसको भी दूर कराएं। उन्होंने ने कहा कि पशुओं को किसी प्रकार की समस्या नहीं आनी चाहिए। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर, डीसी मनरेगा श्री धर्मजीत सिंह, व सभी पशु चिकित्सा अधिकारी व खंड विकास अधिकारी उपस्थित थे।

शहर में निर्धारित स्थानों पर ही पार्क करें टैम्पोः यातायात प्रभारी

वाहनों की जांचकर दिये कडे निर्देश

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर यातायात प्रभारी मनोज कुमार चैधरी की अगुवाई में यातायात पुलिस ने कर्वी शहर में वाहनों की जांच की। जांच दौरान स्कूली बसों में फर्स्ट एड बाक्स, विंडो जाली एवं फायर उपकरण देखे। निर्धारित क्षमता से ज्यादा बच्चों को बैठाने पर धीमी गति से वाहन चलाने के निर्देश दिये।

सोमवार को यातायात प्रभारी मनोज कुमार ने टैम्पो की जांचकर चालकों को कडे निर्देश दिये कि शहर में निर्धारित स्थानों पर ही वाहन पार्क करें। ओवरलोड सवारी न बैठायें। सवारी उतारते-चढाते समय वाहन को सडक किनारे खडा करें। दो व चारपहिया वाहन चालकों को हेलमेट/सीटबेल्ट लगाने, ओवर स्पीड न चलाने एवं हाई सिक्योरिटी नम्बर प्लेट लगवाने को कहा।

उन्होंने वाहन चालकों से कहा कि वाहन चलाते समय हेडफोन या मोबाइल फोन का प्रयोग न करें। जांच दौरान मालवाहक वाहनों की भी जांच की। यातायात नियमों के बारे में बताकर पालन करने के प्रति जागरूक किया। यातायात प्रभारी ने वाहन चालकों को शराब पीकर वाहन न चलाने के प्रति जागरूक किया। धीमी गति से वाहन चलाने के निर्देश दिये। जांच दौरान बिना ड्राइविंग लाइसेंस, तीन सवारी, बिना हेलमेट/सीटबेल्ट, ओवरस्पीड वाहनों का ई-पेंडिंग चालान किया।

कोचिंग कर रहे छात्र ने ट्रेन के सामने आकर आत्महत्या कर ली

नगीना। कोचिंग कर रहे छात्र ने ट्रेन के सामने आकर आत्महत्या कर ली। मृतक ने स्लीपर पर अपने परिजनों का मोबाइल नंबर लिखा था।

नगीना हरेवली मार्ग स्थित ग्राम कोपा थाना शेरकोट निवासी सुभाष 18 वर्षीय पुत्र सत्यम बीएससी का छात्र है और बिजनौर में कोचिंग कर रहा था। सत्यम एक हाथ से अपंग है। रविवार की दोपहर को गन्ना छोल रहे परिजनों से यह कहकर आया था कि वह जनवाणी केंद्र जा रहा है। सत्यम शाम 6 नगीना नेहतौर मार्ग रेलवे फाटक के पास पहुंचा जहां पहले उसने रेलवे लाइन की स्लीपर पर अपने परिजनों का मोबाइल नंबर लिखा।

डायनामाइट से मछली मार रहा युवक घायल, गम्भीर दशा में भर्ती

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। मछली मारने गए युवक का विस्फोटक पदार्थ से हाथ उड़ गया है। इससे वह गंभीर रूप से घायल होने पर मानिकपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। गंभीर दशा में उसे जिला अस्पताल रेफर किया गया है।

ये पूरा मामला मानिकपुर थाना क्षेत्र के नागर गांव का है। बताया गया कि युवक राकेश पुत्र छेदी निवासी नागर मछली का शिकार करने गांव के पास स्थिति नदी गया था। अपने साथ लिए विस्फोटक से मछली मारने को नदी में डायनामाइट फेंकने का प्रयास कर रहा था। इसी बीच डायनामाइट युवक के हाथ में ही फट गया। इससे वह बुरी तरह घायल हो गया।

जानकरीं मिलने पर परिजनों ने उसे आनन-फानन में मानिकपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। डॉक्टरों के प्राथमिक उपचार के बाद गंभीर दशा होने पर जिला अस्पताल रेफर किया है। घायल युवक राकेश ने बताया कि वह ग्वालियर में किसी कंपनी में काम कर रहा था। वहां से घर आते समय विस्फोटक अपने साथ ले आया था। इसका प्रयोग वह मछली मारने में कर रहा था। हाथ में ही विस्फोटक के फटने से वह गंभीर रूप से घायल हो गया है।

निकाय चुनाव में आरक्षण को लेकर कहां सो गया एससी नेतृत्व

नगीना। निकाय चुनाव को हरी झंडी मिलने वे पालिका अध्यक्ष पद के आरक्षण सूची जारी होने से जिले भर के एससी समाज को जोर का झटका धीरे से उस समय लगा जब 2022 में जारी अध्यक्ष पदों की सूची में किरतपुर और शेरकोट नगरपलिका को एससी के लिए आरक्षित किया गया और 2023 में जारी सूची में दोनों ही सीटों के आरक्षण को सिरे से खारिज कर दिया गया इसके अलावा कोई बदलाव नहीं हुआ जिसको लेकर एससी समाज में आक्रोश है।

चुनाव आयोग ने प्रदेश में निकाय चुनाव कराने के लिए 29 नवंबर 2022 को हरी झंडी देते हुए अध्यक्ष पद के आरक्षण की सूची जारी कर दी थी जारी सूची में जनपद बिजनौर के 12 नगरपालिका व 6 नगर पंचायत मैं से इस बार नगर पालिका किरतपुर व शेरकोट के अध्यक्ष पद की सीटें सुरक्षित कर दिया गया था जबकि नगीना नजीबाबाद समेत कई नगरपालिकाए जो बीते 20-20 सालों से पालिका अध्यक्ष पद अनारक्षित चले आ रहे थे एक बार फिर नगीना नजीबाबाद ज्यादातर पालिका अध्यक्ष पद अनारक्षित कर दिए जाने से बैकवर्ड वर्ग के पालिका अध्यक्ष पद के संभावित दावेदारों ने वे प्रदेश सरकार ने उच्च न्यायालय इलाहाबाद में चुनौती दी लेकिन न्यायालय का फैसला याचिकाकताओं के पक्ष में आने के कारण प्रदेश सरकार ने यह मामला सर्वोच्च न्यायालय सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी न्यायाधीशों ने सुनवाई करते हुए जारी निकाय अध्यक्ष पद की सूची पर रोक लगाते हुए नए सिरे से आदेश जारी कर पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन कर नई आरक्षण नीति प्रस्तुत करने के लिए कहा जिसके बाद पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन किया गया जिसका चेयरमैन रिटायर न्यायधीश जज को मनाया गया।

दोनों पक्षों के समक्ष खूब बहस हुई। बाद में आरक्षण के चेयरमैन जनपद बिजनौर के दौरे पर आए जिन्होंने स्वयं पहुंचे जहां से 27 मार्च को सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षण सूची को स्वीकृत कर प्रदेश सरकार को निकाय चुनाव कराने के 30 मार्च को हरी झंडी दे दी थी जिसके आधार पर प्रदेश शासन और चुनाव आयोग ने 30 मार्च के दिन ही निकाय चुनाव कराने के लिए पालिका अध्यक्ष पद के आरक्षण सूची जारी कर दी।

स्थानीय निकाय चुनाव को लेकर राज्य सरकार की आरक्षण संबंधी अध्यादेश समेत पिछड़ा वर्ग आयोग के चुनाव को चुनौती देने वाली एक याचिका उच्च न्यायालय इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ में दाखिल की गई है जिसकी 10 अप्रैल को सुनवाई होने है शुक्रवार को न्यायमूर्ति राजन राय वह मनीष कुमार के खंडपीठ में मुरादाबाद जिले के ठाकुरदरा नगर पंचायत सीट आरक्षित होने को लेकर याचिका सुहेल खान ने दायर की है। दायर याचिका में उत्तर प्रदेश राज्य स्थानीय निकाय समर्पित पिछड़ा वर्ग आयोग की रिपोर्ट को भी यह कहते हुए चुनौती दी गई है इसमें ओबीसी के राजनीतिक पिछड़ेपन का अध्ययन किया जाना चाहिए था, जो नहीं किया गया।

दलित समाज का नेतृत्व करने वाले सामाजिक और राजनीतिक संगठन के लोग अब कहां सो रहे हैं जो हर वक्त आरक्षण की बात करते नहीं थकते थे। अब उन्हें निकाय चुनाव में 29 नवंबर 2022 को पालिकाध्यक्ष पद के लिए

कानपुर : एक रात का रेट 9000, गोरखपुर से मंगाई दरोगा के लिए लड़कियां : जांच शुरू

कानपुर। यहां भ्रष्ट और अय्याश पुलिस वालों का आचरण कमिश्नरेट पुलिस के दामन पर दाग लगाने की कोशिश में सफल होता नजर आ रहा है।

इस आशय की पुष्टि तब होती नजर आई जब एक दरोगा का एक सेक्स वर्कर से की हुई चैटिंग वायरल हो गई। देर रात एक साथ कई वाट्सएप चैटिंग के स्क्रीन शाट्स प्रचलित भी हुए, जिसमें देह व्यापार को लेकर बातचीत हुई है।

चैटिंग स्क्रीनशॉट के मुताबिक इसमें एक दारोगा जी का भी जिक्र है, जिसमें संचालिका दावा कर रही है कि उसने दारोगा जी के लिए गोरखपुर से लड़कियां मंगवाई हैं। महकमे में चर्चा का विषय बने इस प्रचलित चैटिंग का संज्ञान लेते हुए पुलिस आयुक्त बीपी जोगदण्ड मामले की जांच भी करा रहे हैं।

कथित दरोगा और कॉल गर्ल के बीच बताई जाने वाली यह चैटिंग आज पूरे दिन

पुलिस महकमे में भी चर्चा में रही। इसमें कोई गौरव नाम का व्यक्ति किसी प्रीति नाम की महिला से बातचीत कर रहा है। प्रीति से वह अपने घर पर लड़कियां भेजने का अनुरोध करता है।

पांच हजार रुपये के लिए दो सहेली बनीं एक-दूसरे की जान की दुश्मन

हत्या या आत्महत्या

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। मऊ कस्बे में दो दिनों से घर से लापता किशोरी का यमुना नदी किनारे शव मिलने से क्षेत्र में सनसनी फैल गई। घटना स्थल पर एसपी वृन्दा शुक्ला अन्य अधिकारियों के साथ मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा है। परिजनों में कोहराम मच गया। ये मामला मऊ थाना क्षेत्र के कस्बे का है। दो दिन पहले मृतक किशोरी स्नेहा का विवाद उसकी सहेली गरिमा से लेनदेन को लेकर हुआ था। गरिमा ने मृतक किशोरी को पांच हजार रुपये उधार दिए थे। मृतक किशोरी पैसे नहीं लौटा रही थी। इस बात को लेकर मृतक किशोरी स्नेहा और गरिमा में विवाद हो गया। मृतक किशोरी स्नेहा की सहेली गरिमा ने मऊ थाने में स्नेहा के खिलाफ शिकायत की थी।

पुलिस ने दोनों पक्षों को बुलाकर गरिमा के एक हजार रुपये स्नेहा से दिलवाकर समझौता कराकर घर भेज दिया था।

मृतक स्नेहा इसके बाद घर से लापता हो गई। परिजन उसे लगातार ढूंढ रहे थे। कोई सुराग न मिलने पर परिजनों ने मऊ थाने में गुमशुदगी दर्ज कराई थी। दो दिनों बाद रविवार को स्नेहा का शव यमुना नदी के महिला घाट में

मिलने से परिजनों में कोहराम मच गया।

मृतक किशोरी की छोटी बहन नेहा त्रिपाठी ने बताया कि मृतक बहन और सहेली गरिमा से किसी बात को लेकर मारपीट हुई थी। गरिमा और उसके परिजनों ने घर आकर गाली-गलौज की थी। उनके विरोध पर वह लोग थाने जाकर तहरीर दी थी। पुलिस ने दोनों पक्षों के पिता को थाने में बैठाया था।

मृतक किशोरी ने पिता को छोड़ने की बात कही तो तैनात सिपाही ने मृतक किशोरी और सहेली की थप्पड़ों से पिटाई कर दी थी। बाद में समझौता कराकर घर भेज दिया था। उन्हें देख लेने और जान से मारने की धमकी मिली थी। बहन स्नेहा घर पहुंचते ही लापता हो गई। उसका शव मिला तो शरीर जला हुआ था। अंदर के कपड़े भी गायब हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे किसी ने उसके साथ गलत कर हत्या कर दी हो। फिलहाल सूचना पर पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा है। मामले की तफ्तीश जारी है। इस मामले में पुलिस अधीक्षक वृंदा शुक्ला ने बताया कि दो दिन पहले मृतक किशोरी और सहेली से लेनदेन को लेकर विवाद हुआ था। पुलिस ने दोनों में समझौता कराकर घर भेजा था। इसके बाद मृतक किशोरी के कहीं जाने की गुमशुदगी परिजनों ने थाने में दर्ज कराई थी। मृतक किशोरी को परिजन और पुलिस ढूंढ रही थी। रविवार को मृतक किशोरी का शव यमुना नदी किनारे पड़ा मिलने पर पोस्टमार्टम को भेजा गया है। उन्होंने बताया कि पीएम रिपोर्ट पर ही आगे कानूनी कार्रवाई की जाएगी। मृतक किशोरी की डेड बॉडी देखने से प्रतीत हो रहा है कि मृतक किशोरी ने जहरीला पदार्थ खाकर यमुना नदी में छलांग लगा दी है। इससे उसकी मृत्यु हुई है। पीएम रिपोर्ट से मृत्यु के कारणों का खुलासा होगा।

पीसीएस में चयनित योगेंद्र पटेल का सांसद ने किया अभिनंदन

प्रसिद्धपुर गांव का है योगेन्द्र

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। प्रसिद्धपुर गांव के होनहार योगेंद्र पटेल का पीसीएस में चयन होने पर बांदा-चित्रकूट सांसद आरके सिंह पटेल ने अपने आवास में फूलमाला पहनाकर स्वागत किया। आगे की तरक्की को शुभकामनाएं दी। कहा कि पीसीएस में चयन होने पर बधाई तो है ही आगे आईएएस की परीक्षा पास कर जिले का नाम रोशन करें। सोमवार को मुख्यालय स्थित बल्दाऊगंज आवास में सांसद आरके सिंह पटेल ने जिले के तीन होनहार छात्रों के पीसीएस की परीक्षा में सफलता मिलने पर खुशी जताई। बधाई देते हुए सांसद ने कहा कि ये बड़ी उपलब्धि है। पीसीएस अफसर बने योगेंद्र पटेल का अभिनंदन करते हुए सांसद ने कहा कि कड़ी मेहनत से ही सफलता मिलती है।

थोड़ी सी मेहनत और करके आईएएस की परीक्षा पास करे, ताकि जिले और परिवार का नाम देश भर में रोशन हो।

उल्लेखनीय है कि योगेंद्र पटेल को शासन ने खादी ग्राम उद्योग प्रबंधक पद पर नियुक्ति दी है। दिल्ली में रहकर पीसीएस की तैयारी की है। पहले प्रयास में ही उन्हें ये सफलता मिली है। योगेंद्र ने कहा कि वह आईएएस बनकर जिले का नाम रोशन करेंगे। 28 मई को आईएएस की परीक्षा है। जिसमें वह हिस्सा लेंगे। उन्होंने सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज से इंटर परीक्षा पास करने के बाद सिटी मॉडल इंटर कॉलेज कानपुर से पढ़ाई पूरी की है। इंजीनियरिंग कॉलेज से कंप्यूटर साइंस की डिग्री ली है। उन्होंने यही विषय लेकर पीसीएस की तैयारी दिल्ली में की है। वह तीन भाई हैं। बड़े भाई दिल्ली में वेटरनरी डॉक्टर हैं, छोटा भाई एनआईटी जालंधर से एमटेक कर रहा है। योगेंद्र पढ़ाई में बहुत ही परिश्रमी है। वह एसएससी परीक्षा पास करके असिस्टेंट कम्युनिकेशन ऑफिसर पद पर चयनित हुए थे। निरंतर कठिन परिश्रम ईमानदारी से कोई भी कार्य किया जाए तो सफलता मिलती है। इसी भावना से वह आगे आईएएस की तैयारी में जुटेंगे।

इस मौके पर उनके बाबा शिवसंपत्त सिंह, पिता धर्मराज सिंह, फूफा अशोक कुमार सिंह, वरिष्ठ भाजपा नेता शक्ति प्रताप सिंह, आशीष सिंह रघुवंशी, शंकर यादव आदि मौजूद रहे।

एसडीएम कार्यालय के बाहर आयोजित धरना दूसरे दिन भी जारी रहा

नगीना। ग्राम खिजरपुर जग्गू उर्फ जग्गू वाला में नगीना तहसील के कानूनगो नरेंद्र सिंह द्वारा 2014 में आवंटित पट्टों की भूमि की पैमायश सही तरीके से न करने के विरोध में भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक का एसडीएम कार्यालय के बाहर आयोजित धरना रविवार को दूसरे दिन भी जारी रहा।

भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक द्वारा आयोजित धरने का नेतृत्व कर रहे नगर उपाध्यक्ष केसर सुल्तान ने बताया कि तहसील क्षेत्र के ग्राम खिजरपुर जग्गू उर्फ जग्गूवाला में शनिवार को कानूनगो नरेंद्र सिंह ने ग्रामीणों के पट्टों की पैमायश की थी।धरने पर बैठे पीड़ित ग्रामीणों ने बताया कि प्रीतम सिंह,भोगेंद्र सिंह व कृष्णा देवी के पांच पांच बीघे तथा घनश्याम सिंह का छह बीघा व श्रीमती सर्वेश का साढ़े पांच बीघे के कृषि भूमि के पट्टे हैं।शनिवार को दोपहर एक बजे कानूनगो नरेंद्र सिंह ग्राम जग्गूवाला के मौजा अलीपुर पदार्थ में पट्टों की भूमि की पैमाइश करने पहुंचे।

पीड़ित ग्रामीणों का आरोप है कि कानूनगो नरेंद्र सिंह सतपाल पुत्र डालू,हिम्मत पुत्र शौनाथ,रामगोपाल पुत्र रामसरन,ओमप्रकाश पुत्र तेजा सिंह के पक्ष में नपाई कर दी।ग्रामीणों ने बताया कि जब उन्होंने कानूनगो नरेंद्र सिंह से सही तरीके से पैमाईश करने को कहा तो आरोप है कि कानूनगो बोले जमीन की नपती करानी है तो करा लो वरना जमीन छोड़ कर चले जाओ।पीड़ित ग्रामीणों ने इस बात से भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक के नगर अध्यक्ष कुंवर हर्षवर्धन सिंह को अवगत करवाया।

नगर अध्यक्ष कुंवर हर्षवर्धन सिंह के निर्देश पर उपाध्यक्ष केसर सुल्तान के नेतृत्व में शनिवार की शाम से नगीना के एसडीएम कार्यालय पर धरना शुरू कर दिया। धरने पर प्रीतम सिंह,भोगेंद्र सिंह,भोपाल सिंह,घनश्याम सिंह,श्रीमती सर्वेश,कोमल सिंह,चेतराम सिंह,श्रीमती कृष्णा देवी, राजीव चौधरी, दयाराम सैनी, शेख इंतजार नागेंद्र जाट, टिकेंद्र उर्फ शेट्टी, रामपाल सिंह आदि ग्रामीण बैठे हुए हैं।समाचार लिखे जाने तक रविवार को दूसरे दिन भी धरना जारी है।

न्यूज झरोखा

दम्पति के विवाद को पुलिस ने सुलझाया, आपसी तालमेल से रहने की दी सलाह

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर सामाजिक रिश्तों को बचाने को हो रहे प्रयास के क्रम में पुलिस कार्यालय स्थित परिवार परामर्श केन्द्र में पुलिस टीम ने दम्पति के विवाद को समाप्त कराकर सुलह कराई।

सोमवार को रैपुरा थाने के व्यास बन्ना गांव की नेहा तिवारी पुत्री चन्दन तिवारी ने एसपी को दिये पत्र में कहा कि पति, सास, ससुर एवं देवर आये दिन विवाद कर मारपीट व गाली-गलौज करते हैं। एसपी ने पत्र निस्तारण को प्रभारी परिवार परामर्श केन्द्र को भेजा। परिवार परामर्श केंद्र प्रभारी निरीक्षक श्रीमती रीता सिंह की टीम ने शिकायतकर्ता की बात को विस्तार से सुनकर दूसरे पक्ष को पुलिस कार्यालय बुलाया।

दोनो पक्षों को भविष्य में आपस में विवाद न करने तथा परिवारिक कर्तव्यों का पालन करने की राय दी गई। आपसी सुलह पर परिवार परामर्श केंद्र ने दोनो पक्षों को तालमेल से रहने एवं परिवारिक दायित्वों का सही ढंग से पालन करने की सलाह दी। पुलिस टीम में प्रभारी निरीक्षक रीता सिंह व महिला सिपाही दीक्षा यादव शामिल रहीं।

एसपी के निर्देश पर जिला बदर दबोचा

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर अपराधियों की धर-पकड अभियान के तहत मानिकपुर थानाध्यक्ष वीर प्रताप सिंह की अगुवाई में दरोगा बलदेव सिंह की टीम ने जिला बदर अपराधी को दबोचा है।

सोमवार को मानिकपुर थाने के दरोगा बलदेव सिंह पुलिस बल के साथ गश्त पर थे। मुखबिर से सूचना मिली कि जिला बदर बच्चू कोल पुत्र हीरालाल कोल निवासी चुरेहकेसरुआ अपने गांव में टहल रहा है। पुलिस ने मौके पर जाकर उसे दबोच लिया। वह जिलाधिकारी के जिला बदर के आदेश का उल्लंघन कर रहा था। उसके खिलाफ मानिकपुर थाने में मामला दर्जकर जेल भेजा है। टीम में दरोगा बलदेव सिंह, सिपाही शाकिर अली व चन्द्रप्रकाश शामिल रहे।

इसी क्रम में रैपुरा थाने के दरोगा सिद्धनाथ राय की टीम ने अमित सिंह पुत्र गिरेन्द्र सिंह निवासी गहोर खास को 20 क्वार्टर देशी शराब के साथ दबोचा है। उसके खिलाफ थाने में 60 आबकारी अधिनियम दर्ज किया है। मऊ थाने के दरोगा बालकिशुन की टीम ने राजाराम उर्फ लाला पुत्र सदरु निवासी अहिरी को 10 लीटर महुआ शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ मऊ थाने में 60 आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है।

अग्निकांड से 15 बीघा गेहूं की फसल हुई स्वाहा, नाला पडने से मौके पर नहीं पहुंच सकी दमकल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजापुर तहसील क्षेत्र के अतरसुई गांव के मजरा गोबरौल में एक ही परिवार के चार लोगों की 15 बीघा गेहूं की खड़ी फसल में अचानक आग लगने से पूरी फसल जलकर स्वाहा हो गई। अग्निकाण्ड की सूचना पर फायर ब्रिगेड की गाड़ी नाला पड़ने से मौके पर नहीं पहुंच सकी। आसपास लगे ट्यूबवेलों की मदद से आग पर ग्रामीणों के काबू पाने से पहले फसल जलकर राख हो गई। अन्य लोगों की फसलों को बचाने में कामयाबी मिली है। सोमवार को तकरीबन पूर्वान्ह 11 बजे अतरसुई गांव में मजरा गोबरौल में ये अग्निकांड हुआ। एसडीएम प्रमोद झां के निर्देश पर नायब तहसीलदार पुष्पेन्द्र सिंह गौतम ने क्षेत्रीय लेखपाल चन्द्रिका प्रसाद पाण्डेय को मौके पर भेजकर जली फसल का आंकलन करने के निर्देश दिये हैं। गोबरौल गांव के एक ही परिवार के जागेश्वर प्रसाद, भैयालाल, माता प्रसाद पुत्रगण बसन्त प्रसाद व पुष्पराज मिश्र पुत्र बालकृष्ण मिश्र की लगभग 15 बीघा गेहूं की खड़ी फसल में आग लगने से फसल स्वाहा हो गई। पीड़ित परिवार भुखमरी की कगार पर आ गया है। तेज हवाओं के कारण गेहूं की फसल पूरी तरह जल गई। मार्ग में नाला पड़ने से फायर ब्रिगेड की गाड़ी मौके पर नहीं पहुंच सकी।

आसपास के ट्यूबवेलों से आग पर काबू पाया जा सका। अग्निकांड पीड़ित जागेश्वर प्रसाद ने बताया कि रबी की फसल पूरी तरह अन्ना जानवरों की भेंट चढ़ चुकी है। परिवार में इतनी ही गेहूं की फसल जीविकोपार्जन को बची थी। वह भी दैवीय प्रकोप से जल गई है। प्रभारी निरीक्षक राजापुर भास्कर मिश्रा ने बताया कि मौके में पड़ताल से पता चला कि महुआ के फल बीनने वालों ने खरपतवार जलाया था। इससे आग लगने की आशंका जताई जा रही है। एसडीएम प्रमोद झां ने बताया कि प्रदेश सरकार की गाइडलाइन अनुसार अग्निकांड पीडितों को मदद दी जायेगी।

नेपाल में हेली एवरेस्ट का मालवाहक हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त, पायलट सुरक्षित

काठमांडू। हेली एवरेस्ट का मालवाहक हेलीकॉप्टर पश्चिमी नेपाल के धौलागिरी पर्वत श्रृंखला में रविवार को दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हेलीकॉप्टर को पायलट प्रिया अधिकारी उड़ा रही थीं, लेकिन उन्होंने दुर्घटना से पहले सुरक्षित निकासी कर ली। त्रिभुवन इंटरनेशनल एयरपोर्ट के प्रबंध निदेशक प्रताप बाबू तिवारी ने बताया कि आज सुबह 11 बजे इटालियन बेस कैंप से धवलागिरी बेस कैंप के लिए हेलीकॉप्टर से पायलट प्रिया अधिकारी ने उड़ान भरी, लेकिन कुछ देर बाद हेलीकॉप्टर से एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) का संपर्क टूट गया। इस बीच पायलट ने हेलीकॉप्टर से सुरक्षित निकासी कर ली, लेकिन हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। नेपाल के हिमालयी क्षेत्र में सामान की ढुलाई के लिए हेलीकॉप्टर का काफी इस्तेमाल होता है। नेपाल में अभी ट्रेकिंग और पर्वतारोहण का मौसम है, इसलिए अप्रैल से जुलाई तक हेलीकॉप्टर उड़ानें अधिक होती हैं। आज दुर्घटनाग्रस्त हुए हेलीकॉप्टर के बारे में विस्तृत विवरण की प्रतीक्षा है।

बैसाखी मनाने 2500 भारतीय सिख तीर्थयात्री पहुंचे पाकिस्तान

लाहौर। पाकिस्तान में 'बैसाखी मेला' उत्सव में भाग लेने के लिए करीब 2,500 सिख तीर्थयात्री भारत से वाघा सीमा के रास्ते यहां पहुंचे। इवैक्यूई ट्रस्ट प्रोपर्टी बोर्ड (ईटीपीबी) के प्रवक्ता आमिर हाशमी ने बताया कि सिख त्योहार बैसाखी के समारोह में भारत से 2,470 तीर्थयात्री प्रबंधक समिति शिरोमणि गुरुद्वारा के सरदार अमरजीत सिंह के नेतृत्व में यहां पहुंचे। ईटीपीबी पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के पवित्र स्थलों की देखभाल करता है।ईटीपीबी के अध्यक्ष हबीबुर रहमान गिलानी और पाकिस्तान सिख गुरुद्वारा बंधन समिति के प्रधान सरदार अमीर सिंह ने वाघा सीमा पर तीर्थयात्रियों की अगवानी की। हाशमी ने कहा कि सिख तीर्थयात्रियों को कड़ी सुरक्षा के बीच ननकाना साहिब भेजा गया जहां वे बाबा गुरु नानक की जन्मस्थली पर धार्मिक अनुष्ठान करेंगे। उन्होंने कहा कि मुख्य कार्यक्रम 14 अप्रैल को गुरुद्वारा पंजा साहिब हसन अब्दल में होगा, जिसमें विभिन्न राजनीतिक, धार्मिक और सिख नेता भाग लेंगे। उन्होंने कहा कि तीर्थयात्री 18 अप्रैल को भारत रवाना होने से पहले फारूकाबाद, करतारपुर, रोहरी साहिब, अमीनाबाद भी जाएंगे। गिलानी ने कहा कि सिख यात्रियों के लिए सभी प्रबंध बेहतरीन तरीके से किए गए हैं और उन्हें सुरक्षा, चिकित्सा और यात्रा व्यवस्था के साथ अन्य सभी प्रशासनिक व्यवस्थाएं मुहैया कराई जाएंगी। एसजीपीसी नेता अमरजीत सिंह भलीपुर ने कहा कि सिख तीर्थयात्रियों ने खुशी जाहिर की है। उन्होंने दोनों पक्षों के तीर्थयात्रियों के लिए वीजा में आसानी पर भी जोर दिया।

चीन ने दो कार्यकर्ताओं जू झियोंग और डिंग जियाक्सी को देशद्रोह के आरोप में भेजा जेल

बीजिंग। दो प्रमुख चीनी कार्यकर्ताओं को तीन साल से अधिक समय तक हिरासत में रखने के बाद देशद्रोह के आरोप में जेल में डाल दिया गया है। वकील डिंग जियाक्सी की पत्नी ने ट्वीट किया कि उन्हें शेडोंग प्रांत की एक अदालत ने 12 साल की जेल की सजा सुनाई है। उन्होंने कहा कि एक अन्य कार्यकर्ता कानूनी विद्वान जू झियोंग को 14 साल की जेल हुई थी। उनका बंद कमरे में परीक्षण जून 2022 में हुआ था। कानूनी कार्यकर्ताओं पर व्यापक कार्रवाई के तहत उन्हें 2019 और 2020 में अलग-अलग हिरासत में लिया गया था। ह्यूमन राइट्स वॉच के प्रवक्ता ने उनके दोषसिद्धि को क्रूर और हास्यास्पद करार देते हुए उनकी सजा को तुरंत रद्द करने का आह्वान किया। 2010 में डिंग और जू ने नागरिक अधिकारों और सरकारी पारदर्शिता के लिए अभियान चलते हुए नए नागरिक आंदोलन की सह-स्थापना की थी। इस जोड़ी को पहली बार 2013 में बीजिंग में प्रवासी श्रमिकों के लिए समान सामाजिक और शैक्षिक लाभ के लिए बुलाए गए विरोध प्रदर्शनों में उनकी भूमिका के लिए गिरफ्तार किया गया था।बीजिंग यूनिवर्सिटी ऑफ़ पोस्ट एंड टेलीकम्युनिकेशंस में 51 वर्षीय पूर्व व्याख्याता जू ने भी आरोप लगाया कि उन्हें प्रताड़ित किया गया था। उन्होंने 2020 में बीबीसी चाइनीज़ से कहा था कि चीन में राजनीति पर खुलकर चर्चा करने की जगह नहीं है। यदि पार्टी के सदस्य राजनीति पर चर्चा करते हैं, तो उन पर सम्मान की कमी का आरोप लगाया जाता है। डिंग ने एक अलग बयान में कहा कि चीनी लोग अभी भी राजनीतिक उत्पीड़न, आर्थिक नियंत्रण और वैचारिक दासता की स्थिति में रह रहे हैं।

चीन ने ताइवान को घेरा, शुरू किया कड़ी चेतावनी देता सैन्य अभ्यास

ताइपे/ बीजिंग। ताइवान की राष्ट्रपति साई इंग वेन की अमेरिकी यात्रा पूरी होते ही चीन ने ताइवान को तेवर दिखाना शुरू कर दिया है। चीन ने घातक युद्धक हथियारों के साथ ताइवान को घेरकर तीन दिवसीय सैन्य अभ्यास शुरू किया है। चीन ने इस सैन्य अभ्यास को 'कड़ी चेतावनी' बताया है।

चीन और ताइवान के बीच चल रहे तनाव को इस सैन्य अभ्यास ने और बढ़ा दिया है। चीन की सेना सैन्य अभ्यास के जरियेताइवान को घेरने का पूर्वाभ्यास कर रही है। चीन ने कहा है तीन दिन के इस पूर्वाभ्यास में ताइवान के चारों ओर गश्त लगाकर घेरा जाएगा। चीन की सेना ने ताइवान के चारों ओर लंबी दूरी के रॉकेट, तोप, ड्रेस्ट्रॉयर्स, मिसाइल बोट्स, फाइटर जेट्स, बॉम्बर्स, जैमर और ईंधन भरने वाले सभी तरह के उपकरणों को तैनात कर दिया है।

ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने कहा है कि चीन के 71 सैन्य विमानों और नौ जहाजों ने दोनों देशों के बीच अनौपचारिक बंटवारा बताने वाली लाइन ताइवान स्ट्रेट मेडियन लाइन को पार किया है। चीन की नौसेना के एक जहाज ने डेक से एक राउंड फायर भी किया। यह फायरिंग उस समय हुई जब चीन का यह जहाज ताइवान के सबसे करीब पिंग्टन द्वीप के पास गुजर रहा था। ताइवान ने कहा कि चीन ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र की शांति और स्थिरता का गंभीर उल्लंघन किया है। उसकी इस हरकत से अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा और अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। ताइवान ने अन्य देशों से चीन की इन गतिविधियों का विरोध करने का आग्रह किया है।

कर्णाली प्रांत में यूएमएल मंत्रियों का इस्तीफा, बागमती सरकार में नेपाली कांग्रेस बनी सहभागी

काठमांडू। नेपाल में सत्ता संतुलन में बदलाव का असर केंद्र और प्रांतीय सरकारों पर भी दिखने लगा है। इस वजह से प्रांतों में भी समीकरण बदले हैं। कर्णाली राज्य सरकार में शामिल केपी शर्मा ओली के नेतृत्व वाली सीपीएन (यूएमएल) के तीन मंत्रियों ने इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने अपना इस्तीफा मुख्यमंत्री राजकुमार शर्मा को सौंपा।

इसी तरह नेपाली कांग्रेस ने नेपाल के बागमती प्रांत सरकार में सहभागी हुई है। कांग्रेस के दोनों मंत्रियों ने आज शपथ ली।

नेपाल के सात प्रांतों में से चार प्रांतों में केंद्र के प्रभाव से समीकरण बदल गए हैं। बाकी तीन प्रांतों में जल्द ही बदलाव के संकेत दिख रहे हैं। जब पुष्प कमल दहल के नेतृत्व वाली नई सरकार का गठन हुआ, तो यूएमएल ने इसका समर्थन किया। राष्ट्रपति चुनाव के दौरान, यूएमएल ने प्रधानमंत्री प्रचंड का समर्थन छोड़ दिया और सरकार से अपना समर्थन भी वापस ले लिया। समर्थन वापसी के बाद से समीकरण भी बदल गए हैं।

कर्णाली राज्य सरकार में शामिल केपी शर्मा ओली के नेतृत्व वाली सीपीएन (यूएमएल) के तीन मंत्रियों ने इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने अपना इस्तीफा मुख्यमंत्री राजकुमार शर्मा को सौंपा।

नेपाल में संघ और राज्य के चुनाव पिछले साल 20 नवंबर, 2022 को हुए थे। उस समय से लेकर अप्रैल तक दो बार सत्ता के समीकरण बदले जा चुके हैं।

नेपाल में स्वास्थ्य मंत्री बनने के लिए दो करोड़ की मांग वाला आरएसपी सांसद का ऑडियो वायरल

काठमांडू। नेपाल की चौथी सबसे बड़ी राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) के सांसद ढाकाराम श्रेष्ठ का एक ऑडियो वायरल हुआ है, जिसमें वह हिंदू राष्ट्र अभियान चलाने के लिए सुर्खियों में आए दुर्गा परसाई से दो करोड़ रुपये मांग रहे हैं, ताकि वह यह पैसा पार्टी में देकर स्वास्थ्य मंत्री का पद हासिल कर सकें। पार्टी फंड न देने की वजह से ही उन्हें नेपाल सरकार में स्वास्थ्य मंत्री नहीं बनाया गया।

दरअसल, पिछले साल नवम्बर में हुए संसदीय चुनाव के बाद पुष्प कमल दहल को 25 दिसंबर को तीसरी बार प्रधान मंत्री नियुक्त किया गया था। उन्होंने 10 जनवरी को सदन में विश्वास मत हासिल किया, जिसके बाद वर्तमान 270 सदस्यों में से 268 ने उनके पक्ष में मतदान किया। पुष्प कमल दहल के प्रधानमंत्री

बनते ही आरएसपी में मंत्री बनने की होड़ मच गई। उस समय आरएसपी के सांसद ढाकाराम श्रेष्ठ सरकार में स्वास्थ्य मंत्री बनने की कोशिश कर रहे थे। हालांकि, आरएसपी को सरकार में उप प्रधानमंत्री समेत सिर्फ तीन मंत्री पद मिले, लेकिन श्रेष्ठ को कुछ नहीं मिला।अब एक ऑडियो वायरल हुआ है, जिसमें सांसद ढाकाराम श्रेष्ठ हिंदू राष्ट्र अभियान चलाने के लिए सुर्खियों में आए दुर्गा परसाई से दो करोड़ रुपये मांग रहे हैं। ऑडियो में सांसद श्रेष्ठ यह कहते हुए सुनाई दे रहे हैं कि वह स्वास्थ्य मंत्री बनना चाहते हैं और इसके लिए उनके पार्टी को दो करोड़ रुपये देने होंगे। ऑडियो में श्रेष्ठ परसाई से दो करोड़ रुपये मांगते हुए सुनाई दे रहे हैं। ऑडियो में उन्होंने कहा कि पार्टी फंड में दो करोड़ दिए जाने पर ही वे स्वास्थ्य मंत्री बन सकते हैं। नेपाल की 03 संसदीय सीटों पर 23 अप्रैल को उपचुनाव होने वाला है, जिसमें आरएसपी के तीन उम्मीदवार खड़े हैं। चितवन-2 सीट से अध्यक्ष रवि लामिछाने, बारा-2 से नेपाल पुलिस के पूर्व डीआईजी रमेश खरेल और तनहुं-1 सीट से अर्थशास्त्री डा. स्वर्णिम वाग्ले चुनाव मैदान में हैं। ताजा ऑडियो वायरल होने से इसका असर उपचुनाव पर पड़ने की संभावना जताई जा रही है।

फ्रांस में विस्फोट के बाद इमारत ढहने से छह घायल, राहत बचाव कार्य शुरू

पेरिस। फ्रांस के मार्सिले में विस्फोट के बाद चार मंजिला इमारत ढहने से छह लोग घायल हो गए। हादसे के बाद राहत बचाव कार्य शुरू कर दिया गया है। इमारत ढहने वाली जगह पर आग लग गई है, जिसे बुझाने का प्रयास किया जा रहा है। विस्फोट के कारणों का अभी पता नहीं चल पाया है।

मेयर बेनोइट पायन ने बताया कि इमारत ढहने के बाद आग लग गई, जिससे बचाव कार्य एवं तलाशी अभियान में मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। पास की दो इमारतों को भी आंशिक नुकसान हुआ है। दमकल कर्मियों ने आग पर काबू पाने के साथ 80 लोगों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया है। इस हादसे के बाद से आंतरिक मंत्री गेराल्ड डर्मैनिन घटनास्थल पर मौजूद है। आसपास की इमारतों में 30 से अधिक निवासी प्रभावित हुए, जबकि पांच घायल हुए हैं। क्षेत्रीय प्रीफेक्ट मिरमांड के मुताबिक माना जा रहा है कि विस्फोट के कारण इमारत ढही होगी। इससे पहले नवंबर, 2018 में मार्सिले में ऐसा ही बड़ा हादसा हुआ था, जब नोआइल्स में दो जर्जर इमारतों में आग लग गई, जिससे आठ लोगों की मौत हो गई थी।

पीएमएल-एन के वरीष्ठ नेता ने अक्तूबर में आम चुनाव कराने की मांग की, पहले मई माह में था प्रस्तावित

इस्लामाबाद। पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के वरिष्ठ नेता और संघीय योजना मंत्री अहसान इकबाल ने कहा कि अक्टूबर 2023 में पूरे पाकिस्तान में एक साथ आम चुनाव होने चाहिए। पाकिस्तान डेमोक्रेटिक मूवमेंट (पीडीएम) के नेतृत्व वाली सरकार इस साल अगस्त में अपना पांच साल का संवैधानिक कार्यकाल पूरा करेगी। पीएमएल-एन नेता ने नरोवाल में एक समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि देश में संघीय और प्रांतीय चुनाव एक ही समय में होने चाहिए। उन्होंने कहा कि पंजाब में समय से पहले चुनाव होने से दिक्कतें आएंगी और यह फेडरेशन को कमजोर करने के बराबर होगा, क्योंकि देश संवैधानिक और राजनीतिक संकट का सामना कर रहा है। संघीय मंत्री ने कहा कि पीटीआई के अध्यक्ष इमरान खान अराजकता के प्रतीक बन गए हैं और उन्होंने देश को विनाश की ओर धकेल दिया है।

अक्तूबर में होंगे चुनाव

पाकिस्तानी मीडिया के मुताबिक, पाकिस्तान चुनाव आयोग (ईसीपी) ने बुधवार को घोषणा की

कि खैबर पख्तूनख्वा में चुनाव 8 अक्टूबर को होंगे, उसी तारीख को पंजाब में चुनाव होंगे। इससे पहले खैबर पख्तूनख्वा के गवर्नर ने चुनाव की तारीख 28 मई प्रस्तावित की थी। सुरक्षा चिंताओं का हवाला देते हुए, उन्होंने बाद में चुनाव आयोग से 8 अक्टूबर को चुनाव कराने की मांग की।

Haiti में गिरोह ने घात लगाकर तीन पुलिस कर्मियों की हत्या की

सैन जुआन। हैती की राजधानी के पास एक गिरोह ने घात लगाकर रविवार को तीन पुलिस कर्मियों की हत्या कर दी। अधिकारियों के मुताबिक'ती मकाक÷नामक गिरोह ने देश की राजधानी पोर्ट-औ-प्रिंस के थॉमसिन इलाके में तीन पुलिस कर्मियों की घात लगाकर हत्या कर दी। 'नेशनल यूनियन ऑफ हैतियन पुलिस ऑफिसर्स' के मुताबिक, हमले में बचे एक अधिकारी ने इन हत्याओं के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई है।अधिकारियों के अनुसार देश में पुलिस विभाग संसाधनों और कोष की कमी से जूझ रहा है और इस साल तकरीबन दो दर्जन पुलिस

कर्मी अपनी जान गंवा चुके हैं। हैती के प्रधानमंत्री एरियल हेनरी ने पुलिस कर्मियों की हत्याओं की निंदा की है और संवेदनाएं व्यक्त की हैं। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार सुरक्षा और स्थिरता का माहौल बनाने के लिए हर संभव कदम उठा रही है। क्षेत्र पर अधिकार को लेकर गिरोह की लड़ाई में अबतक कम से कम 21 पुलिस कर्मियों की हत्या की जा चुकी है।

एक बार फिर इमरान ने भारत की सराहना की, बोले- हम भी उनकी तरह सस्ता रूसी कच्चा तेल हासिल करना चाहते थे

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान खान ने कई मौकों पर भारत की विदेश नीति की प्रशंसा की है इसको लेकर उन्होंने काफी आलोचना झेली। वहीं एक बार फिर पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के प्रमुख इमरान खान ने भारत की विदेश नीति की सराहना की और कहा कि इस्लामाबाद भारत की सबसे खराब आर्थिक संकट से जूझ रहा है और इमरान खान ने इस पर अफसोस जताते हुए कहा

तेल खरीदा। उन्होंने आगे कहा कि हमारी सरकार एक स्वतंत्र विदेश नीति के माध्यम से इसे हासिल करने की कोशिश कर रही थी।

मास्को का दौरा करने वाले पहले पाकिस्तानी पीएम थे इमरान खान

पाकिस्तान अब तक के भारत ने अमेरिकी दबाव का सामना किया और अपने लोगों की सुविधा के लिए रूस से सस्ता कि उनका देश रूसी कच्चे तेल को रियायती दर पर खरीद सकता है, जो कि यूक्रेन युद्ध के बावजूद भारत को दे रहा है। यह याद रखना भी महत्वपूर्ण है कि पिछले साल संघर्ष शुरू होने के दिन वह रूस में थे। उन्होंने क्लिप में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ अपनी मुलाकात का जिक्र किया। वहीं इमरान खान पिछले 23 वर्षों में मास्को का दौरा करने वाले पहले पाकिस्तानी पीएम थे।

नवाज पर अरबों की संपत्ति

उन्होंने सितंबर 2022 में एक सार्वजनिक सभा में कहा था कि दुनिया में नवाज के अलावा किसी अन्य नेता के पास अरबों की संपत्ति नहीं है।

मुझे एक ऐसे देश के बारे में बताएं जिसके प्रधानमंत्री या नेता के पास देश के बाहर अरबों की संपत्ति है। यहां तक कि हमारे पड़ोसी देश में भी पीएम मोदी के पास भारत के बाहर कितनी संपत्ति है? इससे पहले मई 2022 में, खान ने संयुक्त राज्य अमेरिका के दबाव के बावजूद रूस से सस्ते तेल खरीदने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फैसले की सराहना की थी।

दुनिया के सबसे पुराने महाबोधि वृक्ष के लिए खतरा बना चीनी पावर प्लांट, बच्चों के लिए भी हानिकारक

लाहौर। श्रीलंका के नोरोचचोलाई में चीन के बनाए एक पावर प्लांट से निकल रहे जहरीले एसिड की वजह से दुनिया का सबसे पुराना पेड़, (महाबोधि वृक्ष) का अस्तित्व खतरे में है। इस जहरीले एसिड के वातावरण में घुलने से बच्चों में कई तरह के चर्म रोग हो रहे हैं।

कोलंबो गजट की रिपोर्ट के मुताबिक, पर्यावरणविदों ने इलाके का सर्वे कर पता लगाया है कि पावर प्लांट से निकलने वाला जहरीला धुआं अनुराधापुरा में महाबोधि वृक्ष तक पहुंच रहा है। वहीं, पावर प्लांट के आसपास के पेड़ों के पत्ते जहरीले धुएं से पीले पड़ गए हैं।

नोरोचचोलाई स्थित इस पावर प्लांट का निर्माण चीनी कर्ज से चीनी कंपनी ने किया था। संचालन में भी चीन की अहम भूमिका है। 900 मेगावाट का यह प्लांट न केवल तय मानक से ज्यादा उत्सर्जन कर रहा है, बल्कि

प्लांट से निकलने वाले अवशेष फ्लाई ऐश (धुएं के साथ उड़ने वाली राख) और बॉटम ऐश (भारी राख) को एक खुले गड्ढे में स्टोर किया जाता है। हवा के साथ यह धुएं में मिलकर यह जहरीली राख इलाके में नुकसान पहुंचा रही है।

पेड़ के पत्ते पीले पड़े जहरीली गैस से बच्चों में चर्म रोग की भी समस्या

चीन की सिनोपेक करेगी निवेश...श्रीलंका के राष्ट्रपति की मीडिया डिविजन (पीएमडी) के मुताबिक, चीन की सिनोपेक कंपनी हंबनटोटा में निवेश करेगी। कंपनी के अधिकारियों ने राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे के साथ हाल ही में एक बैठक की, जिसके बाद यह एलान किया गया है।

गुजरात के लोगों के बैंक डिपॉजिट एक साल में बढ़े 93841 करोड़

अहमदाबाद(कर्णावती)। कोरोना महामारी के दौरान देश की आर्थिक व्यवस्था पर गंभीर असर होने के बाद अब इससे उबरने के साथ ही आर्थिक जगत के लिए अच्छे समाचार आने लगे हैं। खासकर गुजरात राज्य में अर्थ व्यवस्था की मजबूती और पुराने हालात को पीछे छोड़ने की खबर है। गुजरात के सभी बैंकों से मिले आंकड़ों के अनुसार पिछले एक साल में जहां राज्य के क्रेडिट रेशियों में बढ़ोत्तरी दर्ज की गई, वहीं बैंक डिपाजिट में भी उछाल देखा गया।

खर्च कम, आवक अधिक से आर्थिक मजबूती

दिसंबर 2021 में गुजरात के बैंकों में कुल 9,30423 करोड़ रुपये जमा थे। वहीं गत साल दिसंबर–2022 में यह राशि बढ़कर 10 लाख, 24 हजार, 264 करोड़ रुपये हो गई। यानी एक वर्ष में गुजरात के लोगों ने राज्य के विभिन्न बैंकों में 93841 करोड़ रुपये अधिक जमा किए। यह अतिरिक्त राशि करीब 10 फीसदी है।

यह आंकड़ा बताता है कि गुजरात के लोगों की आवक इस दौरान खर्च से अधिक रही, जिससे लोगों ने बचत के रुपए जमा कराए। यह राज्य की आर्थिक स्थिति के सुदृढ़ होने का भी संकेत माना जा रहा है। दिसंबर 2021 में गुजरात के बैंकों ने कारोबार-रोजगार, योजनाओं समेत विभिन्न कारणों से राज्य के लोगों को 722922 करोड़ रुपये का लोन (एडवांस) दिए। जबकि दिसंबर, 2022 में इन बैंकों ने गुजरात के लोगों को 814532 करोड़ रुपये के लोन दिए। इसका अर्थ हुआ कि एक वर्ष के दौरान गुजरात के लोगों ने 91590 करोड़ रुपये अधिक लोन प्राप्त किया। जो कि करीब 13 फीसदी है।

धंधा-रोजगार के लिए लोन भी अधिक लिए

इसी तरह दिसंबर 2021 से दिसंबर 2022 तक एक वर्ष के दौरान एक ओर गुजरात के लोगों ने बैंकों में 1024264 करोड़ रुपये जमा कराए।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।